मासिक ई-पत्रिका भोजपुरी 2015 नवंबर, अंक 10

आखर

एगो डेग भोजपुरी साहित्य खाति

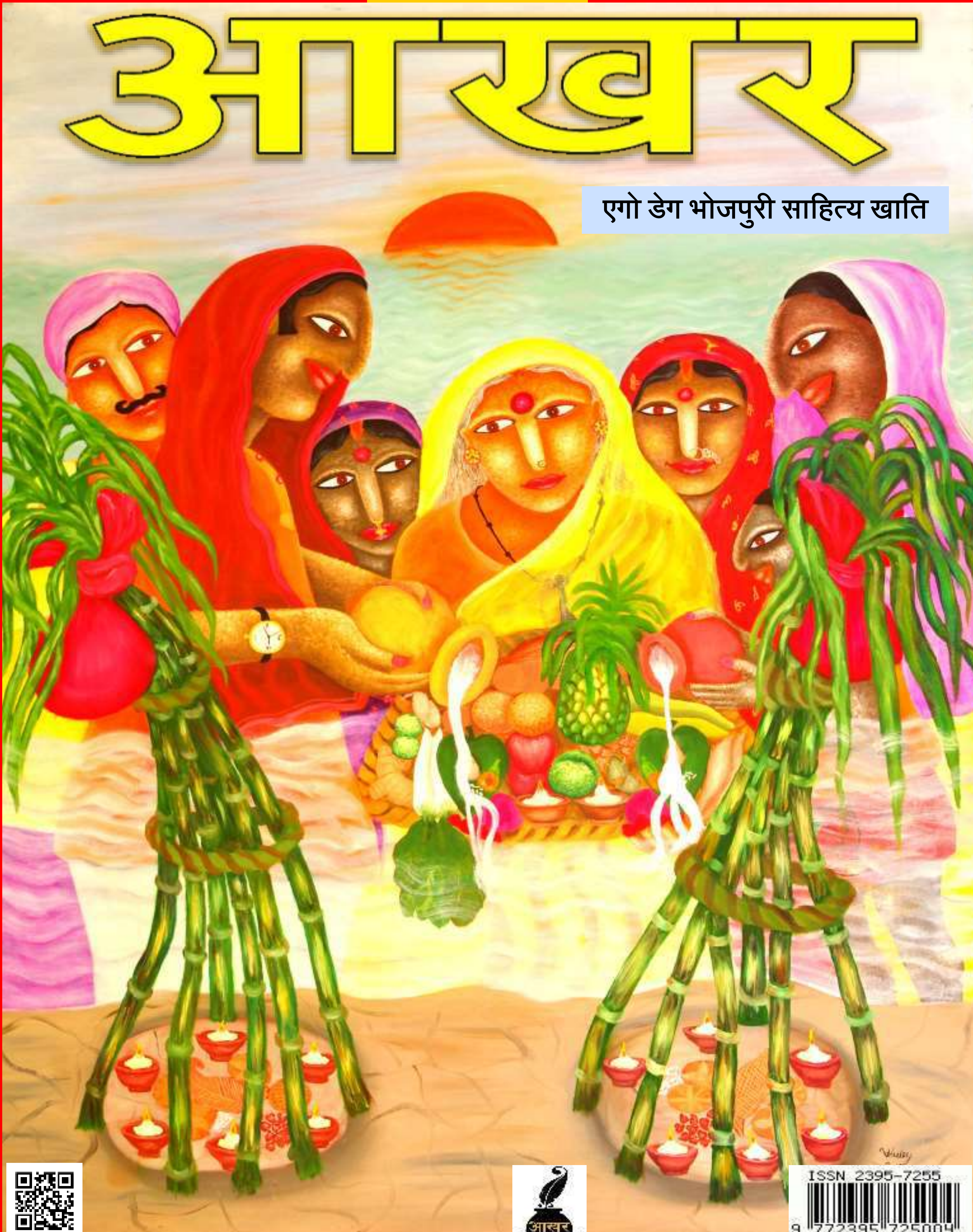

ISSN 2395-7255

प्रकाशन / संपादन मंडल :
संजय सिंह , सिवान
देवेंद्र नाथ तिवारी , वर्धा
शशि रंजन मिश्र , नई दिल्ली
नबीन कुमार , दुबई

तकनीकी -एडिटिंग, कम्पोजिंग
अश्विनी रूद्र , न्यू यॉर्क
अनिमेष कुमार वर्मा , अबू धाबी
छाया चित्र सहयोग
स्वयम्बरा बक्सी , पी. राज सिंह,

आखर पता
ग्राम पोस्ट- पंजवार (पोखरी)
सिवान , बिहार 841509
क़ानूनी सलाहकार
ललितेश्वर नाथ तिवारी , पटना

ISSN: 2395 –7255

आखर

वर्ष: 2015, नवंबर। अंक 10। **ई - पत्रिका**
सब पद अवैतनिक बा।

हम डालम बिया , तू हरवा चलइह
प्रमोद कुमार तिवारी
31

पीड़िया पर्व आ ओकरा से जुड़ल मान्यता
ज्योत्सना प्रसाद
14

दिवाली से छठ तक : हमार ईयाद के झरोखा से
नैय्यर इमाम सिद्दीकी
9

लोकपर्व से वैश्विक महापर्व बनत छठ
अजीत दुबे
22

करमदाता
सुमन सिंह
53

गोधन: औरतन के मानसिक रोग से बचाव के अनुष्ठान
शशिरंजन मिश्र
19

माई नु हईं
सुस्मित सौरभ
25

दिवाली के पड़कौना
मनोज कुमार
26

परामर्श मंडल
प्रभाष मिश्र , नासिक
अतुल कुमार राय , बनारस
धनंजय तिवारी , मुंबई
चंदन सिंह , पटना
बृज किशोर तिवारी , सोनभद्र
सुधीर पाण्डेय , दुबई
पंडित राजीव , फ़रीदाबाद
अजित तिवारी , दिल्ली
अमित मिश्र, डुमरांव

आखर में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरुरी नइखे की संपादक के विचार लेखक के विचार से मिले । लेख पे विवाद के जिम्मेदारी लेखक के बा।

संपर्क : आपन मौलिक रचना , लेख ,कविता , फोटो , विचार आखर के ईमेल-आईडी aakharbhojpuri@gmail.com पे भेज सकेनीं। सुविधा खातिर रचना हिंदी यूनिकोड में ही भेजीं।

मुख्य पृष्ठ छाया/आवरण : फोटो साभार - वंदना दुबे , अनिमेष कुमार वर्मा , अश्विनी रूद्र

www.aakhar.com | facebook/Aakhar | Twitter : @aakharbhojpuri

आखर के फुलवारी

आपन बात : आखर जमात 4

बतकूचन : सौरभ पाण्डेय 5

केहू के जीत होखे, बिहार हार चुकल बा : निराला 7

दिवाली से छठ तक : हमरा ईयाद के झरोखा से : नैय्यर इमाम 9

लोकपर्व से वैश्विक महापर्व बनत छठ : अजीत दुबे 12

पीड़िया पर्व आ ओकरा से जुड़ल मान्यता (भाग – 1) : ज्योत्सना प्रसाद 14

आई दिवाली मनाई जा : जयनित कुमार 18

दशहरा : अनन्या प्रसाद 18

गोधन: औरतन के मानसिक रोग से बचाव के अनुष्ठान: शशिरंजन मिश्र 19

भोजपुरिया पर्व: बहुरा, पीड़िया, गोधन आ छठ : एस॰ डी॰ ओझा 22

माई नु हई : सुस्मित सौरभ 25

दिवाली के पड़कौना : मनोज कुमार 26

बदलाव के पुरबिया बयार : देवेंद्र नाथ तिवारी 29

'फोक' के झोंप में भुलाइल लोक के तलाश (भाग-3) : प्रमोद तिवारी 31

उधार के जिंदगी : नुरैन अंसारी 34

नेत्रदान : चंद्रभूषण पाण्डेय 34

अझुराईल नेह: हृषिकेश चतुर्वेदी 35

इमेज के चक्कर : जयशंकर प्र॰द्विवेदी 35

विक्रमपुर के बेटी : अनिल प्रसाद 36

भारत में ऑटोमोटिव इंडस्ट्री के भविष्य : गौरव सिंह 38

प्यार के धरम : प्रभाष मिश्र 41

गेंदा : डा॰ उमेशजी ओझा 44

दू गो लघुकथा : केशव मोहन पाण्डेय 45

अतिथि देवो भव : पी॰ राज सिंह 47

अश्लीलता के खिलाफ 'अनुभूति' : देवेंद्र नाथ तिवारी 50

हमार पिंकिया के माई : अतुल कुमार राय 52

करमदाता : सुमन सिंह 53

कीमत : अनुराग रंजन 54

दिल जब बच्चा था जी (भाग-10) : बृजकिशोर तिवारी 55

बलिदान गीत : नथुनी प्र॰ पाण्डेय 56

साक्षरता अभियान : मनोज कुमार 57

नेवता : आखर टीम 58

राउर बात : आखर के ओर से 59

निहोरा : आखर के ओर से 60

आपन बात

भोजपुरिया समाज खातिर नवम्बर के महीना खास मायने राखेला। खेत में धान के जवान होत बाली नैहर छोड़ के ससुराल जाये खातिर छटपटाये लागेली सन। विरह भाव में पियराये लागेली सन। ससुराल में आवते नइकी दुलहिन के रूप रंग निखर जाला। चारो ओर उल्लास चारो ओर संगीत। खरिहानी में जब धान के ओसावल जाला अइसन लागेला जइसे नहवावन होता।अंजुरी में भर के एक-एक दाना के किसानिन जब निरखेले बुझाला कि आँखिन से उबटन लागता। ई सब देख के प्रकृति अनसोहातो गावे लागेले-

झुर झुर बहे बयरिया हो ननदी धानवा ओसा दS,
तोहके बनवाईब पैजनिया हो ननदी धानवा ओसा दS !

परब-त्यौहार हर संस्कृति में होला। संस्कृति विशेष में एह त्यौहारन के महत्व भी होला। भोजपुरिया समाज कुछ त्यौहारन के जवना संजीदगी से जियेला ओकर कवनो मिशाल नइखे। दियरी-बाती के दिने खाली दिया ना जरे हृदय के अंधकार भी जरेला। घर आंगन के साफ सफाई क के समृद्धि के देवी लक्ष्मी जी पूजल जाली। दलिदर खेदल जाला। समाज उन्मुक्त हृदय से अपना मन के भीतर के अंधकार के पसिजत देखेला। ठीक वइसहीं जइसे प्रकाश के ताप से मोम पसिजेला। चारो ओर ज्योति कलश छलके लागेला। बुराई पर अच्छाई के जीत आ जीत के उत्सव मनावत भोजपुरिया समाज कब दीपावली के पर्याय हो जाला पता ना लागे।

छठ पूजा त हमनी के आत्मा में बसेवाला आत्म हS। हमनी के पहचान। देश परदेश में भोजपुरिया जहाँ भी बसल होखे छठ पर्व जरूर मनावेला। परिवार के सुख, शांति, खुशहाली आ समृद्धि खातिर दू दिन तक अन्न जल त्याग के अनवरत तपस्या करत बरतिन लोग के साधना बेकार ना होखे। उगत सूरज के अरघा के साथही सारा क्लेष, सारा तमस पलायित क जाला। भोजपुरिया संस्कृति के एक पीढ़ी से दूसरा पीढ़ी में हस्तांतरित करे में एह त्यौहार के महत्वपूर्ण योगदान रहल बा। छठ घाट पर जवन सामाजिक समरसता दिखेला उ विवेचना से परे बा। आज के दौर में जब समाज में विघटन के प्रवृति बढ़ रहल बा सभे खाली पैर, माथा पर दउरा लिहले, हाथ में सिपुली लिहले सुरुज भगवान के सामने समर्पण भाव से खड़ा होके एकाकार हो जाला। केहू के व्यक्तिगत पहचान ना होखे। व्रत करेवाला अपना अहंकार के जल में तिरोहित क देला। याचक बनके याचना करेला। कामना सिद्धि खातिर शक्ति के माँग करेला आ अपना उद्यम से कामना सिद्ध भी करेला। एह पावन पर्व के अवसर पर सबके बहँगी भर बधाई आ शुभकामना।

काँच ही बाँस के बहँगिया बहँगी लचकति जाय.
बात जे पुछेलें बटोहिया बहँगी केकरा के जाय ?

देश के पहिला राष्ट्रपति डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद भोजपुरियन के स्वाभिमान रहनी। आज उँहाके हमनी के बीच में नइखीं तबो भोजपुरिया समाज राजेंद्र बाबू के व्यक्तित्व आ कृतित्व से प्रेरणा लेके अपना के गढ़ रहल बा। आजादी के बाद राष्ट्रपति पद खातिर एगो अइसन व्यक्ति के जरुरत रहे जवना में भारतीय खांटीपन के साथे अंग्रेजी आकर्षण भी होखे। अँग्रेजियत के बीच में रहा के भी राजेंद्र बाबू अपना खाँटिपन के जोगा के रखले रहनी। जब भी कवनो भोजपुरिया मिल जाव भोजपुरी में ही बात होखे। आखर परिवार हर साल उँहा के जयंती पर सिवान जिला के पंजवार गाँव में भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मेलन आयोजित करेला। एह साल भी ई आयोजन होखे वाला बा। साहित्य आ संस्कृति के संगम में डूबे उतराये खातिर सभे व्याकुल बा। अइसे त भोजपुरी अस्मिता के नाम पर लगातार विमर्श हो रहल बा, बाकिर "भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मेलन" एह विमर्श के मुखरित करत नजर आवेला। लड़िका, बुढ़, जवान सभे एह आयोजन के मेजबान बन जाला। मेहमान केहू ना रहे भोजपुरी माई के सिवा। भोजपुरिया स्वाभिमान के उद्घोष करेवाला एह आयोजन में सबके स्वागत बा।

ई सम्मेलन स्वाभिमान के, भोजपुरियन के मान के
संस्कृतियन के गान के, भाषायी अभिमान के।

आखर के एह अंक में भोजपुरी साहित्य के सामर्थ्य के प्रतिबिम्ब दिखी। अभी तक के साहित्यिक यात्रा में "आखर" साहित्य के कवनो विधा नइखे छोड़ले। समग्रता में हर अंक विशेष रहल बा। ई अंक भी अपना में उहे विशेषता समेटले रउआ सामने बा। विश्वास बा रउआ अपेक्षा पर खरा उतर के स्नेहाशीष पाई।

- टीम आखर

www.bhojpurisahityangan.com

बतकूचन...

सौरभ पाण्डेय

बाऽऽटऽ जे पुछेला बटोहियाऽ.. बहङी केकरा के जाय...
आन्हर होखु ए बटोहिया.. बहङी आदितमल के जाय..
बहङी सुरुजमल के जाय...
काँचहिं बाँस के बहङिया, बहङी लचकति जाय..

एमपी-३ के फाइल ! फुल भोल्यूम में छठ के गीत बाजत रहुए । छठि मइया के परब हऽ । तइयारी खातिर मोहल्ला भर से आठ-दस मेहरारुअन के गोल घरहीं बिटोराइल रहे । आ, बहरी दुआर से फरका, गली में लँहेंड़न के जमात बिटुराइल रहे !

'का रे रमजिउआ, ई कवन 'खेला' के गाना हऽ रे ?'

'खेला ? हाह्हाऽऽऽऽ हा हा हा...' - जवन ना फेंकरल ठट्ठा खूलल जे सउँसे गली बसा गइल ।

काकी काँपत हाँथे लाठी सम्हारत, आ अपनहूँ सम्हरत, बहिरी निकलली - 'कवन हवे सऽ रे मटिलगनोऽऽ !.. कवना के हवऽ स रे ? .. ठट्ठा खातिर ईहे दुआर लउकल हाऽ तहनी के ?..'

बिटुराइल लइका लोग छितराए लगले । बाकिर, ई बानगी मीलि गइल जे आजुके समाज में श्रद्धा, ब्रत आ परब-त्यौहार के ले के कवन बिचार, बेवहार आ संस्कार के हावा चल परल बा ! कतना ना जगहा घाट प अब बढ़िमे से मंच सजावल आ बसावल जाता । बहिरी से गायक आ गायिका लोगन के बोलाइ के कार्यक्रम चलावल जाता । आजु के बहुरियन के छठि मइया के गीत त इयाद बा ना । एक-दू लाइन इयादियो होखी त सउँसे गीत गावल तेरह से ले के उनइस तक के पहाड़ा पढ़े के बरोबर बा ! हइसे हुकहुकात कबो गीत गवाले ? से एह हुकहुकी के लौडीस्पीकर भा डीजे के राछछी चीत्कार से तोपल जाता । छठ के परचार त खूब भइल बा । जहवाँ पच्चीस-पैंतीस बरिस पहिले ले लोग एकर नाँव ना सुनले रहे, उहँवों छठ परब होखे लागल बा । बाकि ईहो ओतने साँच बा जे एह परब से जूरल सफाई, पवित्रता आ श्रद्धा के भाव-भावना बड़ा तेजी से बिलाइल जाता ।

ढेर दिन ना भइल, खड़ना के दिने बड़की माई आ चाची सङे माई साँझ होत ना होत सउँसे नेम-धरम से पूजा-भोग के बाद रोटी आ रसिआव के 'परसादी' घर भर के लइकन के हाथे थमा देसु । लगलहीं परसदिया घर भर के बड़-बूढ़-जवानन के परोसल गइल करे । घर के सउँसे माहौल फजिरे आला अरघ भइला ले सत्त-निस्ठा के माहौल से मह-मह करत गहिर भइल करे । दोसरा दिने साँझि खा अपना-अपना कपारे साइल डाला सम्हारत चाचा आ जवान लइकन के पाँति गाँगाजी ओरे बढ़त लउके । आ ओही पाछा घर भर के बड़-बूढ़ मेहरारू अपना-अपना गोड़े फरल केरवन के घवद प बेर-बेर मँडिरात सूगा के अपना-अपना धनुख से मारत घींचात जासु । घाट ओर जात कूल्हि पगडंडियन प रङ-बिरङ के लूगा-मिरजई-धोती में सजल-सम्हरल पाँति के पाँति बढ़त लउकल करो । आगा-पाछा के खेतवन में खलसा खूँटी-खाँटी के कुछऊ रहल ना करे । जवन खेत में कतहीं फसल लउक जाये, त ओह प चलत-बढ़त मरदाना लोगन के बीच निकहा गँभिराहे बतकही होखे लागे - 'काऽहोऽऽ, अबकी कूल्हि के बीया रोक दीहें का विसुन राय ?'

बाबा से ना रहाये । आपन अवाज के ऊँच क देसु - 'का हो बिसुन राऽऽऽऽय ! कूल्हि ठीक बा नू ? दँवरी खातिर ई कटाई गइल ना अबहीं ? का जोहाता अबहींले हो ?'

बिसुन राय भितरी दलान से दुआर ओर धरफरात निकलसु - 'गोड़ लागतानी ए पाँड़ेजी !.. कुछऊ ना जी कुछऊ ना । बड़कू आवहीं प बाड़े.. बस दू-चार दिन के बात बड़ुए..'

'त हँ.. देखिहऽ ! तूँ अपनहीं जनकार हवऽ.. पाकल खेत आ बनल लइकी अखरहे ना छोड़े के..'

तले सङहीं चलत छोटका भतिजवा पूछे लागे - 'ए च्चा, ए च्चा ! बाबा ई 'बनल बेटी' का कहऽ तारे..?'

निर्मल पाँड़े कनखियावत सँघतियन से कहसु - 'भइया के नू हऽ.. बे खुरपेचले एकर जिउवे ना कल धरी.. !' आ छोटका के फेरु लागसु समुझावे - 'बनल लइकी मानें जवना लइकी के बियाह होखे

सौरभ पाण्डेय

सौरभ पाण्डेय जी के पैतृकभूमि उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद के द्वाबा परिक्षेत्र हऽ । रउआ पचीस बरीस से सपरिवार इलाहाबाद में बानीं । पिछला बाइस बरीस से राष्ट्रीय स्तर के अलग-अलग कॉर्पोरेट इकाई में कार्यरत रहल बानी । आजकाल केन्द्रीय सरकार के परियोजना आ स्कीम के संचालन खातिर एगो व्यावसायिक इकाई में नेशनल-हेड के पद पर कार्यरत बानी । परों को खोलते हुए (सम्पादन), इकड़ियाँ जेबी से (काव्य-संग्रह), छन्द-मञ्जरी (छन्द-विधान) नाँव से राउर किताब प्रकाशित हो चुकल बाडी स । साहित्य के लगभग हर विधा में रउआ रचनारत बानीं आ हिन्दी आ भोजपुरी दूनो भासा में समान रूप से रचनाकर्म जारी बा । साहित्यिक संलिप्तता के दोसर क्षेत्र बा - सदस्य प्रबन्धन समूह ई-पत्रिका,"ओपनबुक्सऑनलाइन डॉट कॉम' ; सदस्य परामर्शदात्री मण्डल त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वगाथा' ।

के होखे। भा जवन लइकी के बियाह के समय नगिचाइल होखे..' छोट उमिर। छोटका कुछ बूझत, कुछ गूनत अपने बुद्धि सम्हरे लागे। गँगाजी के किनारे जवना परिवार में कोसी भराए के होखे, ओकर लोग ऊँखि के माँड़ो बनावे में लागि गइल करो। आ ना त सउँसे परिवार किरिन डूबत सुरुजमल के अरघ देबे में लागि जाओ। जल में ठाढ़ भइल माई-काकी लोग आँखि मुँदले छठी मइया से आपन-आपन धियवन के कल्यान-मरजाद भाखत एकही जगहा फेरा लीहल करो लोग।

घरे-घरे, भर छठ, लोगन के मन नेम-धरम में मगन भइल करे। सबहीं के अतना गुमान रहल करे, जे छठी मइया इचिको महटियावल बर्दास्त ना करसु। कबहूँ! अक्सरहा सभ केहू के ई बतिया मालूम भइल करे जे एगो मेहरारू छठ के परोजन से धोअल-पसारल गहूँ के पिसाइल आटा से दू मुट्ठी ले काढ़ लिहलस, ओकर सउँसे बंसे उजरि गइल रहे! भलहीं ओह मेहररुआ के गाँव-नाँव-जाति-परिवार केहू के मालूम ना भइल करे। बाकिर, ई काथा पीढ़ी दर पीढ़ी चलल करे! बड़की माई ई कहत अपना सासु के गोड़ लागे लागसु, आ बहिर कान में अमाए लाएक ऊँच बोलसु - 'ए आमाजीऽऽ.. असीसीं.. छठी मइया सभ के बनवले रहसु.. बंस चलत रहो ए सुरुजमल! सभ के दुआर धङात रहो..'

मइया के आँखि ओदा गइल करे - 'बनल रहे अहिवात.. आ बनल रहे बंस.. सुहागिन रहऽ लोगिन। का कहीं, ई पटने आली जाने कइसे छमकत आ गइल बाड़ी। पेट पोछना के नू हई..'

'आ रोंऽ.. रउए नू अघाइल रहनी हाँ! आ ऊ कवन बाउर बीया जी ?.. अब जमऽने ईहे आ गइल बा त ओकर कवन दोस ए काकीजी ?.. ' - कनिया फुआ उलटे मइये के ओरहसु।

कहे के माने जे ई कूल्हि छठी मइया के ब्रत के महातम हऽ। ई ब्रत जतने नेम-धरम माङेला ओतने असीसे ला। ई सभ के जानकारी भइल करे। फजिरे आला अरघ के बेरा बने लागे त काकीजी के रेघारी एक रतिये से सुरु भ गइल करो -

केरवा जे फरेला घवद से, ओह प सुगा मेंडाराय..
मरबो मैं सुगवा धेनुख से.. सुगा गीरे छपटाइ.. सुगा गीरे मुरुछाय..
सुगिया जे रोयेले बियोग से, आदित होखऽ ना सहाय..
छठि मइया होखऽ ना सहाय ..

तीस घण्टा से बेसी भ गइल रही त का हऽ, उपासल देही भलहीं खुलि के बोली ना फूटे, बाकिर काकीजी के मन के हइसन हुलास आ भरोसा के हइसन जोत दोसरो के मन में श्रद्धा के अँजोर भर दिहल करे। आ होने सजल-सँवरल बहुरियन के हुलास थम्हले ना थमाय। निकहे थकरल बार के चिकने फारल माङ में सर्हियाइ के परल सेनुर भा भखरा के दँवक से ई बुझा जाए जे सोहाग के रोआब का कहाला! ललकी टिकुली परल लिलार के सिंगार आ अलता लागल गोड़ के नरमई छठि मइया जियवले राखसु।

ढेर दिन ना भइल। सउँसे पटना बहरा जाओ.. साफ-सुथरा.. चकाचक! असोक राजपथ छोड़ीं महराज, ई त मेन रोड हऽ पटना के। घाट ओर जात कवन गली-कुच्ची चकाचक ना भइल करे! गली के गली अपना जवान लइकन के 'श्रम-अनुभव' आ 'श्रम-संस्कार' से चमकि उठे। मेन रोड त मेन रोड, गली-गली ले लड़ी आ बत्ती से सज गइल करो। छठि मइया के गहूँ-पिसाई खातिर मशीन के मशीन धोआ पोछा गइल करो। मजाल जे रउआ बे छठ के गहूँ पिसवा लीहीं। कतहीं अइसन भइबो कइल, आ एकर पता चलि गइल, त लात-मार के के कहे, काटा-छूरा ले निकलत देर ना लागे। सात्विक परब के नाँव प हइसन तमस! बाकी कवनो तमस आ तामसिक बेवहार के रउआ इयादिये काहें पारऽतानीं ? अइसन कमवे काहें करे के भाई ? ओह दू दिना खातिर पटना में अकसरहे-अकेले रहे-जीये वालन के आफत भइल करो। चाह के कवनो दोकानि ले भेंटाइल एह समै गूलर के फूल भेंटइला से कम ना भइल करे, नास्ता-पानी के त छोड़िये दीहीं। हइसन लोग दू-तीन दिन खातिर आपन अलग बेवस्था बना लीहल करसु! भा हइसन लोग हफ्ता भर खातिर पटना छोड़ दिहल करसु। राम भजत दू-चार दिन अइसहीं चलल करे! आ ओने फजिरे-फजिरे, अरघ परला के पहिले, घाट पर जवन ना फटाखरी आ तड़तड़ी के बजार गरम होखे जे हफ्ता भर पहिले बीतल दिवाली बुझाये जे जी उठल बीया। अरघ परला के बाद बड़ अङौछी भा चदरा के चारों कोना धइले बिद्यार्थी लोग गोल बना के घूमल करे। आ जेकर जवन बुझाए ओह अङौछी भा चदरिया में ठेकुआ, खजूर, केरा, ऊँखि के डाँठि.. माने जवन परसादी बुझाये दे दिहल करे। दू-तीन घण्टा में निकहा परसादी जमा भ गइल करे।

छठ के परब तब परदर्सन आ उछाह के ना, बलुक निकहा निहुरि के मनावे के परब के नाँवे जानल जाये। ईहे बतियो हऽ, ई त्यौहार ना, परब हऽ। परब में बेक्तिगत तौर प समर्पन होला जे समहुते में बरतल जाला। बाकिर त्यौहारन में बेक्ति अपना के समाज से जोड़ लेला आ जवार के जवार सङहीं जूटि के मनावेला। त्यौहारन में सउँसे जवार में समहुत उछाह आ उमंग होला। बाकिर परब में बेक्ति-परिवार के बेवहार में आइल नेम-धरम से जवार में संयम के मनसायन छाँह होला। तब, बुझाए जे सभ केहू के एह भेद आ अंतर प निकहा धेयान रहल करे। एही कारने छठ परब में पवित्तर भाव-बिचार बनल रहल करे। ई कूल्हि के.. अबहीं ढेर दिन ना भइल!

www.bhojpurisahityangan.com

केहू के जीत होखे, बिहार हार चुकल बा

निराला

जब तक रउआ आंखी के सोझा से ई आलेख गुजरत होखी, तब तक बिहार में चुनाव खतम होके चाहे तो परिणाम के इंतजार होखत होखी भा परिणाम आ गईल होखी। असो के दिवाली के पहिले दिवाली लेखा माहौल एक बेर हो गईल होखी। कवनो खेमा में ख़ुशी के माहौल होखी तो कवनो खेमा आपन हार के कारण बतावे खातिर रोज नाया-नाया तर्क गढ़त होखी। ई तय बा कि केहू के जीत, केहू के हार होखी बाकिर ई भी तय बा कि ई परिणाम खाली सत्ता के शीर्ष पर बइठे के परिणाम दिही। बाकि बिहार के जीत-हार के फैसला पहिलहीं हो गईल बा। चुनाव के माहौल बनते बिहार के हार शुरू भइल रहे आउर चुनाव शुरू होखे के पहिलहीं बिहार के हार के कहानी भी लिखाये शुरू हो गईल रहे। एक नाही, कई-कई तरीका से। बिहार के कईसे हार भइल, बिहार कईसे चुनाव परिणाम के पहिलहीं हारल, एकरा के कई तरीका से समझल जा सकेला। अउर एकरा में केहू अईसन ना रहल, जे एह अभियान के बढ़ावे में आपन योगदान ना देलस।

बाकि बात बाद में।पहिले खाली कुछ बातन पर गौर कर लेबे के काम बा। एना पारी के चुनाव में कईसन-कईसन बोल बोलल गईल बा, ओही से बहुत कुछ समझ में आ जायी। कुछ उदाहरण नीचे देबल जा रहल बा।

- बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के डीएनए में ही खराबी बा।

- लालू यादव के रिश्तेदार का शैतान बाड़न जा कि खुद लालू जादव ही शैतान बाड़े।

- नरेंदर मोदी ब्रहमपिशाच बाड़े। उनका के ललका मिरचाई के धुआं से भगावल जाई चाहे उनका के बोतल में बंद कर के फेंक देब।

- जेतना भी गुंडा-मवाली-बदमाश लोग बा, सब लालू यादव के दमाद बा।

- लालू जादव अगर जवानी में बधिया करा लेले रहते तो जनसंख्या कुछ कम रहित।

- मटन तो मेहरारू लेखा होले, बीफ बहिन आ माई लेखा।

- अमित शाह नरभक्षी बा।

- नीतीश डाइवोर्सी दुलहा बाड़े।

- जे हमरा ओर आंख उठा के देखी, ओकर छाती तोड़ देब, कपार फोड़ देब।

एह तरीका के अनगिनत बयान एना पारी देबल गईल बा। खाली गलती से बयान जईसन नईखे रहल ई कुल, बलुक रोजे रोज दोहरवाल गईल बा। एकरा बाद के कुछ बयान अईसन बाड़ी सन, जेकरा के दोहरावल नइखे जा सकत। ई कुल बयान तो बड़का नेता लोग के बा। केकर बा, ई रउआ सब जानत बानीं जा। अलगा से बतावे के जरूरत नइखे। अब ई बयानन पर रउआ गौर करीं। ई कुल बड़का बयान कवना चुनाव में देबल गईल। बिहार विधानसभा के चुनाव में। अभी बिहार में लगले पंचायत चुनाव भी होखेवाला भी बा। जब विधानसभा चुनाव में ई हाल बा तो सोच लेबे के काम बा कि ओकर असर पंचायत चुनाव में कईसन होखी। पंचायत चुनाव में कवन भाषा के बोलल जाई। तंत्र-मंत्र-अंधविश्वास से ले के, गाली गलौज तक बोलल गईल। अब ई कुल कवना बिहार में भइल ह, जवन बिहार के बारे में अबकी बारी बार-बार कुल दल के लोग बतावत रहल ह कि अबहीं भारत दुनिया में जे सबसे युवा देश बा, ओह में बिहार के युवा आबादी के भूमिका सबसे बेसी बा। बिहार में अबहीं 18 से 39 साल वाला लोग के आबादी 3.79 करोड़ बा। मने कुल आबादी में 61 प्रतिशत। पांच साल पहिले एह गुरप के आबादी 51 प्रतिशत रहे। मने पांच साल में एतना युवा आबादी बढ़ल बा। अगर विधानसभावार देखीं तो लगभग हर क्षेत्र में 84,651 वोटर एह एज ग्रुप के बा लोग। रउआ इयाद करीं कि पिछिलका बेर बिहार के चुनाव में जीत हार के औसतन अंतर 15 हजार के रहे। मने कि एह उमिर वाला लोग के बहुत मजबूत भूमिका होखेवाला बा। ई बात

www.bhojpurisahityangan.com

बहुत साफ बा कि जवन युवा आबादी बा अगर सब राजनीतिक दल के ओखनी से उम्मीद बा तो ओह एज ग्रुप के लोग खाली वोट ना दिही । पहिलका हाली वोट देबे से लेके राजनीति भी सीखी । राजनीति के समझी भी । अब उ लोग राजनीति समझ रहल बा कि का होला । का बोलल जाला । कईसे सत्ता पावे खातिर सब कुछ भुला देबल जाला । अब रउआ सोची कि जे आज वोटर बा, युवा बा, उ काल बिहार में राजनीति में भी आयी । विधानसभा चुनाव में भी आयी आउरी पंचायत भा निकाय चुनाव के रास्ता भी अपनायी । संस्कृत में कहावत बा, **महाजनो येन गतः स पंथा** । मने जवन रास्ता के बड़ लोग अपनावेला, ओही रास्ता से पीछेवाला छोट लोग जाला । एना पारी बिहार के चुनाव में सत्ता पावे खातिर जवन रास्ता अपनावल गईल बा, ओह रास्ता से केहू न केहू के सत्ता मिल जाई बाकि ओकर असर बिहार पर बहुते साल तक रही । बहुते साल तक बिहार फेरू से गाली-गलौज आउर अंधविश्वासी भाषा से राजनीति करत रही ।

अब एतना के बाद जवन भी दल विकास के बात कर रहल बा, ओकरा के कवन नजरिया से देखे के चाहीं, रउआ खुद तय करीं । अईसन भी नइखे कि एह रास्ता के कवनो एक दल अपनवलस । एह चुनाव में चक्रवर्ती सम्राट अशोक से ले के राष्ट्रकवि दिनकर तक के जाति के खाका में बांध देबल गईल । नरेंद्रर मोदीजी विकास पैकेज के बम फोरत-फोरत भूजंग कुमार, चंदन कुमार, शैतान आउर आपन जाति बतावे के रास्ता अपना लेले । लालू प्रसाद यादव शुद्ध रूप से अगड़ा आउरी पिछड़ा के बीच लड़ाई के एलान कर देले । लालूजी भले ई एलान एह चुनाव खातिर कईले आउर वोट बटोरे खातिर बाकि मतदाता खातिर वोट खाती ना बंटी । ओकर असर बाद में भी रही आउर अब अगिलका कुछ सालन तक ई अलगाव-दुराव-विलगाव के बीज पनप के वृक्ष के रूप लेत रही । नीतीश कुमारजी बहुत शालीन नेता बानी । उहां के अपना ओर से कोशिश कईनी कि कुछ ना बोलीं । उहां के जादे बोले के जरूरत भी ना रहे काहे कि उहां के ओर से बोले के काम लालू यादवजी लगातार करत रहीं । बाकिर नीतीश कुमारजी भी आखिरी में बिहारी बनाम बाहरी के एलान कईनीं । बाहरी लोग के भगावे के एलान कईनी । एह बात के नीतीश कुमार जी बहुत आसानी से तो बोल देहनी बाकि ई ना सोचनी कि उनका जईसन गंभीराह नेता के बोले के मतलब का होई । चुनाव तो केहू जीत जाई बाकि ई बाहरी-भितरी वाला बयान के असर बाद में होखी । महाराष्ट्र, पूर्वोत्तर में एकर असर देखल जात रहल बा । बिहार के लगले झारखंड बा । झारखंड में भी एह मसला के अब चिंगारी चुनाव बाद पनपी । उहवां ढेरे बिहारी लोग रहेला । अंदरे अंदर तनाव के माहौल हमेशा बनल रहेला । नीतीशजी के भी पता बा कि बिहारी जनता अगर बाहरी ना बनो, बाहर से रिश्ता ना रखो तो फिर बिहार के का हाल होखित । बिहारी लोग के बाहरी रहल मजबूरी बा । आउर अगर बिहार में भी बाहरी आउर बिहारी वाला स्वर उहां के उठाईब तो लाखन के संख्या में रहेवाला बिहारियन के कदम कदम पर परेशानी के सामना करे पड़ी । नीतीश जी के लोग कह सकत बा कि इ बात उहां के खाली राजनीति के संदर्भ में कईनी ह बाकिर अईसन होखेला ना । एक संदर्भ से दोसरका संदर्भ जोड़ के ही बात के बतंगड़ बनेला । झगड़ा आउरी उनखुन के जड़ निकालल जाला । एही तरह से हर नेता के देखीं । हर दल के देखीं, कुल लोग एना पारीके बिहार चुनाव में आपन-आपन पैंतरा देई के बिहार के हरवलस ।

बाकि दुर्भाग्य देखीं कि बिहार में ओह मसला के केहू ना उठवलस, जवन मसला रहे । सभे बिहारीपन, बिहारी स्वाभिमान,बिहारी पहचान के बात करत रह गईल,बिहार के विकास के वादा करत रह गईल बाकिर एह माडल में कवनो दल के ओर से शेरशाह सुरी नायक ना बनले । उ अवलंबन ना बन पइले विकास के । उ शेरशाह के केहू ना बतवलस कि बिहार के रहेवाला शेरशाह ही देश के बदल देले रहले । बिहारीपन आउर बिहारी पहचान के बात सब केहू करत रह गईल बाकिर केहू नाम ना लेलस भिखारी ठाकुर के, जे बिहारीपन के स्थापित करे में केतना बड़ भूमिका निभवले बाड़े, ई केहू से बतावे के जरूरी नइखे । बिहार के संस्कृति पर सब दल इतरात रह गईल बाकि केहू दल उस्ताद बिस्मिल्ला खान के नाम ना लेहलस कि उ बिहार के एगो गौरव रहले, उनकर जन्मशति साल बा । उहां के पूरा दुनिया के साझी संस्कृति के संदेश दिहनी । सभे दल आपन राग में फंसल रह गईल । सभे बड़ नेता आपन बेटा, आपन दामाद, आपन समधी, समधीन, भतीजा के सेट करावे में रह गईल । एक दोसरा के गरियावे में लागहल रह गईल । एना पारी के चुनाव से साफ भइल कि अब अगिलका कुछ साल तक बिहार के राजनीति एही रास्ता पर चली । बिहार अतीत पर इतरात रही, ओकरा से भविष्य के सपना दिखावत रही बाकि ना तो अतीत के ठीक से इयाद करी आउर ना भयावह भविष्य से निजात के रास्ता बताई ।

निराला

पेशा से पत्रकार , तहलका आ प्रभात खबर खाति लगातार लिखे वाला निराला जी , औरंगाबाद बिहार के रहे वाला हईं । इँहा के पुरबिया तान बैनर के नीचे भोजपुरी के पारम्परिक गीतन के सहेजे, सरिहारे आ ओह के नया कलेवर मे प्रस्तुत करे में लागल बानी ।

दिवाली से छठ तक : हमरा ईयाद के झरोखा से

नैय्यर इमाम सिद्दीकी

हम बिहार के माटी से पैदा भईल बानी । साझा संस्कृति में पोसईनी । गाँव में मय जात-धरम के लोग रहे । सबके सादी-बियाह, तीज-त्योहार, मरल-जीयल देखत बढ़ भईनी जा । गाँव के घर के ठीक सामने ईया के घर रहे, ई त हम बहुत बहुत बाद में जान पईनी कि ईया हिन्दू हई । ईया रमजान में रोजा भूखस त हम छोटपन में ईहे जानी कि ईया मुसलमान हई । सब जात-धरम के लोग ऐह तरे मिलजुल के एक-दूसरा के तीज-त्योहार में सामिल होखे आ परब मनावे कि ई कबो ना बुझाओ कि ई परब हमार ना उन्हा के हवे । हमनी के खेत के बटाईदार भा हरवाहा लोग हर तीज-त्योहार पर मिठाई के पतुकी ले के घरे पहुँचा देव लो, आस-पड़ोस से भी ढेर मिठाई आ जाव । ईद-बकरीद के दिन दादा से परबी लेबे भी लोग आ जाए । दादा नाऊ, कोंहार, लोहार, बटाईदार आ हरवाहा लोग के धोती-कुर्ता, साड़ी-बलाउज के कपड़ा आ मर मिठाई के लायक पईसा देस, आ रास्ता चालत जे भी मिल जात सबके मुँह मीठ कारावास । ईद के दिने खाली मुसलमान लोग खुस ना होखे, पूरा गाँव खुस होखे । हिन्दू लोग भी साफ-सुथरा कपड़ा पहिर के ईदगाह के लगे पहुँच जाव लो । लईकन के खुसी जाट-धरम ना देखे ला, छोट-छोट लईका-लईकी मेरा के रौनक बढ़ा द सं । नमाज पढ़ के मिकलाला पर हिन्दू लोग जलेबी खियावो और गला मिलो ।

नीमन पढ़ाई खातिर अब्बा हमनी के ले के शहर आ गईनी । एईजी हमनी के पड़ोसी रहनी देवरिया के तिवारी जी । इन्हा से हमनी के

नैय्यर इमाम सिद्दिकी

गोपालगंज , बिहार के रहे वाला नैय्यर इमाम सिद्दिकी जी उर्दू , हिन्दी , अंग्रेजी मे लिखेनी , आखर से बहुत पहिले से जुड़ल बानी । आईआईटी से पढल बानी आ वर्तमान मे एन आई टी रायपुर मे लेक्चरर बानी । रायपुर , छत्तीसगढ मे रह रहल बानी ।

www.bhojpurisahityangan.com

पारिवारिक सम्बन्ध बा । हर सादी-बियाह, तीज-त्योहार, पर-परोजन में साथ रहल बानी जा हमनी के। स्कूल में मुसलमान से ढेर हिन्दू संघतिया लोग रहे हमार काहे से कि अब्बा के स्टाफ के लोग के बेटा लोग भी साथे पढ़े आ ओह लोग से खूब पटबो करे। हमनी के क्लास टीचर बंगाली रहली । त कुल मिला के हमार बचपन जवन साझा माहौल में ढलाईल हम आज ले उहे संस्कृति जियत बानी । हम होली-दीपावली, ईद-दसहरा, मोहर्रम-छठ सब साथे मनवले बानी, एक जईसन प्रेम आ श्रधा से । आज कल के माहौल हतना न खराब भईल बा कि लोग दोसरा जात-धरम के देखे के नईखे चाहत, अफवाह पार जान ले लेता ना त कबो सब लोग एक साथ परब करे, सायद एसनके आवे वाला बेरा के भाँप के उर्दू के कौनो शायर कह गईले कि –

मिल के होती थी कभी ईद भी दीवाली भी

अब तो ये हाल है कि डर डर के गले मिलते हैं

हम त आजो ले कबो त्योहार में फरक ना कईनी, त्योहार मने त खुसी होला, खुसी के कौनो धरम होला का? हम एम। टेक करत घरी मुसलमान भईला के बादो अपना हिन्दू सर के घरे जा के लक्ष्मी पूजा कईले बानी, आरती उतरने बानी। जब मुम्बई रहत रहनी तब दीपावली पर एगो शादीशुदा दोस्त के घरे हरमेसा जाईं, ओईजी भी हम लक्ष्मी जी के पूजले बानी। महालक्ष्मी मंदिर आ सिद्धिविनायक मंदिर में हम एतना हाली गईल बानी कि गिनती ईयाद नईखे । जब-जब हाजी अली जाईं तब तब हम महालक्ष्मी मंदिर भी हो के आईं। हमार इस्लाम त ई कहे ला कि 'दोसर के धरम आ उनकर भगवान के खराब मन कहऽ, तहार धरम तहरा खातिर उनकर धरम उनकर खातिर' आ हम ईहे सूत्र पर चली ले। समाज में समरसता एक-दूसरा के सम्मान आ उनकर धरम के आदर देहला से आई, ना कि कपार फोडला से। देखीं बात केने से केने चल गईल । हम बात करत रहनी ह साझा त्योहार के जवन सभे मिल-जुल के मनावे। कौनो भी धरम के त्योहार होखे अईसन बुझाओ कि पूरा जवार भर के परब ह ई । आस-पड़ोस, साथी-सवांगी सभे ओतने खुस होक जेतना ऊ परब मनावे वाला धरम के लोग । हमरा खूब नीमन से याद बा कि दीपावली आने से महिना दिन पाहिले से ही ऐ परब के ले के गाँव-जवार में हलचल शुरू हो जात रहे। घर-दोकान के साफ-सफाई, झाड़-पोंछ आ रंगाई-पोताई से पूरा जवार भर में रौनक बुझाये लागी । नाद में चुना घोरई आ ओहमे लील (नील) मिलावल जई, केहू कम लील पसंद करे तो केहू ढेर । ओही हिसाब से कबो चुना तो कबो लील घटवाल-बढावल जाओ। हमनी के सब लईका मिल-जुल के सोजहक भा टुकी ईटा जमा करी स आ दुवार भा घर के छत, कभो बथान, खलिहान चाहे बगईचा में जहाँ घर के बूढ़-पुरनिया से हरी झंडी मिल जाव ओईजा हमनी के दु-तल्ला, तीन-तल्ला ईंटा जोड़ के घर बनाई स, बाँस भा लकड़ी से सीढ़ी बनो और घर के सबसे ऊपर कोठी लेखा तिरछा डिजाईन बनो । घर बन गईला के बाद ओकरा के माटी आ भूसा मिला के लिपाओ, जमीन भा छत गोबर से लिपाओ और सुख गईला पर रंगाई होखे फिर रंगीन कागज काट के सजावट भी होखे। बाद में जब गाँव में लाईन आ गईल त रंगीन लड़ी भी लागे लागल बाकिर पाहिले माटी के दिया से सजावल जाओ । हमनी के मुसलमान हई स तबो केहू घर के बा गाँव के ई ना कहे कि ई तहार लोग के परब ना ह तू लोग काहे मनावत बाड़? हमनी किहाँ पूजा ना होखे लेकिन टकटकी बंधले रहे आदमी कि कब ईया (ईया के हमनी के काकी कही स) के घर के दिया जरत बा । ओकरा बाद में हमनियो के आपना दिया जरा दी स। फिर पटाखा छोड़े के बारी आवे। अनार, फुलझड़ी बड़ी पसंद पड़े। अब्बा हर दीपावली में भर झोरा पड़ाका ले आवास। लड़िया वाला ललका पड़ाका भी रहे। बगईचा में कई गो लड़ी साथ में बांध के कागज में आगि धरा के हमनी के भाग जई स आ जब एकसुरिये लागो पड़ाका फूटे त बूढ़-पुरनिया कहे कि आज त बगईचा ना बाची। सगरो गाछ फूंका जाई बाकिर आजो ले बगईचा बा आ हमनी के याद ओहसे जुड़ल बा। पुआ-पकवान घरहूँ पाके आ अगल बगल से भी आवे। आ हमनी के कई दिन ले सबेरे मुँह धो के 1-2 गो लड्डू भा पुवा बगली में भर के निकल जाई स खेले। तब हमनी के एतने पता रहे कि राम जी आजे के दिन लंका जीत के सीता जी के लेहले अईले आ ओही खुसी में ई त्योहार मनावल जाला। राम जी खाली हिन्दुवे के हईं का ? उर्दू के बड़हन शायर अल्लामा इकबाल त राम जी के अपना शायरी में 'इमाम-उल-हिन्द' के पदवी देले बाड़न । इमाम के मतलब होला लीडर, नेता... मने जेकरा पीछे पूरा आम जनता होखे। आज भले उनकरा नाम पर राजनीती कर के देस में बांटे के काम होत बा और बहुत हद तक लोग सफल भी हो गईल बा अपना काम में। ईहे सब देख के उर्दू के ऐगो अउरी मशहूर शायर कैफी आजमी 'दूसरा वनवास' लिखे पर मजबूर हो गईनी । देखीं फेर बात त्योहार से राजनीति प आ गईल। खैर ... हमनी के समझे-बुझे के जरुरत बा आ साझा संस्कृति के बचावला के काम बा । हँ त हम कहत रहनिया कि ई त हम बाद में बढ़ भईला पर जनली कि दीपावली मनावे के पीछे का कारण बा। लईकाई में त जेतना गाँव के लोग आ घर वाला बतावल जान लेहनी ... फिर हमनी के स्कूल के सिलेबस में सातवाँ भा आठवाँ में 'संक्षिप्त रामायण' पढ़े के मिलल फिर अयोध्या से ले के लंका तक आ लंका विजय से वापस अयोध्या अईला तक के कहानी पता चलल। फिर जब हम हॉस्टल गईनी त अउरी कई गो किताब पढ़नी ऐह विषय पर। बाद में दोस्त के घरे आ हिन्दी के मास्टर साहेब जिनकरा किहाँ से हम हिन्दू धरम के कई गो किताब ले के पढ़नी ओई जी भी हम पूजा कईनी आ आरती उतरनी। आजो न भुलाला हमरा ऊ दिन जब स्टील के छोट प्लेट में कपूर जरा के आरती उतारत रहनी आ जब ऊ बताये लागल त फेरु कपूर रखाईल आ ऐह चक्कर में प्लेट गरम हो गईल आ जब

www.bhojpurisahityangan.com

गरम प्लेट से अंगूरी जरे लागल त हम प्लेट छोड़ देहनी त लागल सब केहू हँसे। अब हम घर त ना मनावेनी बाकिर फुलझड़ी जरावे आ पकवान खाए में ऊहे लईकाई वाला ही अकुताई रहेला। स्वद्गर खाना केकर कमजोरी ना होला?

दीपावली के बाद आवे ला भईया दूज आ छठ। चाहे ई कह लीं कि भईया दूज से ही छठ के त्योहार के शुरुवात होखे ला। पुरबिया लोग के ई एगो बड़हन परब ह। लोग भले दीपावली में घरे ना आई लेकिन छठ प जरूर आई। ईहो त्योहार में मुसलमान लोग सामिल रहे ला। नदी-नहर, पोखर-तालाब के किनारे बा दुवार प बनल छठी मई के साफ-सुथराई दीपावली के बेरा ही हो जाई। कार्तिक शुक्ल के चतुर्थी से सप्तमी तक के ऐ परब में 36 घंटा के कठिन उपवास रखे के पड़ेला, ई बाकी उपवास खानी ना होखेला, ऐ उपवास में त पानी भी नईखे पिये के। ऐ परब में बनल ठेकुवा त कई दिन तक नाश्ता-पानी के काम आवे ला। हॉस्टल जाए के बेरा अम्मा एक डिब्बा ठेकुवा भी रख देव बैग में। नहाय-खाए से शुरू हो के ई परब उषा अर्ध्य प थामे वाला ई परब शुद्ध देसी आ पर्यावरण के सम्मान के भी त्योहार ह। घर से लेके घाट आ शरीर से लेके मन तक के सफाई होला ऐह में। ई सात्विक पर्व आ प्रकृति के उपकार माने के भी त्योहार ह। **संध्या अर्ध्य होखे बा उषा अर्ध्य डूबे आ उगे वाला सूरज के तरफ से पानी के सतह प आपन सिंदूरी आभा बिखेर के प्रकृति के सदा सुहागन रहे के आशिर्बाद मिले ला ऐही से ऐ परब में सिंदूर के विशेष महत्व बा। प्रकृति ऐही आशिर्बाद से हमेशा सुहागन रहे ले।** डूबे आ उगे वाला सूरज जीवन-मृत्यु के आभास करावे वाला कारक हवे जवन हिन्दू धर्म में बहुत भीतर तक बसल बा मने जेतना सम्मान जीवन के बा उतने मैय्यत के भी। ऐही से शव के भी प्रणाम करे के रिवाज बा, जियला में त सभे प्रणाम-पाती करबे करेला।

अब हम धरम के बीहड़ में ना जायब। आ ना ई कहब कि ई त्योहार कब शुरू भईल, काहे मनावल जाला, कवन रीती-रिवाज से मनावल जाला। ऐके के त्योहार मनावे के कई गो कथा, रिवाज चलत आ रहल बा समाज में, वेद-पुराण में भी कई गो ऐतिहासिक आ पौराणिक कथा से जोड़ल गईल बा ऐकरा के। अगर हम ई लिखब चाहे बतायब त बतकही ढेर बढ़ जाई। लगभग सभे जानत बा कि त्योहार काहे मनावल जाला? धरम वाला लोग धरम के हिसाब से मनावे आ बाकी लोग सामाजिक समरसता आ भाई-चारा के नाते साथ निभावे। **ई देश हमनी के ह, संस्कृति हमनी के ह, रहे के हमनिए के बा त एक-दूसरा के तीज-त्योहार के समझे-बुझे-जाने के कोशिश कईल जाव आ ओहमे शामिल हो के भाई-चारा के सन्देश दिहल जाउ।** हर धरम के त्योहार शांति आ भाई-चारा के ही संदेश देला बाकी हमनी के अनसुना क देनी स। त सब कोई के दीपावली आ छठ के अनघा बधाई, ध्यान आ होशियारी से पड़ाका फोड़ीं, बूढ़-पुरनिया, बेमार-लईका सभे बा समाज में, सबकर ख्याल रहे। आपसी दुश्मनी मिटाईं, गला मिलीं आ पकवान हमरा किहाँ भेजे में तनको मत लजाईं। एक-दु पतुकी लड्डू आ ठेकुवा त हम दु-तीन दिन में ही भकोस जायब त ओही हिसाब से तानी सबराहे भेजल जाओ मिठाई।

लोकपर्व से वैश्विक महापर्व बनत छठ

अजीत दुबे

चित्र- वंदना दुबे

स्वतंत्र चिंतन आ साहसपूर्ण आचरण भोजपुरी संस्कृति के आपन विशेषता हऽ जवन एह के दोसर संस्कृतियन से पृथक कर देले। एकर एगो असर इ भइल कि शास्त्र के प्रति सम्मान के भाव राखे के बादो भोजपुरिया लोग में अँध श्रद्धा ना उमिड़ल। इहे कारण बा कि एह क्षेत्र में शैव योगिमत बाबा गोरखनाथ के उदय भइल तऽ निरगुनिया कबीर भी जनमलें। इ लोग शास्त्र मत के खंडन करत लोकमत आ सहज जीवन शैली अपनावे पऽ जोर दिहलें। भोजपुरिया संस्कृति के प्रतीक महापर्व 'छठ' में एक ओर जहाँ लोकमन के सहजता बा तऽ उहें दोसरे ओर वैज्ञानिकता के सबल करत आस्था भी। सूर्योपासना के इ अनुपम लोकपर्व मुख्यत: पूर्वी भारत के बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश आ नेपाल के तराई क्षेत्रन में उल्लास आ निष्ठा के साथे मनावल जाला।

इ आस्था ही तऽ रहे जवना के चलते हमार माई दक्षिणी दिल्ली के सरकारी डेरा में 60 के दशक में भी पूरा श्रद्धा के साथ छठ करे। ओह घरी छठ व्रती लोगिन के संख्या इक्का-दुक्का रहे। सरोजनी नगर के स्टाफ क्वाटर का छत पऽ माई आ दू-चार गो लोग अर्घ देवे। जब व्रती लोगिन के संख्या बढ़े लागल तऽ घर पिछुआरा गड़हा खोनाइल। हमनी के छठ खाति जरूरी समान लावे पहाड़गंज साइकिल से जाईं सऽ। ओह घरी दिल्ली में खाली पहाड़गंज में छठ के समान मिले। आज तऽ दिल्ली में दर्जनों बाजार बा जहाँ खाली छठ के समान के करोड़ों के कारोबार होखेला। भोजपुरिया क्षेत्र में इ कहल जाला कि केहु परदेशी कहीं रहे बाकि छठ में उ घरे चलि आवेला। बाकि सरकारी नौकरी आ छठ के नाम छूट्टी ना मिलला के चलते मनमरोस के छठ में गाँव-घर से दूर, बहरा रहे के पड़े। 70 के दशक में छठ व्रतियन के संख्या सैकड़न तक पहुँचल। एह महापर्व के विस्तार भी भइल। 1980 के दशक में दिल्ली में एशियाड खेलन के आयोजन होखल तय भइल। एकरा खाति बिहार आ यूपी के भोजपुरिया इलाका से निर्माण कार्य खाति श्रमिकन के खूब पलायन भइल। जे एह काम खाति आइल ऊ फिर कबो लौट के वापस ना गइल। नतीजा दिल्ली में जेजे कॉलोनियन के विस्तार भइल, अनाधिकृत कॉलोनी बनली स। एह कॉलोनियन में भोजपुरिया लोग रहे-बसे लागल। कई गो नया क्षेत्र आबाद

www.bhojpurisahityangan.com

भइलन स। नतीजा एह कॉलोनियन में छठ व्रतियन के संख्या हजारों में पहुँच गइल। जगहे-जगहे छठ घाट बने लागल। गैरभोजपुरियन के भी सहभागिता छठ में होखे लागल।

90 के दशक में उदारीकरण के दौर चलल तऽ गाँव के साथे दिल्ली के भी तस्वीर बदल गइल। इहाँ भोजपुरिया लोग संख्या के आधार पऽ प्रभावी बने लगलें। दिल्ली का ओरी भोजपुरिया प्रवासन के गति तीव्र भइल। एकरा में दिल्ली आ भोजपुरी क्षेत्र के बीच यातायात के बेहतर सुविधा के भी योगदान रहे। दिल्ली से भोजपुरिया क्षेत्र खाति कईगो सीधा ट्रेन चले लगली स। छठ व्रतियन खाति यमुनापार, बदरपुर, संगम बिहार, नजफगढ़, उत्तम नगर, बुरारी, किराड़ी जइसन क्षेत्र में छठ घाट बने लगले स। नेता लोगिन के जुटान भी छठ घाट पऽ होखे लागल। पंजाबी, जाट -गुर्जर लोगिन के साथे-साथ मुस्लमान लोग भी छठ घाट पऽ पहुँचे लागल। दिल्ली जइसन क्षेत्र में छठ के दिन मेला के जइसन बनि गइल।

साल 2000 छठ के लिहाज से बड़ा महत्त्वपूर्ण साबित भइल। 1 अक्टूबर, 2000 के दिल्ली के तत्कालिन मुख्यमंत्री श्रीमति शीला दिक्षित जी द्वारका में आयोजित भोजपुरी समाज के एगो सांस्कृतिक कार्यक्रम में छठ का दिने 'रिस्टिक्टेड हॉलिडे (RH)' के घोषणा कइली। दिल्ली सरकार के अंतर्गत 'काँवर यात्रा संघ' के दिल्ली में छठ घाटन के रखरखाव के जिम्मा दिहल गइल।

21 वीं सदी के पहिला दशक में भोजपुरी प्रवासियन के आर्थिक-सामाजिक स्थिति में काफी बदलाव आइल। आईटी इंडस्ट्री में पेशेवर भोजपुरियन के दबदबा बढ़ल, सेवा क्षेत्र में भी कार्यरत भोजपुरियन के मौजूदगी के ग्राफ बढ़े लागल। नतीजा छठि के छठ के घाट पऽ भोजपुरिया समृद्धि के देखल जाए लागल। अब दिल्ली चाहें पटना के छठ घाट पऽ भीड़ का हिसाब से कवनो अंतर नजर ना आवे। दिल्ली में आईटीओ, डाबरी, पालम, नांगलोई में बनल छठ घाट के छटा कुछ अलगे होला। साल 2014 में जहाँ दिल्ली सरकार द्वारा 75 गो छठ घाट के व्यवस्था बनावल जात रहे उहें एह साल शासन का ओर से करीब 150 छठ घाट के व्यवस्था बनावे के बात कहल जा रहल बा।

जब संसद में माननीय लालू प्रसाद यादव, रामविलास पासवान, मीरा कुमार जइसन सांसद लोगिन खाति छठ के छुट्टी होखे लागल तऽ भोजपुरियन के बीच इ माँग उठल कि जब नेता लोग के छठ खाति छुट्टी दिहल जात बा तऽ केंद्र सरकार के कार्यालयन में छठ के छुट्टी दिहल जावऽ। 2011 के छठ पऽ इ माँग पूरा भइल। नतीजा केंद्रीय सरकार के कर्मचारी, पब्लिक सेक्टर के 254 गो संस्थान, सेना, पैरा मिलिट्री फोर्स, पब्लिक सेक्टर बैंक में छठ के आरएच मिले लागल। नतीजा समूचा भारत में छठ के राष्ट्रीय पर्व का रूप में स्वीकार्यता बढ़ल। साल 2012 टाटा, रिलायंस, बिड़ला जइसन प्राइवेट औद्योगिक घराना भी छठ खाति छूट्टी के स्वीकार्यता प्रदान कइलस। कबो खाली बिहार आ पूर्वांचल के पर्व रहल छठ अब राष्ट्रीय के कहो अंतरराष्ट्रीय महापर्व बन गइल बा। प्रवासी भारतीयन के साथ-साथ विश्वभर में प्रचलित आ प्रसिद्ध हो गइल बा। सिंगापुर, दुबई, मस्कट, बैंकाक जइसन शहरन में छठ तऽ होते बा सुदूर अमेरिका, इग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया जइसन देशन के कई गो बड़ शहरन छठ धूम-धाम से आयोजित हो रहल बा।

पूरब के एगो खासियत हऽ- इहाँ के लोग जहाँ गइल आपन भाषा, संस्कृति आ मूल्य साथे ले के गइल। छठ भी ओही महान संस्कृति के हिस्सा हऽ। वैज्ञानिक शोध से इ सिद्ध भइल बा कि छठ के दिने सूर्य के किरण में विशेष प्रभाव रहेला। इ ग्रह-नक्षत्र के सुयोग से संभव होखेला। आज छठ लोक आस्था के वैश्विक महापर्व के तौर पऽ ऊभरत बा। छठ के एह ऊभार में इलेक्ट्रानिक मीडिया आ सिनेमा के विशेष योगदान रहल बा। आज मुंबई का जूहू बीच पऽ लाखों के संख्या में छठ वर्ती लोग अर्घ देवेला। मुंबई में करीब 30 लाख के संख्या में बिहार आ पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोग रहेला। छठ के खाति एकजुट भइल उनकर अस्मिता आ गर्व के पहचान हऽ। मुंबई में पूरबिया लोगन खाति छठ आस्था के साथे-साथे शक्ति प्रदर्शन के माध्यम हऽ। जूहू तट पर मुंबई-थाणे के दूर-दराज इलाका से जुटे वाला करीब 5 लाख लोग के मौजूदगी से आस्था के एह महासमुंद्र के चमक भव्यता के स्वरूप धारण कर लेवेले। सांस्कृतिक पहिचान के एह पर्व के साथे जुड़ल आ लोक आस्था के पवित्रता के बरकरार रखल बेहद जरूरी बा। हालांकि इहो सुखद तथ्य बा कि छठ पऽ आधुनिकता आ बनावटीपन के कवनो असर नइखे। छठ अपना खाँटी स्वरूप में मौजूद बा।

अजीत दुबे भोजपुरी भाषा, साहित्य, समाज आ संस्कृति का क्षेत्र में सक्रिय 'एक्टिविस्ट' के रूप में पहचान रखे वाला अजीत दूबे जी 'तलाश भोजपुरी भाषायी अस्मिता की' जइसन महत्त्वपूर्ण पुस्तक के लेखक हईं। भोजपुरी भाषा के 8वीं अनुसूची में शामिल करे खाति लम्हर संघर्ष के यात्री आ साक्षी दूबे जी अपना सधल आ प्रभावी लेखन से भोजपुरी समाज आ सरकार के आंदोलित-उद्वेलित कइले बानी। रउआ वर्तमान में भोजपुरी समाज, दिल्ली के अध्यक्ष, विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बानी। एकरा पहिले रउआ मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली सरकार के उपाध्यक्ष रहनी। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के कार्यपालक निदेशक का पद से सेवानिवृति के बाद अनवरत भोजपुरी भाषा-अस्मिता के लड़ाई के सिपाही का रूप में रउआ आपन योगदान दे रहल बानी।

पीड़िया पर्व आ ओकरा से जुड़ल मान्यता (भाग – 1)

ज्योत्सना प्रसाद

भारत एक कृषि-प्रधान देश ह आ कृषि भारतीय किसान के जीवन-यापन के मौलिक साधन I एह से गाँधी जी के कहनाम रहे "भारत का हृदय गाँवों में बसता है ।" एगो किसान के जीवन अत्यंत कठिन होला I काहेकि ओकरा आपन काम ए.सी. लागल कवनों बंद कमरा में कुर्सी पर आराम से बईठ के ना करे के रहेला बल्कि ओकरा त आपन काम सबेरे से लेके साँझ ले सूरज के ताप में तप के करे के रहेला आ हर साल जाड़ा के मौसम में खेत में लागल अपना फसल के ढोर आ जंगली जानवरन के उत्पात के बर्बादी से बचावे खातिर कई-कई महिना तक खुला आसमान के नीचे, कभी मचान पर त कभी जमीन पर बईठ के अपना फसल के अगोरे के पड़ेला I एह से खेत में लागल आ लहलहात अपना फसल के रखवाली करे खातिर एगो भारतीय किसान के कठिन से कठिन काम करे के पड़ेला I हर साल जाड़ा के मौसम में अपना फसल के रक्षा करे खातिर ओकरा कई-कई महीना तक आपन हाड़-हाड़ कपकपावत जाड़ा में अलाव के पास बईठ के बिना पलक झपकवले रात बितावे के पड़ेला I ई अइसन कठिन काम होला जे कवनों कठोर से कठोर तपस्वी के तपस्या से कम ना होला I फिर भी हँसत-हँसत एह काम के करे खातिर ऊ तत्पर रहेला त सिर्फ अपना अच्छा फसल के आस में I एगो मेहनतकश किसान अपना विषम परिस्थिति से एकदम विचलित ना होला काहेकि ओकरा खातिर त अच्छा फसल के आस ही ओकर ऊ संजीवनी ह जे ओकरा में अपना विषम परिस्थिति से लड़े के ताकत व जज्बा भी पैदा करेला आ ओकरा मन में अपना भाग्योदय के विश्वास के अलख भी जगवले रहेला I एह से ऊ अपना खेत में दिन-रात समरस भाव से अपना काम में दत्तचित लागल रहेला I ऊ चाहे जेठ महिना के चिलचिलात दुपहरिया होखे, सावन-भादो के मूसलाधार बरखा होखे चाहे आपन रूह तक कंपकपावत माघ-पूस के ठंढी रात ही होखे I

दिन-रात कोल्हू के बैल नाहिन अपना खेती के काम में जोताइल किसान आ ओकर परिवार के जीवन में आपन थकान मिटावे खातिर गाँव में आजो ना पर्याप्त बिजली के व्यवस्था बा ना ओकरा मनोरंजन आ जीवन के जरूरत से जुड़ल कवनों आधुनिक उपकरण के ही I अइसन परिस्थिति में कवनो ग्रामीण क्षेत्र में अपना जीवन के संघर्ष आ आशा-निराशा के बीच जूझत लोगन के जीवन में उत्साह, उल्लास, आनन्द आ उत्सव मनावे के अवसर आवेला ओकर पर्व व त्योहार से I पीड़िया एक अइसन त्योहार ह जे बिहार आ बिहार के सीमावर्ती क्षेत्र के लोगन में प्रचलित बा I इ एगो अइसन त्योहार ह जे एक साथे कई भावना के सम्पोषित करेला I एह से एह त्योहार के सन्दर्भ में हमरा मन में जवना तरह के भावना जागे आ हमरा के सबसे ज्यादा प्रभावित करे हम एह व्रत के ओही श्रेणी में डाल सकेनी I अगर हमार मन ई कहे कि ई एक धार्मिक त्योहार त हम ख़ुशी-ख़ुशी कह लीं I एही तरह से एकरा के स्थानीय कह लीं, क्षेत्रीय कह लीं, परम्परागत कह लीं, पारिवारिक रिश्ता के मजबूत करेवाला कह लीं, सांस्कृतिक कह लीं I चाहे अपना माटी आ कृषि जे जुड़ल एकरा के एगो अइसन त्योहार कह लीं जे अपना माटी के ओकरा सन्तान से सम्बन्ध के आउर अधिक सुदृढ़ आ स्नेह से भरल बनावेला त कह सकेनी काहेकि एमे कवनों अतियुक्ति ना होई I कारण ई त्योहार एह सब तरह के त्योहारन के परिभाषा में एकदम ठीक बईठी I

पीड़िया पर्व मूलरूप से जहाँ बहिन- भाई के स्नेह आ परम्परागत रूप से एक आदर्श आ खुशहाल भारतीय पारिवारिक जीवन के स्थापित करे के त्योहार ह ऊहई दोसरा ओर बिहार निवासी के जीवन में कृषि के केतना महत्वपूर्ण स्थान बा ई स्थापित करेवाला त्योहार भी ह I एह बात के चाहे हम एह तरह से कह लीं कि ई त्योहार अपना समाज में कृषि के महत्व के स्थापित करे वाला एक अइसन त्योहार ह जे धर्म आ धरती के एक दूसरा से अभिन्न रूप से जोड़ देले बा त कोई अतिश्योक्ति ना होई I

हम ई त जान गइनी कि पीड़िया त्योहार मूलरूप से बिहार आ ओकरा से जुड़ल कुछ सीमावर्ती इलाकन में ही मनावल जाला I अब ओह व्रत पर थोड़ा चर्चा हो जाय I कहे खातिर त ई त्योहार

ज्योत्सना प्रसाद

ज्योत्सना जी (जन्मस्थान: सिवान) हिंदी भाषा आउर साहित्य में बी. ए. (प्रतिष्ठा), एम. ए. आउर पटना विश्वविद्यालय से प्रोफेसर डॉ नंदकिशोर नवल के निर्देशन में महाप्राण निराला के गद्य के शैलीगत अध्ययन पर डॉक्टरेट कईले बानी । हिंदी में उपन्यास "अर्गला" प्रकाशित बा दू गो उपन्यास "अंतत:" आउर "मुक्तकुंतला" , कविता संग्रह आउर कहानी संग्रह प्रकाशन के प्रतीक्षा में बा । अरबी भाषा के मशहूर उपन्यास "अल-रहीना" के हिंदी में "बंधक" शीर्षक से अनुवाद आउर प्रकाशन । जॉर्डन, चीन आउर अमेरिका में आयोजित सम्मेलन में कविता पाठ । आजकल मुंबई में निवास ।

सुबह से लेके शाम तक के ही त्योहार ह काहेकि एह त्योहार में सुबह से लेके सूर्यास्त तक के ही उपवास रखल जाला आ सूर्यास्त के बाद उपवास तोड़ देहल जाला लेकिन सम्वेदना के स्तर पर ई त्योहार महज एक दिन के ना होला बल्कि हमरा एक पूरा महिना के संवेदना से जुड़ल रहेला।

गंगा के जवन मैदानी भाग भारत में कृषि खातिर सबसे अधिक उपयुक्त आ उर्वरा मानल जाला,ऊ मैदानी भाग के प्रतिनिधित्व बिहार भी करेला। एह से बिहार के जमीन भी काफी उपजाऊ बा। परम्परागत रूप से बिहार एक कृषि प्रधान राज्य ह आ सभ्यता के एतना विकास के बावजूद आजो बिहार में साठ प्रतिशत से अधिक लोग कृषि कार्य में ही लागल बा। एह से हमार कई त्योहार अपना ओह धरती के इयाद करे के,ओकरा के सम्मान देबे के एगो साधन आ बहाना भर रहेला। पीड़िया एक ओर भाई-बहिन के अटूट बंधन आ अपना परम्परा के सँजो के रखेवाला त्योहार ह त उहई दूसरा ओर अपना ओह धरती के सम्मान देबे वाला त्योहार भी ह। काहेकि दिन भर के उपवास के बाद जब ई व्रत तोड़ल जाला त ई व्रत फल-मिठाई चाहे छप्पन भोग से ना टूटे। ऊ टूटेला त अपना खेत में लहलहात 'सुग्गापंखी' चाहे 'बारलधान' के सुनहला भइल बाल के धान से निकालल ओह चावल से जे अपना हाथे छोड़ावल होखे।

पीड़िया भैयादूज के ठीक एक महीना बाद पड़ेला। भैयादूज जे अपना इहाँ प्राय: 'गोधन' के नाम से ही पुकारल जाला। ओही दिने गोधन कुटला के बाद ओही गोधन के गोबर से पीढ़िया लगावल जाला। बाकिर ओह दिने पीढ़िया लगावे के प्रक्रिया के सिर्फ श्री गणेश होला नाकि पूरा पीड़िया लगावल जाला। ओह दिन के बाद धीरे-धीरे, क्रमश: हर त्योहार के दिने ओह पीड़िया में कुछ ना कुछ जोड़ल आ बनावल जाला।

पीड़िया ओह त्योहार के कहल जाला जवना में सूर्योदय के पहिले से आ सूर्यास्त तक व्रत कइल जाला। एकरा साथे ओह व्रत के करे खातिर दीवार पर जवन आकृति बनावल जाला ओकरा के भी पीड़िया ही कहल जाला अंतर सिर्फ एतने रहेला कि व्रत कइला के पीड़िया कइल आ दीवार पर गोबर से कुछ निश्चित आकृति बनवला के पीड़िया लगावल कहल जाला।

पीड़िया लगावे खातिर सबसे पहिले अपना घरवाला लोग में अनुमति से कवनों घर के अन्दर के दीवार के चयन कइल जाला। चूँकि पीड़िया एगो समूह में करेवाला त्योहार ह एह से प्राय: एक ही दीवार पर अपना घरे के ना बल्कि पास-पड़ोस के कई घर के भुखनिहार आपन पीड़िया लगावेला। वइसे पीड़िया व्रत करे में लड़की लोग ही ज्यादा उत्साहित रहेला।

पीड़िया लिखे खातिर जब कवनों दीवार के चुनाव कइल जाला त सुरक्षा के लेहाज से एह बात के निश्चित क लेहल जाला कि ऊ दीवार घर के अन्दर की ओर होखे यानी घर के भीतरी दीवार होखे। काहेकि एह से लिखाइल पीड़िया से कोई छेड़-छाड़ ना कर पाई आ ना ही असामाजिक तत्वन से कवनों तरह के केहू के डर ही रही। काहेकि रात-बिरात पीड़िया के जोड़ावल जाला। ओकरा लगे गीत-मंगल होला।

गोधन कुटला के बाद जवन पीड़िया लगावल जाला ऊ गोधन के ही गोबर से लागेला। हर भुखनिहार खातिर एक-एक इंच के पाँचगो खेड़ी लगावल जाला जे पीड़िया लगवला के सिर्फ शुभारम्भ होला।

पीड़िया लगवला के प्रारम्भ कइला के साथ ही मानसिक रूप से पीढ़िया त्योहार शुरू हो जाला। ओह दिन के बाद से रोज सबेरे बसिए मुँहे कथा सुनल जाला जे एह तरह के बा "राजा के, भांट के बिटिया रहली दूनू जानी पीड़िया लवली दूनू जानी मर-हर गइली। केहू जामल राजा घरे केहू जामल महन्थ घरे। महन्तवा के सात पूत होला जीयत होला ,राजा के सात पूत होला मर-हर जाला। ---चल-चल गइली वृन्दावन में चूल्हा जलवली बुता-बुता जाला , तेल डलली पानी होला, कढ़ाई बइठवली अटक-पटक जाला, बेटवा काट-कूट के डलली छटक-छटक जाला --- तेहू पर बढ़नती भइल -------।" एह कथा में दूगो सहेली के चर्चा बा। जवना में दूनू सहेली के सात-सातगो भाई भइल लेकिन भाग्य-चक्र से बन्धला के कारण एक सहेली के सातो भाई जिन्दा रहे लेकिन राजा के लड़की के सातगो भाई भइल त जरूर लेकिन ऊ काल-कवलित हो गइल। एक सहेली के अपना दूसरा सहेली के प्रति इतना गहरा संवेदना रहे कि ऊ आपन दिन-दुनिया से नाता तोड़ अपना सहेली खातिर ओह भगवान श्री कृष्ण के नगरी में आ गइली जे अपना भक्तन के रक्षा करे खातिर गोवर्धन पर्वत के अपना कनिष्का अँगुली के नाखून पर उठा लेहले रहलन, द्रोपदी के चीर-हरण के बेरा उनका रक्षा खातिर स्वयं चीर में समाहित हो गइल रहले। एह से उनका ई विश्वास रहे कि कृष्ण के ओह नगरी में गइला पर उनका सखी के भाई के सुख निश्चित मिली। एह से ऊ वृन्दावन गइली लेकिन अपना सहेली के दुःख से एतना व्यथित रहली कि ऊ समझ ना सकली कि का करतानी आ एकर परिणाम का होई ? ऊ जे करे के चाहत रहली ओकर उद्देश्य भले ही अच्छा होखे लेकिन ओकर तरीका गलत रहे एह से उनका हर काम के संकेत अशुभ मिलत रहे। उनका हर काम के उलट-पुलट भइला के बावजूद अंत में उनका सब शुभ भइल उनकर 'बढ़नती' भइल। काहेकि ऊ दूनू सहेली बहुत ही श्रद्धा-भाव से पीढ़िया व्रत करत रहे। एह से ओह लोगन के अशुभ कार्य कइला के बावजूद भी पीढ़िया व्रत के प्रताप से अंत में सब शुभे भइल।

पीढ़िया व्रत के करे के पीछे हमार ई भावना काम करेला कि एह

www.bhojpurisahityangan.com

व्रत के श्रद्धा पूर्वक कइला से ओह व्रत के प्रताप से सिर्फ बिगड़ल काम ही हमार ना बने बल्कि हमरा अभाव भी भर जाला | अगर हमरा हाथ में भाई के सुख नइखे त ऊ सुख भी प्राप्त होला | अगर हमरा भाई पर कवनों तरह के विपदा आइल होई त ऊ भी दूर हो जाई आ अगर उनका जीवन पर ही कोई संकट होई त ओह संकट के निवारण भी उनका बहिन के पीढ़िया कइला से हो जाई |

गोधन के दिने जवना दीवार पर पीढ़िया लगावे के रहेला ओह दीवार के पहिले से ही साफ कलेहल जाला | अगर ऊ दीवार माटी के बनल रहेला त ओकरा के गाय के गोबर से लीप के चिकन क लेहल जाला | गोधन कुटला के बाद उहाँ के गोबर ले आके ओह दीवार पर पीढ़िया लगावे के प्रारम्भ कइल जाला |

गोधन कुटाते खरवास खत्म हो जाला | खरवास उतरते अपना इहाँ शादी-विवाह के ही ना बल्कि त्योहारन के बौछार भी शुरू हो जाला | पीढ़िया लगवला के श्री गणेश कइला के महीना दिन के बाद पीढ़िया व्रत होला | एह से एह त्योहार में ई पूरा एक महीना के एह तरह से व्यवस्थित कइल रहेला कि एह त्योहार के प्रति व्रत करे वाला के उत्सुकता आ लगाव बनल रहे | एह से हर त्योहार के रात में पीढ़िया व्रत करे वाला लोग आपस में मिलजुल के पीड़िया के गीत गावेला आ व्रत करेवाला हर त्योहार पर क्रमश: आपन पीढ़िया जोड़त जाला |

चूँकि पीड़िया आ गोधन दूनू भाई-बहिन के ही त्योहार ह एह से दूनू त्योहार में कथा आ गीत लगभग एके भावना से प्रेरित रहेला | कवनों-कवनों गीत त दूनू त्योहार में मुखरा बदल के चाहे कवनों-कवनों शब्दन में थोड़ा-बहुत हेर-फेर करके भी गावल जाला लेकिन गाना के आत्मा एक ही रहेला |

पीड़िया त्योहार में पीड़िया जे एक खेड़ी लगवला से शुरू भइल रहेला ऊ पीड़िया त्योहार आवत-आवत एगो अइसन समग्र आकृति के रूप ले लेला जवना में एक आयताकार संरचना के अन्दर पीड़िया लगला के साथे-साथ बहुत सा आकृति भी बनावल रहेला जैसे नव ग्रह, सूरज,चन्द्रमा,द्वारपाल ओकर पत्नी आ बच्चा, सीलवट-लोढ़ा, जाँत, ओखल-मूसल आउर ना जाने का-का ? ई सब आकृति बनेला सिर्फ गाय के गोबर से |

पीड़िया के दिने सुबह चार-पाँच बजे के बीच में (यानी कौआ बोले के पहिले) उठ के सरगही खाइल जाला | सरगही में जेकरा जे सुविधा रहल से खाइल | कहीं पूड़ी-तरकारी,हलुआ,खीर खाये के प्रचलन बा त केहू दही-चूड़ा से ही आपन काम चलालेला | ओकरा बाद से उपवास शुरू हो जाला जवना में पानी तक के कंठ के नीचे उतारे के मनाही बा | ई व्रत सूर्यास्त तक चलेला | सूर्यास्त के बाद नयका चाउर में गुड़ डाल के बनल रसिआव (पीड़िया के रसिआव में मूलत: दूध ना पड़त रहल ह गुड़ आ पानी में पकावल नयका चाउर रहत रहल ह | बाकिर आजकल दूध में गुड़ डाल के पकावल जाता एह से आजकल के प्रचलन में ओकरा के रसिआव ना कह के कुछ लोग मीठी खीर कहता त कुछ लोग गुड़ के खीर |) से व्रत तोड़ल जाला | उहो खाली रसिआव से ना ओह रसिआव में जेतना भाई बा ओही के हिसाब से अपना हाथ से छोड़ावल सुग्गापंखी धान चाहे बारलधान के साबूत चावल के घोंट के | पहिला कौर में ही कोशिश रहेला कि पानी के सहारे ओह चावल के घोंट लेहल जाव लेकिन अगर ऊ सम्भव ना भइल त दूसरा या तीसरा कौर में घोंट लेहल जाला | काहेकि हर भाई के नाम पर सोलह गो चावल के दाना घोंटल जाला जेकरा के 'सोरहिया' कहल जाला | बाकिर जहाँ संयुक्त परिवार के प्रचलन होखे उहाँ एगो-दूगो त भाई होई ना काहेकि आपन-चचेरा मिलाके प्राय: दर्जन भर से ऊपर भाई हो जाला तब कब ले सोलह-सोलहगो चाउर घोंटल जाई ? कइसे घोंटल जाई ? एह से सबके बदले एक ही सोरहिया के घोंटल जाला आ उहे सबके सब भाई लोग के नाम पर मान लेहल जाला | चाहे केहू-केहू का करेला कि अपना हर भाई के नाम पर दू-दूगो चावल के दाना घोंट लेला |

पीड़िया व्रत तोड़े के समय जवन रसिआव खाइल जाला ओकरा के खात समय बोलल ना जाला आ ना ही ओह आदमी के कोई दोसर ही नाम लेके पुकार सकेला | एकरा साथे ओह भूखला व्यक्ति के कान तक कवनों कुत्ता के भूकला के आवाज भी ना आवे के चाहीं | काहे कि तीनों स्थिति में सामने के लागल थाली छोड़ के भूखे पेट दिनभर के भुखनिहार के उठ जाएके पड़ेला | पीड़िया व्रत में दुबारा ना खाए के रिवाज बा ना पानी पिए के | एह से कई साल अइसन होला कि कवनों शरारती छोट बच्चा चाहे आपन भाइए में से केहू जेकरा खातिर ओकर बहिन ऊ व्रत रखले रहेले उहे बुझइला बिना कुत्ता के बाँध के रखले रहेला आ व्रत तोड़े के बेरा ओकरा के एगो ढेला से मार के छोड़ देला | ओने चोट लागते कुत्ता अपना दर्द से कराहत कायं-कायं करत आपन जान लेके भागेला एने पीड़िया करनिहार भूखे पेट आपन मन महसोसत अपना सामने के परसल थाली छोड़ के उठ जाला |

कुछ-कुछ घरन में पीढ़िया व्रत के दिने चौरठ के घोल से एगो दोसर दीवार के पोताई करके ओकरा पर गेंरु से पीड़िया के खेड़ी जोरावल जाला जवना के कुछ-कुछ जगह पर 'सोरहिया' भी कहल जाला | एह सोरहिया में कलात्मक लम्बा आकृति होला जेकरा ऊपर चिड़िया बइठावल रहेला | एह में भी सोरहिया के साथे कई तरह के आकृति बनावल रहेला | ई जे विभिन्न तरह के आकृति बनेला ऊ व्रत के दिने आ व्रत कइला पर बने ला आ गोबर से ना बल्कि गेरु से बनेला | एने दोसरा ओर ओही रात दीवार पर लगावल पीड़िया उतार लेहल जाला आ ओकरा के कवनों बाँस के दउड़ा चाहे माटी के बनल एक ख़ास तरह के पात्र में रखल जाला | चार बजे भोर में सज-सवंर के पीड़िया करनिहार लोग ओकरा के

www.bhojpurisahityangan.com

जल में प्रवाहित करे खातिर घर से निकलेला आ ओह लोग के आगे -आगे भाड़ा पर तय कइल कवनों आदमी ,चाहे अपना घर के कोई आदमी अपना सिर पर ओह टोकरी के धइले आगे-आगे चलेला जवना के बीवोबीच अब एगो बड़ा - सा दीया जलत रहेला | ओह पीड़िया के पीछे-पीछे माइक से चाहे बिना माइक के भी पीड़िया के गीत आ झूमर गावत, बतियावत ऊ महिला समाज धीरे-धीरे रमत-झमत चलेला |

पीड़िया के जल में प्रवाहित करे खातिर कवनों नदी के तट पर,तालाब के किनारे जाईल जाला | अपना गन्तव्य स्थान पर पहुँच के कवनों उचित स्थान देख के ओह पीड़िया के रख देहल जाला आ ओकरा के चारो ओर से घेर के ऊ महिला – मंडली बइठ जाला आ गीत गावे लागेला | चार बजे भोर से दीया आ बल्ब के रोशनी में नहाइल ओह तट के शोभा देखते बनेला | जब सबेर होखे लागेला तब ओह पीड़िया के पानी में प्रवाहित कर देहल जाला | ओकरा बाद फरुही (लम्बा-लम्बा चावल के भुजा) बताशा आ लड्डू से एक-दूसरा से मिलल जाला आ सूर्योदय होत-होत घरे वापस आ जाइल जाला | एह तरह से पीड़िया व्रत पूरा होला | ओह दिने जहाँ पीड़िया के प्रवाहित कइल जाला उहाँ प्रकाश के बहुत अच्छा इंतजाम प्रशासन आ स्वयंसेवी संस्था द्वारा कइल रहेला | एने पीड़िया के ऊपर भी एक बड़ा-सा दीया जलत रहेला जे सब मिला-जुला के प्रकाश-उत्सव जइसन प्रतीत होला | सवेर के बेरा, नदी के तट, ख़ुशी के माहौल आ रोशनी में नहाइल वातावरण- सब मिलाजुला के एक अद्भुत दृश्य बन जाला जे हमरा आँखन के बहुत सुकून देला आ हमरा मन के प्रफुलित कर देला |

(शेष अगिला अंक में)

वंदना दुबे

www.bhojpurisahityangan.com

आई दिवाली मनाई जा

जयनित कुमार मेहता

आई दीपावली मनाई जा
खुशी के दीप जलाई जा

बनाई आपन आदर्श राम के,
पूर्ण करीं कुल्हि आपन काम के,
आलस के मन से भगाई जा !
आई दीपावली मनाई जा

जीये दीं अउर जीहिं शान से,
अच्छाई के अपनाई प्राण से,
बुराई के जड़ से मिटाई जा !
आई दीपावली मनाई जा

जे सुप्त बा ओके जागृत करीं,
पाप से स्वयं के मुक्त करीं,
पुण्य के नगरी सजाई जा !

आई दीपावली मनाई जा
खुशी के दीप जलाई जा

दशहरा

अनन्या प्रसाद

त्यौहार आवेला, संग अपना ख़ुशी के फूल बरसावेला
जब जब होला डांडिया आ गरबा के शहर में धूम
लईका सयान बूढ़ जवान सभे नाचेला ख़ुशी से झूम-झूम
तब-तब होला बुराई के विनाश
(आ पता न कईसे हो जाला बुराई के जनम ?)
और जब-जब हमनी रावन के जलावेनी
तब हमनी के मिलेला सुकून !

पर कईसन सुकून ?
ऊ सुकून जे सिर्फ कुछ ही मिनट खातिर रहेला
भले ही हमनी के जलावेनिसन
रावन के पुतला, लेकिन असली रावण त
बईठल बा हमनी के अंदर
आ काबू में रखेला, सबके जकड़ के
अपना जबड़ा के मजबूत पकड़ में
रावन के त सिर्फ पुतला जलेला
समाज में असली रावन के अंत कईल
बहुत ही कठिन बा जईसे मगरमच्छ के
मुंह में हाथ डाल के फेरू निकालल !

गोधन : औरतन के मानसिक रोग से बचाव के अनुष्ठान

शशि रंजन मिश्र

चित्र– रवि प्रकाश सूरज

मानव शरीर रचना बड़ा जटिल बा। ओहमें भी मानव मस्तिष्क (दिमाग) के रूप रेखा आ बनावट अईसन कि आज भी वैज्ञानिक लोग एकर रहस्य ना बुझ पाइल । दिमाग (Brain), खोपड़ी (Skull) में स्थित होला आ ई चेतना (consciousness) और स्मृति (memory) का स्थान ह। शरीर के सभे ज्ञानेन्द्रिय- आँख, नाक, कान, जीभ आ त्वचा सभके आवेग एही दिमाग से नियंत्रित होखेला। ज्ञानेन्द्रिय आ दिमाग के बीच परस्पर दुतरफा संवाद होला, बाकी सभे के कंट्रोल दिमाग ही करेला। संवाद के माध्यम शरीर में फैलल तंत्रिका जाल होला जे मेरुरज्जु से होते हुये दिमाग तक आयनिक करेंट के रूप में दिमाग के न्यूरान सिस्टम में पहुंचावे के काम करेला। मनोचिकित्सक लोग एही विद्युत प्रवाह (दिमागी तरंग) के एलेक्ट्रोनसेफलोग्राफी (Electroencephalography; EEG) के माध्यम से अध्ययन करके मनोरोग के पहचानेला।

मनोरोग भा मनोविकार (Mental Disorder) एगो व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य के उ स्थिति ह जेकरा के कवनों स्वस्थ व्यक्ति से तुलना करके सामान्य नईखे कहल जा सकत। स्वस्थ व्यक्ति के तुलना में मनोरोगी के व्यवहार असामान्य होला। मनोरोग मस्तिष्क में रासायनिक असंतुलन के वजह से पैदा होखेला आ एकर उपचार खाति मनोरोग चिकित्सा के जरूरत पड़ेला। मनोविज्ञान में असामान्य आ अनुचित व्यवहार करे वाला के मनोविकार से पीड़ित कहल जाला। शुरुआती साधारण दिखे वाला लक्षण समय पा के बढ़ जाला आ शरीर के नुकसान पहुंचावेला।

शशि रंजन मिश्र

आरा, बिहार के रहे वाला शशी रंजन मिश्र जी , भोजपुरी मे हास्य व्यंग्य के संगे संगे गहिर साहित्य के सिरजना करे खाति जानल जानी , ईंहा के हिन्दी आ भोजपुरी भाषा प पकड़ बेजोड़ आ धारदार बा। ईंहा के लिखल कई गो लेख हिन्दी भोजपुरी के कई गो पत्र पत्रिकन में प्रकाशित हो चुकल बा। एह घरी ईंहा के दिल्ली मे रहत बानी।

मनोविकार के पाछे ढेर कारण होला जेहमें खानदानी, कमजोर व्यक्तित्व, सहनशीलता के अभाव, पहिले के कुछ बुरा अनुभव, तनाव, परिस्थिति आ असमर्थता शामिल बा। परिस्थिति जवना के सुलझावल भा पार पाइल दूभर होखे उ तनाव पैदा करेला। आ इहे मानसिक तनाव दिमाग में मौजूद रासायन के असामान्य करेला। आज के समय में तनाव समाज खाति सामान्य सा बात बा। लईकायीं में शिक्षा आ ओहमें बढ़त प्रतिस्पर्धा के तनाव, युवा में रोजगार के लेके तनाव, प्रोढ़ के भविष्य के चिंता में दिमाग तनावग्रस्त रहेला। कुल मिला के हर कोई तनाव से जूझ रहल बा। आ ई तनाव के रूपरेखा मानव समाज के बुद्धिजीवी होते तय हो गईल। आदिकाल से तनाव के उपस्थिती दर्ज बा आ एकर इलाज भी समयानुसार ग्रंथन में दिहल गइल बा। प्रकृति के नियम ह जवन चीज के जेतने दबाईब ओकर अंदर के ऊर्जा फफन के बाहर आवे के कोशिश करी। उदाहरण खाति गैस के गुब्बारा ले लीं। हवा भरल गुब्बारा पे अगर जरा भी कोई तनाव भा दबाव मिलल त अंदर के ऊर्जा (हवा) बाहर निकले के कोशिश करी। एही सिद्धान्त पे प्रेशर कुकर भी काम करेला। लगभग इहे परिस्थिति दिमागी तनाव के भी बा। तनाव के दूर करे के उपाय ना करब त ई नकारात्मक ऊर्जा राउर शरीर में कहीं ना कहीं नुकसान करी। तनाव के सबसे नजदीक के संबंध दिमाग से ही बा त दिमाग पहिला शिकार बनी। अब एह तनाव के कारण दिमाग के विद्युत तरंग (दिमागी तरंग) में हलचल होई। कुछ रसायन के विघटन होई आ असंतुलन के प्रभाव से मनोरोग के जनम होई।

समाज के जब निर्माण भईल त पुरखा लोगन के वैज्ञानिक नजरिया एह तनाव आ एकर कुप्रभाव पे भी पड़ल। आज के तरह तकनीक से अनभिज्ञ समाज कवनों रोग के कारण आ निवारण के उपाय सामान्य आदमी के जीवन में रोज़मर्रा के काम बना लिहलस। गीत संगीत आ दैनिक चर्या के संतुलन से तनाव आ मनोविकार के दूर करे के माध्यम बनावल गइल। समाज के हर वर्ग आ हरेक वय खाति कुछ नियम के खोज करल गइल, जेकरा के साध के कवनों तरह के शारीरिक भा मानसिक बेमारी से बांचल जा सकत रहे। समाज में अईसन हरेक नियम के धर्म से बांध दिहल गइल। भारतीय समाज में स्थान आ परिस्थिति के अनुसार हर जगह कुछ परब, कुछ व्रत-त्योहार के रचना करल गइल।

पुरुषप्रधान समाज में मेहरारून के स्थिति ठीक ना रहे। मरद घर के बाहर आ मेहरारू घर के भीतर ... बाहर के दुनिया से अंजान , चारदीवारी में जिनगी खप जात रहे। पुरुष वर्ग के मानसिक तनाव के कम करे खाति घर के बाहर बहुत साधन रहे बाकी चारदीवारी के अंदर मेहरारून के स्थिति दयनीय रहे। मानसिक तनाव के शिकार एह वर्ग मे क्रोध, कुंठा, अवसाद आ अंत में पागलपन जईसन मनोविकार पनप जात रहे। ई विकार सब अईसन हवें की इनका के निकालल न जाई त शरीर में रोग-व्याधि लईहें। पुरखा लोगन के वैज्ञानिक सोंच से एह तरह के रोग के रोके के उपाय मिलल लोक परब में। लोक परब जे जन जन के मुंहे पीढ़ी दर पीढ़ी पार होखे। ना कहीं कवनों वेदपुरान के वाणी ना कवनों ग्रंथ के लिखंत। बस मुंहे मुंही परब आ एकर विध... इहे लोक परब जे साधारण आदमी मे दिलो दिमाग में बस जाय आ एह परब के पाछे छुपल सोच के काम भी हो जाये। अईसने एगो लोक परब बनल- गोधन भा भाई दूज।

कवनों मेहरारू खाति आपन माई-बाप के बाद भाई से प्रेम होला। अगर देखल जाव त उहे सबसे जादे नजदीक होला। उमिर के हिसाब से कुछ ऊपर नीचे, कुछ बराबर एगो अईसन व्यक्तित्व जेकरा पे जेतना क्रोध-खीस ओहि पे सबसे बढ़के प्यार आ दुलार। लईकायीं के खेल के सहयोगी से लेके जीवनभर तक बहिन के रक्षा करे खाति समर्पित भाई से बढ़के दुनिया के सबसे प्यार दुलार के रिश्ता कवनों ना होखे। लोग मानसिक शांति पावे खाति आपन सबसे प्रिय चीज के ही साथ खोजेला। केहु गीत संगीत त केहु नाच, केहु इयारी दोस्ती के गपशप त केहु कवनों कारज में मन रमा लेवेला। अब मेहरारून के मानसिक तनाव के इलाज सबसे नजदीक आ सबसे प्रिय रिश्ता भाई में खोजल गइल। भाई आ बहिन के जोड़ के परब बनल। एह परब के विधि कहीं लिखित नईखे बाकी एक पीढ़ी से दोसर पीढ़ी तक आपन एके रूप में आज भी प्रासंगिक बा। एह परब के माध्यम से बरिस भर के क्रोध, खीस, मानसिक अवसाद के दूर करे के उपाय बतावल गइल बा। उपाय अईसन की अवसाद के ज्वालामुखी के धधकत लावा के केहु उफान पे लाके अचानक से बरफ जस जमा देवे। अवसाद के नामो निशान मिटा देवे। मन में फेर से शांति आ सकून आ जाये कुछ अईसने विधि से अंटाईल परब के नाम ह गोधन भा भाई दूज।

क्रोध के प्रतीकात्मक रूप ह गारी दिहल। बलवान क्रोध के निपटारा आपन बल से त कमजोर मुंहजोर (गारी) से करेलें। साल भर से कुंठाग्रस्त, क्रोध के आपन सीना में दबवले मेहरारून लोग के एह दिन छुट रहेला आपन हित-नात रिश्तेदार के गारी दे के आपन मन के दबल भाव के निकाले के। भाई दूज के दिन होते बिहान मय मेहरारून लोग आपन भाई भतीजा, नात रिश्तेदार सबके श्रापे के शुरू करी लोग। लोग मुंह में पानी तक ना डाले। खीस में अन्न जल छोडला के प्रतीक ह। एह दिन क्रोध के हरेक तरह से उफान पे लावे के कोशिस होला। क्रोध के अंतिम चरण में लोग केहु के मउअत तक के कामना कर देवेला। क्रोध के अग्नि जब प्रचंड होखे त सामने यमराज भी आ जास त उनको के जरावे के हिम्मत होला। यमराज मृत्यु के देवता हवें, उनकरा डरे दुनिया समाज सभे देवता पितर पूजत रहेला की यमराज से भेंट मत होखो। बाकी आज के दिन क्रोध आपन सीमा लांघत बा एह से यमराज से भी दू-दू हाथ करे खाति लोग तैयार बा। आज यमराज

www.bhojpurisahityangan.com

के दुर्गति हो जायी। गोबर से चौखुट बक्सा में यम-यमिन बनावल जाला। मान्यता ह की एक सैय्या पे मरद आ मेहरारू के एक दोसरा के ओर गोड़ करके ना सुते के। दूनों के बीच प्रेम के नास होला। त आज जब यमराज पे खीस उतारे के बा त उनकर मेहरारू के भी एही खीस में लपेट लियाई आ एह लोग के दांपत्य जीवन के छिन्न-भिन्न कर दियाई। अब गोबर के यम-यमी त बन गईले बाकी क्रोध एह गोबर पे कईसे उतरी , बरिस भ के क्रोध जे रोयां-रोयां पेहन भईल बा हतना आसानी से उतरल मुश्किल बा। झाँवा इंटा सबसे बरियार मानल जाला, उहे ओह चौखटा में बीचों -बीच रखाई। आ फेर सब औरत सब मिलके मूसल आ लाठी से उ इंटा के मार-मार के फोड़ दिहें, यम–यमिन के दुर्गत हो जाई। कपार के खीस अब धूरे धूर होके जमीन लोटत बा। बरिस भर के कुंठा, खीस, अवसाद इंटा के धूर आ गोबर में सनाईल जमीन चाट रहल बा। सारा क्रोध निकल गइल। अब जवन पर क्रोध निकाले के रहे ओकर नेस्तनाबुत हो गईल आ अब क्रोध शांत हो गइल। जवन ज्वालामुखी धधकत रहे ओकर सब लावा बह गइल। अब उ जगह खाली बा, समय पावते एह बुझाईल ज्वालामुखी के मुंह पे ठंढा मीठा पानी के झील बन जायी। काँट से भरल डाढ़ के फुनगी पे खुसबु बिखेरत फूल खिल जायी।

क्रोध शांत भईल, मन के शांति मिलल त सबेरे से लेके अब तक घटनाक्रम पे धेयान जायी। ओह ! आज क्रोध में ना जाने सभे के का-का कह गयिनी। आपन भाई-भतीजा सभके मउअत मांग देनी। बड़ा गलती हो गइल। एह तरह के पश्चाताप के धारा बही। सब मेहरारू लोग आपन जीभ में रेंगनी के काँट गड़ा के पश्चाताप करी-
'जवन जीभिया से गारी दिहनी ओहि जीभिया में काँट गड़ो'।

पछतावा के बाद सब औरत लोग आपन भाई-भतिज के आशीर्वाद दिही आ बज्जरी खियाई की इनका लोग के देह बज्जर बनो।

"कवन भइया चलले अहेरिया, कवन बहिनी देली आसीस

जिअसु हो मोरा भइया, जीअ भइया लाख बरिस"

विचार कइल जाय त क्रोध आ प्रेम, दूनों एके ऊर्जा से निकलल भावना के दू रूप ह। दूनों में कवनों मौलिक अंतर नईखे। यदि क्रोध के गहिर अभ्यास कइल जाय आ क्रोध के जेतना संपूर्णता से जीए के प्रयास करल जाय त ओतने गहिर आ प्रामाणिक प्रेम उत्पन्न होखी।

अपना भीतर प्रेम के अंकुरण के दोसर उपाय के साथे क्रोध के अभ्यास भी एगो उपाय ह। अभ्यास के माने की व्यक्ति के मन में खाली क्रोध के भावना छोड़ के कुछ आउर भाव मत रहे। क्रोध के भाव एतना प्रचंड होखे की यम जईसन प्रचंड व्यक्ति भी एह क्रोध के प्रकोप से मत बांचस। मृत्यु सबके विरोधी ह , दुखदायी ह , उग्र ह, प्रचंड ह। मृत्यु के देवता यम हवें त अईसन कठोर के ऊपर क्रोध कईला पे केहु विरोध ना करी।

भय आउर क्रोध के कारण लगभग एके बा। क्रोध के मूल उद्देश्य ह भय पे जीत हासिल करे के प्रयास। सही मामिला में भयभीत के क्रोधी होखे के आ क्रोधी के भयभीत होखे के गुंजाइश हमेशा रहेला। आ मृत्यु से त हरेक प्राणी भयभीत रहेला। एह भय के ऊपर अगर क्रोध कइल जाय या एकर अभ्यास कइल जाय त आपन चरम पे पहुँच के इहे क्रोध मृत्यु के भय के समाप्त कर दिही। एकरा बाद मनोबल के जवन ऊर्जा मिली अगर अभ्यासी चाहे त प्रेम के रूप में केहु पे न्योछावर कर दिही।

भाई दूज के दिन कइल जाये वाला एह अनुष्ठान में जवन ऊर्जा के प्राप्ति होला ओकर लाभार्थी भाई होले। अनुष्ठान कहे के मतलब ई कि एह परब के सब विधि मानसिक तौर पे ही करल जाला। मन के उद्वेग , कुंठा, क्रोध आ अवसाद के समन करे खातिर एह से बढ़िया उपाय कुछों नईखे हो सकत कि लोक व्यवहार भी हो गइल आ मनोविकार से भी छुटकारा मिल गइल।

संदर्भ सूची

1. मगध की रहस्यावृत साधना- डा० रवीन्द्र कुमार पाठक
2.मस्तिस्क-विकिपीडिया
3. मनोरोग-विकिपीडिया

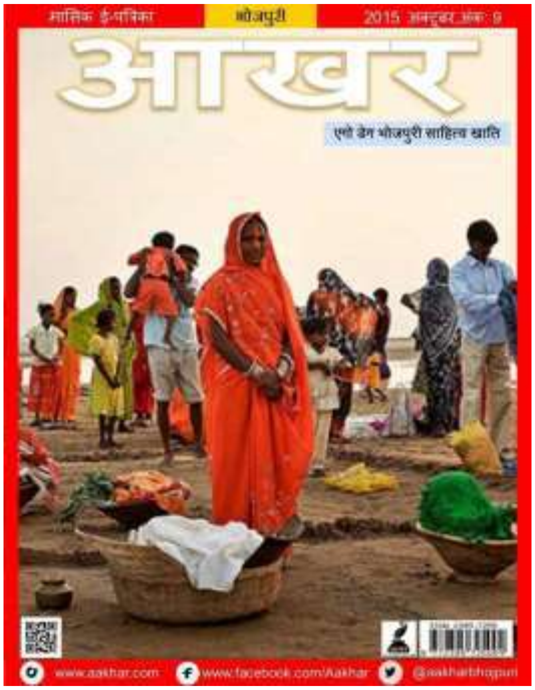

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरिया पर्व : बहुरा, छठ, पीडिया आ गोधन

एस. डी ओझा

भाई के दीर्घायु रखे वाला व्रत - बहुरा

बहुरा के व्रत भाद्रपद कृष्ण पक्ष के चतुर्थी के मनावल जाला। बहुरा से सम्बंधित एगो कथा कहल जाला। जंगल में गाय भटक गईल रहे। ओकर सामना एगो बाघ से भईल। बाघ जब ओकरा के खाए के उद्यत भईल त गाय चिरौरी कइलसि -"बाघ भाई हमार एगो बछरू बा। ऊ भुखाइल होई। ओकरा दूध पियावे के बा। जब हम दूध पियाई के आईबि त तू हमरा के खाई लीह। " बाघ के दया लागि गईल। ऊ गाय के जाए दिहलसि। गाय बछरू किहाँ पहुँच के दूध पियावे के उपक्रम करे लागलि , लेकिन बछरू गाय के उदास मन देखलसि त दूध ना पियलसि। ऊ पूछलसि - " माई का बात बा ? ते काहें उदास बाड़े ? जब तक ते बतईबे ना त हम दूध ना पियबि।" गाय के हारि के पूरा बात बतावे के परल। बात सुनि के बछरू कहलसि कि हमहुँ चलब। अब गाय आ बछरू एके संगे बाघ के पासे पहुँचले स। बछरू कहे कि हमरा के खा। गाय कहे कि हमरा के। महतारी बेटा के प्रेम देखि के बाघ मने मने लज्जित भईल। सोचलसि कि महतारी बेटा में कतना प्रेम बा ? एगो हम अधम बानि कि इन्हनि के खाये खातिर सोचतानी , जब कि गाय हमरा के भाई कहतिया। अतना सोचला के बाद बाघ गाय आ बछरू के छोड़ दिहलसि। दुनो ख़ुशी ख़ुशी अपना गन्तव्य पर चलि गइले स। ऊ दिन भाद्र पद कृष्ण पक्ष के चतुर्थी रहे।

तब से बहुरा के कथा होखे लागल।कुंवारि कन्या से लेके बिअहल मेहरारू तकले कुल्हि औरत लो ये पर्व के मनावे लागल लो। ई भाई बहन के त्यौहार ह। बिअहल बहिन लो ये दिन के अपना नैहर आवेला लो काहे से कि ई त्यौहार नईहर में हीं मनावल जाला। पंडितजी कथा कह ले। सब कथा सुने ला। पंडितजी के सीधा (आटा) दान कईल जाला। समवेत स्वर में सब मेहरारू लोग गीत गावेला।

नैहर के ठण्डी बयार , ससुरवा ना जइबो राम।

केरवा जे फरेला घवद से (छठ)

लोक आस्था के परब छठ के इतिहास बहुत पुरान हा। ई पौराणिक काल से मनावल जात बा। अथर्व वेद में एकर जिकिर कईल गईल बा। रामायण काल में जब लंका पर राम के जीत हो गईल त राम आ सीता दुनों जना कार्तिक के शुक्ल पक्ष षष्ठी के ई व्रत कइले रहे लोग। महाभारत काल में द्रोपदी भी अपना परिवार के कुशल मंगल खातिर ये व्रत के करति रहली। कृष्ण के बेटा साम्ब जब कुष्ठ रोग से पीड़ित हो गईले त कृष्ण शाक्यद्विपीय (सकल्दीपि) ब्राह्मण लोग के बोलवले। चन्द्रभागा नदी के तीर पर उनुकर चिकित्सा सूर्य के रौशनी में भईल। एकदम ठीक भइला पर साम्ब ओइजा एगो सूर्य मन्दिर वनवले , जवना में प्राण प्रतिष्ठा कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी के भईल रहे। ऐसे साबित होता कि छठ के पूजा भारत में प्राचीन काल से मनावल जाता।

छठ पूजा के मनवला के एगो वैज्ञानिक पहलू भी बा। छठ पूजा चैत व कार्तिक महीना के शुक्ल पक्ष के षष्ठी तिथि के हर साल मनावल जाला। वैज्ञानिकन के कहनाम बा कि ये तिथि के सूरज के परा बैगनी किरण पृथ्वी पर ढेर पड़ेला , काहे से कि ये दिन के चन्द्रमा के भी स्थिति अइसन हो जाला कि जहवाँ से परा बैगनी किरण प्रवर्तित होई के पृथ्वी पर आवेली स। ये तरह से सूरज के आ चन्द्रमा से प्रवर्तित कुल्हि पराबैगनी किरण के मात्रा पृथ्वी पर ज्यादा हो जाला। परा बैगनी किरण सेहत खातिर नुकसान दायक ह - ई बाति के हमनी के पुरुखा लोग के पता रहे। ऐ से ज्यादा परा वैगनी किरण के हो गईला से कवनो महामारी न हो जाऊ -ऐ से छठ पूजा कई के सूरज के शांत करे के उतजोग करे के परम्परा चलि पड़ल।

छठ पूजा साल में दू बार कार्तिक आ चइत में षष्ठी तिथि के कईल जाला। ज्यादातर कतिकी छठ के मनावल जाला। छठ पूजा पहिले पूरा बिहार आ पुरबी बलिया में मनावल जात रहे , लेकिन पुरबी बलिया के बेटी विआह कई के जब पश्चिमी बलिया , ग़ाज़ीपुर , आजमगढ़ , गोरखपुर , बनारस आदि जगहा पर गईली स

एस० डी० ओझा

बलिया के रहे वाला , ई. एस डी ओझा जी , आईटीबीपी से डिप्टी कमांडेट के पोस्ट से रिटायर भईल बानी। हिन्दी आ भोजपुरी मे सोसल मिडिया प समानांतर रुप से लिख रहल बानी। देस विदेस के अदभुत जानकारी इतिहास वर्तमान से जुड़ल धार्मिक मान्यता से जुड़ल जानकारी पाठक के सोझा ले आवेनी। एह घरी ईंहा के चंडीगढ मे रहि रहल बानी।

त ये परब के ज्यादा प्रचार प्रसार मिलल। आजु ई परब लगभग पूरा पुरबी उत्तर प्रदेश के परब हो गईल बा। ठीके कहल जाला -

वनस्पति खातिर चिरई।
संस्कृति खातिर बेटी।

प्रवासी यूपी बिहार के मजदूर के भी ये परब के देश बिदेश में फैलावे में बहुत बड़ हाथ बा। आजु ई परब भारत के हर छोट बड़ शहर में (कश्मीर से कन्या कुमारी तक) मनावल जाता। विदेश में मॉरीशस , त्रिनिदाद , फिजी , अमेरिका , अफ्रीका आदि ढेर सारा देशन में मनावल जाता।

सनातन धरम में इहे एगो परब बा जवन डूबत सूरज के अरघ देला। कहलो जाला कि दुनिया चढ़त सूरज के सलाम करेला। इहवाँ डूबत सूरज के भी मान दिहल जाला। ई परब बेद शास्त्र से अलग हटि के जनता द्वारा गढ़ल बा। एकरा में कवनो ख़ास खर्चा , कवनो पुरोहित ,कवनो पूजा पद्धति,कवनो विशाल पांडाल, बिजली के लट्टू ,पटाखा आ लाऊड स्पीकर के जरूरत नइखे। बांस निर्मित सूप , दउरा , बहंगी , फल , ठेकुआ , गन्ना ई कुल्हि से ये बरत के जरूरत पुरा हो जाता।

छठ चार दिन के बरत ह। पहिलका दिन सेंधा नमक , घीव से बनल अरवा चाउर आ लउकी के तरकारी खाइल जाला। अगिला दिन उपवास शुरू होला। ये दिन के राति खानी उखि के रस में रासियाव बनेला , जेकरा के ब्रतिहा खाले। तिसरका दिने अस्त होखत सूरज के दूध के अरघ दिहल जाला। ई रश्म कवनो कुआं ,तालाब आ नदी के डाड़ भरि पानी में खड़ा होई के कइल जाला। छठ के भक्ति गीत गावल जाला। अंतिम दिने उगत सूरज के अरघ देई के बरत के समापन कईल जाला। बरत करे वाला कांच दूध के सरबत बनाई के पियेला। बरत करे वाला के खइला के बादे घर के अउरी लोग खाला।

आजु काल्हु ई बरत के लोग अपना स्तर पर आधुनिक क देले बाड़े। पटाखा , लाऊड स्पीकर , आर्केस्ट्रा के आयोजन के संगे संगे लोग नाच भी नचावत बा। हम असम में ई देखि के हैरान रहि गइनी कि छठ पूजा के बाद लोग पार्टी देता , जवना में माँस मदिरा परोसल जा रहल बा। हमार सबसे हाथ जोड़ि के निवेदन बा कि ये बरत के पारम्परिक रूप के मति बिगाड़ी स। कवनो ताम झाम मति करे सभे। कवनो मन्त्र तन्त्र के जरूरत नइखे। खाली छठ के भक्ति गीत गाई सभे। आदित खुश रहिहें। जिनिगी चलति रही। केरा घवद से फरत रही।

केरवा जे फरेला घवद से ओ पर सुगा मेड़राई।

लेले अईह भइया सुरुका के चिउरा (पिडिया)

भाई बहिन के प्रेम के प्रतीक ई त्यौहार कातिक के शुक्ल पक्ष द्वितीया से शुरू होला आ अगहन मास के अमावस्या के ख़तम होला। एह बरत के रूप बरत या गौरी तप बरत भी कहल जाला। विशेषतः गोधन के गोबर से पिड़िया के शुरुआत होला।पहिले से तय केहू के घरे दीवार पर शिव के गणन के आकृति उकेरल जाला। पहिलका दिने केवल पाँच गो पिड़िया लगावल जाला। धीरे धीरे एकरा के सोरह तक ले जाईल जाला। जेकरा जई गो भाई ओकरा ओतना सोरह गो भाई पीछे पिड़िया। रोजाना पिड़िया के अगोरल जाला। राति खानी ओइजे सुतल जाला। गीत गावल जाला।

भइया लेले अईह सुरुका के चिउरा।
बहिन छोड़ि द पिड़िया बरतिया।
सुरुका के चिउरा महंग भइले बहिना।
कईसे हम छोड़ि भइया पिड़िया बरतिया।
पिड़िया बरत ह तहरे जियछिया।

पूरा एक माह अगोरला के बाद अगहन के अमावस्या के पिड़िया के अगोरल ख़तम हो जाला। कुल्हि लइकी अपना अपना घर से मिठाई ले आई के अपना अपना मुड़ी तर धई के सुति लो। आपस में चुहल बाजी भी करि लो। जे निर्भेद सुती। ओकरा मुड़ी तर के मिठाई गायब हो जाई। ये पर लइकी लो में थोर बहुत नोक झोंक भी हो जाई। फेनु सुबह तकले सब कुछ सामान्य हो जाई। पिड़िया के गाई गाई के उखाड़ल जाई। गावत बजावत पिड़िया महारानी के कवनो पोखरा चाहे कवनो नदी में विसर्जन क दिहल जाई। लवटतो खानी कवनो झूमर आ टपका गावत आई लो लाइको लो -

अपने त पिए ए रामा हमरो के पियावे हो रामा।

आजकल पिड़िया विसर्जन भी धूम धाम से होता। आर्केस्ट्रा , डीजे के धुन पर पिड़िया के विसर्जन कइल जाता।पारम्परिक झूमर के स्थान पर फ़िल्मी गीतन के कैसेट बाजत बा , लेकिन हमरा बिचार से पिड़िया विसर्जन के ई रंग ढंग पारम्परिक पिड़िया के आत्मा के खतम क देता। चलि का कहल जा सके ला। मन माने मन की बात। आजु काल्हु इहे ट्रेंड बा त जइसन बहे बयार पीठ ओइसे दिहिं।

गोधन बाबा कुटा जइहें (गोधन)

ओइसे त गोबर के गौरी गणेश बनेला। बाभन बरुआ ये गौरी गणेश पर पइसा चढ़ावे के कहेला लोग। एही से बाभन लो के गोबर पर से पइसा उठावे वाला जियकिया कहल जाला , लेकिन पूर्वांचल में एगो अइसनो त्यौहार बा जवना में कवनो बाभन के जरूरत नइखे। इ त्यौहार के गोधन कहाला। दिवाली के बाद गोबर के दिन लौटेला। कातिक महीना के शुक्ल पक्ष द्वितीया के गोधन पड़ेला। एकरा के यम द्वितीया भी कहल जाला। ये दिने मेहरारू लोग गोबर के यम यमी बनावेला। यम-यमी मरद- मेहरारू ह लोग। यम यमी के चारों तरफ ईंट , रेगनी , कसइली , नारियल रखल जाला। एकरा पहिले बहिन लो अपना अपना भाई के सरापे ला लो। सरापला के बाद ई लोग के पश्चाताप होला। प्राश्चित खातिर रेगनी के कांट के जीभी पर चुभावे ला लो।ओकरा बाद गोधन के कुटल

www.bhojpurisahityangan.com

जाला। जवन चना बा ओकरा के साफ़ कइके ओकरा संगे मिठाई डालि के चुन्का चुक्का भराई। ऊ चुन्का चुक्का के मिठाई भाई लोग खाई। आ नेग में कुछ पइसा चाहे कवनो उपहार बहिनी के दिही लो।

सरापे के ई इतिहास बा कि एगो राजा के बेटा के बिआह रहे। ऊ ई शादी में आपन ससुरयतिन बेटी के भी बोलवले रहले। उनकुर बेटी कुछ मेहरारून के बतियावत सुनली कि राजा के बेटी आजु ले अपना भाई के ना त गारी देले बाड़ी ना सरापले बाड़ी। ये से ऊ जब बिआह कई के घरे आई त मरि जाई। राजा के बेटी तुरन्त हरकत में आ गइली। भरि रास्ता अपना भाई के गारी देत आ सरापत अइली। रेगनी के कांट से जीभ छेदत अइली। घरे अइला पर यमराज बईठल रहले। जब यमराज के पता चलल कि राजा के बेटी खूब सरापले बाड़ी त ऊ दुनो भाई बहिन के आशीर्वाद देई के यमलोक चल गइले।

येही पूजा में बिना बाभन के गोबर के स्वतन्त्र अस्तित्व होला। गोबर के हौसला अफजाई खातिर एगो मुक्तक -

तू आपन फसाना खुद लिखिहS
तू आपन कहानी खुद कहिहS
आपन दुनिया गढे के बा तोहे
मंजिल मिल जाई त फेरु कहिहे।

माई नु हईं !

सुस्मित सौरभ

छठ परब के दूसरका अरघ के दिन, कोयल नदी के घाट प भोरे-भोरे जाड़ आपन गोड़ पसारे के शुरुआत क चुकल रहे। छठ के गीतन के धुन आ ओह धुन प थिरकत घीव के दीयन के लौ के गर्मी कुछ हद तक ठंडा पुरवइया के शैतानी करे से रोके के भरपूर कोसिस में रहे आ सुरूज़ देव अभी ले आसमान के सीढ़ी प आपन एक-एक गो डेग फूँक–फूँक के डालत रहले। प्रकृति के सब रंग परावर्तित होके हमनी के ज्योति पटल प अंकित होत रहे आ नयनाभिराम शब्द के सार्थकता हम छठ के घाट प ही बुझ पईनी। माई अरघदान क लिहलस आ अब व्रत के निर्विघ्न रूप से सम्पन्न भइला के एगो दिव्य चमक ओकरा चेहरा पर दिखायी पड़त रहे। बाबूजी, भाई, हम आ हमार श्रीमति जी सब लोग सुरूज़ देवता के प्रणाम क के छठ के परसादी घाटे प खाये के सुरू का देनी जा आ ठेकुआ के एगो टुकड़ा मीस के हम आपन दू बरिस के बेटी के मुँह में डाल देनी। हिन्दू धरम के एगो बहुत बड़ परंपरा चाहे कहीं त मिथक ह कि लोग पूजा के तबे सफल माने ला जब ओह पूजा के परसादी अधिक से अधिक लोग के कंठ में स्थान बना ले। छठ लोक आस्था के एगो महान परब ह आ लोग एह पूजा के परसादी मांग के खाये में भी अपना के धनी समझेले। एक-एक कर के मुस्कान बिखेरले आग्रहपूर्ण कई गो चेहरा हमनी के सोझा से संतुष्ट होके निकलत चल गईल। भाई ठेकआ आ फल लोगन में बांटे में अझुरा गइल। श्रीमति जी सेनूर के सिंहोरा हाथ में सम्हरले रहली आ भख़रा सेनूर से सब मेहरारू लोगिन के जे भी परसादी के चाह में आवे उनकर नाक के संधि लिलार से करावे मे लागल रहली। हमार छोटकी गुड़िया सृष्टि के आधार बिंदुअन के एक साथे देख के किलकत रहे आ हम ओकर चुलबुलाहट के अपना बाहीं में भरे के नाकाम कोशिश में लागल रहीं। कुछ देर में सूरूज़ देव आकाश में चढ़ गईले आ लोग आपन घर के राह लिहल शुरू कर देले। पूरा व्रत के आयोजन के दौरान प्रशासन के सहयोग सराहनीय रहे। वैसे भी पिछला कुछ बरिसन में हमनी के देश मे भगदड़ के कई गो घटना घट चुकल बा एह से घाट पर सीआरपीएफ के जवान तैनात रहले ताकि एह तरह के अनहोनी के रोकल जा सके। बेटी हमारा गोदी में उछलत- अनसात आपन सांकेतिक खीझ के व्यक्त कइल शुरू कर दिहलस। जन-हुजूम अब धीरे- धीरे घाट से अपना-अपना घर के बाट ले चुकल रहे आ माई भी घरे चले खातिर आपन सहमति दे दिहलस। भाई परसादी के दउरा अपना माथा प ले लिहलस, बेटी अब श्रीमति जी के गोदी में जाके तनि आराम महसूस करत रहे। हम केला के घवध ले लिहनी आ बाबूजी चटाई आ चद्दर लेके आगे चल दिहले। माई के हाथ में अब भी परसादी के झोला रहे आ उ राह में मिले वाला परिचित लोगन के परसादी देत जात रहे। घाट से मुख्य सड़क पर आवते ही सीआरपीएफ कैंप रहे। माई हमनी से आगे-आगे चलत रहे। अचानक, माई रास्ता छोड़ के कैंप के गेट देने चल दिहलस जवन सड़क से पाँच कदम के दूरी पर रहे। भाई आवाज देके माई के रोके के सोचते होई तब तक माई आपन मन के सोचल काम के पूरा कर चुकल रहे। हम खाली अतने देख पइनी कि कैंप के गेट पर खड़ा सीआरपीएफ के जवान माई के सोझा आपन दूनो हाथ जोड़ दिहलस। हमनी के सबकुछ समझे तक माई हमनी के साथे रहे।

भाई हंस के कहलस- "माई, रस्ता भुला गइलिस हा का ?"

बाबूजी के चेहरा पर एगो दबल मुस्कान रहे। श्रीमति जी हंस पड़ली आ शायद बेटी भी एगो छोट किलकारी से उनकर साथ दिहलस।

" आ ना बबुआ, ओह सिपाही के परसादी देबे चल गइनी हा। बेचारा, परदेसी आदमी ह नु। तू लोग भी त बाहर-भीतर रहे ल लोग। "

अतना कह के माई कुछ देर मौन रहल। शायद, आपन भावना पर काबू करे के कोशिश में लाग गइल। फेर कहे लागल-

"माई के जीव बड़ा पापी होला हो। जब कवनो परब-तीज में तू लोग एहिजा ना रह लोग त करेजा टूक-टूक हो जाला। मन में बड़ा दाह होला। ई हो बेचारा त आपन घर-बार छोड़ के एहिजा नोकरी करता। देख ना ! कतना खुश भइल हा परसादी पा के ? का करीं? माई नु हईं।"

अतना कह के माई पलट के फेर ओह जवान देने देखलस जवन माई देने देखत न जाने कवना सोच में डूब चुकल रहे।

अब हमनी भीरी कवनो शब्द ना बांचल रहे। लोर के दू गो बूंद हमरा आंखिन के कोर में ठिठक गईल। हमनी के निःशब्द रस्ता पर चल दिहनी जा । शायद सब केहु के मन माई के एह दयामयी हृदय के समझे के नाकाम कोशिश में अझुराइल रहे। हमरा कवनो शायर के ई पंक्ति बार-बार याद आवत रहे-

"किचन में माँ बहुत रोती है पकवानों की खुशबू में
किसी त्योहार पर बेटा जब उसका घर नहीं होता।"

आ हमार बेटी अपना माई के गोदी में रह-रह के किलक उठत रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

दिवाली के पड़कौना

मनोज कुमार

दिवाली काल रहे। बाकिर मुहल्ला के लइका लोगन में आजुवे से पूरा उत्साह भरल रहे। नुक्कड़ प सोना, परसादी, गोधन, पिरितिया, सुन्दरमा, मोहन आदि लइकन के जुटान भइल रहे। सोना के हाथ में कवनो पड़ाका रहे जे ऊ सभे के देखा के कहत रहे-"इइसन पड़कौना केहू ना देखले होई। एकदम असली एटम बम हा। खूबे तेज आवाज में भड़केला!"

"तनी भड़का के देखावऽ तब जानेब जा।" परसादी ओह के चुनौती दिहलस।

"अबे लऽ...।" सोना तनिका किनारे जा के कहलस-"सभे केहू आपन कान में अंगूरी डाल ले। ना त कान बहिर हो जाई।"

"मोहन, आपन कान बन क ला।" सुन्दरमा आपन कान में अंगूरी डालत कहली। छौ बरिस के मोहन ओकर छोट भाई रहे जेकरा संगे खेलत ऊ इहां नुक्कड़ प चंहुप गइल रहली। ओकरा देखा-देखी मोहन भी आपन कान बन क लिहलें।

सोना बम के छूछी में आग धरा के तेजी से भागी आइल।

"बड़ामऽ..!!!" तेज धमाका भइल। आवाज सांचो बड़ा तेज रहे।

"हमार कान त ना बहिर भइल।" परसादी उपहास से कहलस, जे ऊ दल में सब बड़ रहे।

"बाकिर आवाज पूरा महल्ला में सुनाईल होइ।" सोना कहलस।

"इ त कुछो नइखे।" परसादी आगे कहलस-"हमार बाउजी कलकत्ता से आइल बाड़े। हमरा खतिरा ढेर सारा पड़कौना लइले बाड़ें। सब हम काल दिवाली में भड़काएम। केहू के ना देबा।"

"हमरो चाचा दिल्ली से आइल बाड़ें।" अब ले लइका लोगन के बात सुनत पिरितिया गर्व से कहली-"नया-नया पड़ाका ले के। ओमे राकेट भी बा, जे आसमान में जा के सात बेर भड़केला।"

"हमरो राकेट किनाइल बा।" भला गोधन कहां चुप रहे वाला रहे। उहो कहलस-"अतने ना, हम त माई से पइसा लेके खूब तेज आवाज करे वाला बम, असली मुर्गा छाप नागिन पड़ाका आ अनार भी किनले बानी।"

सभे केहू आपन-आपन खजाना के बारे में बता दिहलस। सोना मोहन के तरफ इशारा करत सुन्दरमा से पूछलस-"आ मोहन के काथी किनाइल ह ?"

सुन्दरमा बतवली-"मोहन के चुटपुटिया पटाका, चकरी आ छुरछुरी किनाइल हा।"

"चुटपुटिया पटाका !" सगरे लइका हंसे लगले।

मोहन टुकुर-टुकुर आपन बहिन के मुंह ताके लागल। ऊ कहत रहली-"बाउजी तेज आवाज वाला पड़कौना ना किनेलें। कहेलें कि ओह से हाथ जर जाला। छोट लइका लोग के ओह से दूर रहे के चाहीं।"

मोहन के अब ले घर में केहू ना बतवले रहे कि ओकरा खातिर का किनाइल बा? उमिर में छोट होखे के चलते ऊ बोलें कम आ सुने ज्यादा बाकिर जब आपन कवनो बात पे अड़ जास त फेरू धरती फाटे चाहे आसमान, ऊ कवनो देवता से ना बदें। उनके इहे जिद के चलते बाबूजी सभे केहू के मना कइले रहलें कि आजु पटाका आ छुरछुरी के बारे में मोहना के केहू कुछो ना बताई।

बाकिर अब त बात खुल गइल रहे। मोहन के इ बात मालूम चले भर के देर रहे कि ओकरा खातिर का किनाइल बा, ऊ घरे आके आपन जिद पे उतर गइलें-"दिदिया, हमार चुटपुटिया, चकरी आ छुरछुरी केने बा ? हमके ला के दे।"

"दिवाली काल बा, मोहना।" नौ बरिस के सुन्दरमा ओके समुझावे के प्रयास कइली-"काल राती खान फटाका छोड़ल जाई।"

"ना। हमके अब्बे चाहीं।" मोहन आंख मुन के जोर से चिल्लाइल।

हाला सुन के बाबूजी आ गइलें। मोहन के जिद ठनले देखलें त पूरा माजरा समझत उनका देर ना लागल। ऊ खिसिया के कहलें-"एकरा के के बतवले बा? एही खातिर हम सभे के मना कइले रहनी हा।"

बाबूजी के रिसियात देख सुन्दरमा चुप हो गइली। ओके अफसोस होखे लागल कि महल्ला के लइकन क बात में आ के ऊ काहे मोहना के सामने घरे फटाका, छुरछुरी आये के बात बता दिहली।

"दिदिया रे, कहवां बा हमारा फटाका?" देर होखत देख मोहन के पारा सातवां आसमान पर चंहुप गइल। ऊ अउरो जोर से चिल्ला

मनोज कुमार

वाल्मिकी नगर , बिहार के रहे वाला मनोज कुमार जी , आखर से शुरु से ही जुड़ल बानी । पेशा से अध्यापक , कार्टुनिस्ट आ साहित्यकार मनोज कुमार जी भोजपुरी कार्टुन आ हिन्दी मे बाल साहित्य खाति जानल जानी । वर्तमान मे मनोज जी मोतिहारी बिहार मे रह रहल बानी ।

के पूछलस।

भीतर माई आपन कवनो कार करत रहली। ओकर तेज आवाज सुनली ते कहली-"अब दे भी दे ओके। ऊ बिना लिहले माने वाला नइखे।"

"तहनिये के ढेर दुलार से एकर माथा सिक्का प चढ़ि गइल बा।" बाबूजी कहलन-"इ जे नीमन बाउर मांगी, ऊ बस दे देहे के बा।"

"लइका बा जी...।" दियरी के बाती बनावत माई कहली-"लइकई में सभे तनी-मनी जिद करबे करेला।"

माई के बात सुनके बाबूजी मौन हो गइलें। मोहन के बात मान लिहल गइल। ओकरा आगे चुटपुटिया फटाका, चकरी आ छुरछुरी के पाकिट धरा गइल।

"हमके राकेटो चाहीं। बम भी चाहीं।" ऊ जइसे फरमाइस ना बलुक धमाका कइलें।

बाबूजी सुन के अचकचा गइलें। ओके तेज नजर से घूरत कहलें-"इ का कहत बाड़ऽ तूँ?"

"हमके तेज आवाज वाला पड़कौना चाहीं।" मोहन मचल उठलें-"जइसन परसादी आ पिरितिया के इहां आइल हवे।"

बाबूजी ओके समझवलें-"तेज आवाज वाला पड़कौना कवनो नीमन चीझू ना ह बेटा। तू अभी छोट हव। तहरा के अइसन चीझू से दूरे रहे के चाहीं। ओह सब से खतरा हो जाला।"

"ना, हमके ऊहे चाहीं।" मोहन जिद ठान दिहलें।

बाबूजी के एकाएक गोस्सा बर गइल। रिसिया के कहलें-"ज्यादे जिद करब त अबे दू चांटी घींच के मारेब। बित्ता भर के लइका नइखन आ गज भर के फरमाइसे बा।"

मोहन धरती पर लोटा गइलें। घिरनी लेखा नाचे लगलें। बुझाइल जइसे चकरी में कवनो आगि धरा दिहले होखे, ओही लेखा चारू ओर छितरा के घूमे लगलें।

ओकर ताव देख के माई के एक हाली फेनू से आगे आये के पड़ल। ऊ कहली-"काहे लइका के परब के दिने रोआवऽ तानी जा? सभे केहू त दिवाली में गुड़कुन पड़ाका छोड़बे करेला। एगो ला देहब एहू खतिरा...।"

बाबूजी कुछ कहत-कहत रुक गइलें। माई के कवनो बात ऊ कबो टारत ना रहलें। मोहन दू गो लइकी के बाद जनमल रहलें एह से ऊ माई के विशेष दुलरूआ रहलें।

सबसे बड़ लइकी बारह साल के रहली। ओकर नावं चंद्रमा रहे। माई के संगे कार में हाथ बटावत ऊ आपन सुझाव दिहली-"बाबूजी, अइसन करीं, एक पाकिट मुर्गा छाप नागिन फटाका किन दीं। ऊ आवाज भी करेला आ एगो पाकिट में ढेर रहबो करेला।"

"हमके उहे चाहीं।" पता ना मोहन के का बुझाइल कि ऊ बड़ा शराफत से मान गइलें। बाबूजी के भी आश्चर्य भइल। मोहन के मांग पूरा भइल आ सांझी के दू पाकिट मुर्गा छाप नागिन फटाका किना के घरे आ गइल।

मोहन खुश हो गइलें। ऊ ओके फोड़े खातिर मचले लगलें। उनके मन बहलावे खातिर चुटपुटिया फटाका दे दिहल गइल। ओके पक्का पे रख के पथल मारला पे "पड़ाक" दे आवाज करे। घंटा भर में मोहन सगरी चुटपुटिया फोड़ के खतम कर दिहलें।

जब थोड़ा अन्हेर भइल त घरे-घरे दिया बाती जरे लागल। चारो ओर दियरी टिमटिमाये लागल। रह-रह के पड़ाका के आवाज गूंजत रहे।

"दिदिया, हमहूं पड़ाका छोड़ब।" मोहन कहलें।

"आजू छोटकी दिवाली हा" बड़ बहिन चंद्रमा ओह के फुसलावे के कोशिश कइली-"तू आपन सगरी चुटपुटिया खतम क दिहले बाड़। अब हमनी के काल पड़ाका छोड़ल जाई। ना त आजुए सभे ओरा जाई, त काल काथी छोड़बऽ?"

"ना, हमके आजुए चाहीं।" ऊ फेरू से ठान दिहलें।

"सुन्दरमा, दू गो छुरछुरी में से निकाल के ले आव।" चंद्रमा बहिन से कहली।

सुन्दरमा धउर के भीतर गइली आ दू गो छुरछुरी निकाल के ले अइली।

"हई देखऽ...!" चंद्रमा दियरी से एगो छुरछुरी जरा के मोहन के दिहली-"हई ला! देखऽ, केतना नीमन से जरता....।"

सुर्रर्र.......सुर्रर्र....... के आवाज के साथ छुरछुरी जरे लागल। ओह में से रंगबिरंगा लुत्ती निकल के चारो ओर गोल-गोल छिटकत रहे। मोहन ओके आपन हाथ में ले के घुमाये लगलें।

"एऽऽ......एऽऽ......!" ऊ चहकें लगलें। सुन्दरमा उछल-उछल के ताली बजाए लगली। दूनू छुरछुरी जर के खतम हो गइल त मोहन फेरू कहलें-"दिदिया, अब जरा एगो चकरी त जराव।"

"तू ना मनबऽ ! बुझाता आपन सारा पड़कौना आजुए खतम कर देबऽ !" ऊ बहिन के कह के एगो चकरी मंगवली आ ओह के जरवरी। चकरी गोल-गोल आगी के लुत्ती छोड़त घूमे लागल।

"माजा आ गइल। माजा आ गइल।" मोहन आ सुन्दरमा दूनो ताली बजाये लगले। चकरी जर के बुता गइल त फेनु आगे फरमाइस भइल-"अब पड़कौना में से भड़कावेके।"

"आजु ना...।" चंद्रमा मना करत कहली-"ओके काल खातिर रहे द। काल बड़की दिवाली हा।"

"आज बस दू ठो।" मोहन जिद करे लगलें।

"चनरमा बेटी, जरा करूआ तेल लेके हियां आवऽ ता।" ओही बेरा भीतर से माई आवाज दिहली-"इइ दियरी सब में तेल ढारऽ।"

चंद्रमा उहां से चल गइली।

भाई फेनु जिद कइलें त सुन्दरमा भीतर से जा के दू गो पड़ाका ले अइली। दूनू भाई-बहिन मिल के ओके पड़कावे के कोशिश करे लगलें।

अचानक एगो तेज धमाका भइल।

"अरे माईऽऽ रेऽऽऽऽ....।" मोहन चिचिअइले। पड़ाका उनकर हाथ के लगे फाट गइल रहे। ऊ भाग ना पाइल रहलें।

"का भइल ?" माई भीतर से पूछली।

www.bhojpurisahityangan.com

"मोहना के हाथ जरि गइला।" सुन्दरमा चिलइली।

"अरे माई रेऽ ! अरे बाप रेऽ !" मोहन गला फाड़ के चिलात रहे-"बाप हो बाप !" चिला-चिला के ऊ आसमान सिर पर उठा लेहलस।

माई भीतर से हड़बड़ा के अइली। मोहन के गोदी में उठा के पूछली-"का भइल बिटवा? काहें चिलात बाड़ऽ ?"

चंद्रमा बहिन से पूछली-"का रे सुनरी ? तू केने रहली ? के तरे भइल ?"

सुंदरमा रोंआसा होके कहली-"ई हमार हाथ से पड़कौना ले के अपने आगि धरावत रहे। हम भागे के कहनी तब ले...।"

"तहरा के पड़कौना लाये के के कहले रहे? हम मना कइले रही कि ना ?"

"ऊ मानते ना रहे...।"

तब ले बाबूजी भी उहां आ गइलें। पूछलें-"का भइल ह ?"

मोहन माई के गोदी में छिलमिलात रहलें। चंद्रमा बाबूजी से कहली-"बुझाता एकर हाथ में पड़कौना भड़कल ह...।"

मोहन के दूनू हाथ देखल गइला। गनीमत रहे कि पड़ाका साधारण रहे जेकर तनिका सा छिटा पड़ल रहे। ऊ डर के मारे हदासे चिलात रहलें। नुकसान के कवनो बात ना रहे।

बाबूजी सबके डांटे लगलें-"एही से हम लइका लोगन के ई कुल्ही पड़ाका सब ना छोड़े के देहेनी। बाकि केहू हमार बात सुनी तब न ?"

मोहन जोर-जोर से रोअत रहलें। बाबूजी ओके अपना गोदी में ले के अंगुरी आ कलाई के आसपास बोरलीन लगवलें आ ऊपर से एगो पट्टी बांध दिहलें। ओकर रोआई कुछ कम भइला। बाकिर अभियो सिसकत रहलें।

"अउरी पड़कौना भड़कइब ?" बाबूजी पूछलन।

"दिदिया हमरे हाथे में पड़कौना भड़का दिहली हा।" ऊ सारा दोष बहिन के ऊपर मढ़ दिहलस।

"ई झूठ बोलता ।" सुन्दरमा कहली-"ई हमार हाथ से छिन के पड़कौना अपने भड़कावत रहे।"

"चलऽ, अब काल के त छुट्टी हो गइला।" बाबूजी कहलें।

अगिला दिन दिवाली मनावल गइल। लक्ष्मी-गणेश के पूजा भइल। लड्डू-बताशा बंटाइल। सभे लोग परसादी खाइल। मोहल्ला में लइका लोग पड़ाका छोड़त रहलें। मोहन के हाथ में पट्टी बंधाइल रहे। ऊ एको हाली पड़ाका के नावं ना लिहले रहलें।

तबे एगो राकेट आसमान में उड़त गइल आ जोर-जोर से पड़पड़ाये लागल।

मोहन के नजर ऊपर गइल। ओह घरी करिया आसमान जइसे कइ गो रंग से नहा गइल रहे। चारो ओर सतरंगी छटा बिखरल रहे।

बाबूजी पूछलें-"तहरो के राकेट छोड़े के मन करता ?"

"ना बाउजी !"

"बम फोड़े के ?"

"ना बाउजी !"

"अउरी पड़कौना पड़कइब ?"

"ना बाउजी !"

"हमार बात मानल करबऽ ?"

"हाँ बाउजी !"

बाबूजी के होंठ पर एगो मुस्कान उभर आइला। ऊ ओकर पीठ थपथपा के कहले-"घबरा मत बेटा। तहरा के कुछु ना भइल हा। बस आगे से आपन मनमानी करल छोड़ द आ बड़ लोगन के बात मानल कर!"

मोहन आपन बाबूजी के गला से जोर से चिपटल रहलें।

चित्र - अमित मिश्र

बदलाव के पुरबिया बयार

देवेन्द्र नाथ तिवारी

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 'आखर' आ 'आर्टवाला लोग' के संयुक्त तत्वाधान में 'पुरबिया तान' के ब्यार इंडिया हैबिटेट सेंटर में अपना लय में बहल । पुरबी धुन पऽ सजल आ राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मंचन पऽ पुरबिया तान छेड़े वाली चंदन तिवारी के गायकी श्रोता लोगिन के मन पऽ आपन छाप छोड़लस । बतौर बानगी रउआ कार्यक्रम में मौजूद श्रोता लोगिन के ट्वीटर आ फेसबुक वाल के देख सकेनी । वइसे पत्रकारिता के वसूल इहे कहे ला कबो अपना बारे में ना लिखे के चांही । एह लिहाज से इ रिपोर्ट निरपेक्ष नइखे कहल जा सकत बाकि यदि कुछ निमन होत बा तऽ ओकर साथे खड़ा होके के हिम्मत तऽ होखइहीं के चांही । अइसन समय में जब भोजपुरी के संस्कृति के नाम पऽ खाली अपसंस्कृति आ कुसंस्कृति के आँधी सिनेमा आ संगीत के माध्यम से बहावल जात होखे ओइसना में बदलाव के 'पुरबिया ब्यार' बह गइल सुखद बा । ई 'पुरबिया ब्यार' करीब 100 शहरन में बहल बा । एही सिलसिला में दिल्ली में रहे वाला प्रबुद्ध भोजपुरिया आ गैर भोजपुरिया श्रोता लोगिन के पुरबिया तान से परिचय भइल । दिल्ली में भी पुरबिया ब्यार बहऽल आ जम के बहऽल । युवा प्रकाशक अजय आनंद जी के टिप्पणी तऽ एही ओर इशारा करत बा- चन्दन के गीतन के सुन के पहिला बार अइसन अनुभव भइल हऽ कि असल में भोजपुरी गायन का भोजपुरी के बाहर के समाज में उचित चित्रण ही नइखे भइल । हिन्दी में ब्रजभाषा के बाद उपासना-पद्धति से संबंधित सर्वाधिक गायन क्षमता संभवतः भोजपुरी में ही बा । चन्दन के गायकी के विस्तार प्रारूपीय विविधता से परे बा । गायकी के एह दायरा में निर्गुण से लिहले छठ गीतन तक के समेट लिहल चंदन रेंज के बारे में खुद बतावत बा । अइसन प्रयास भोजपुरी गायन के सड़क के अश्लीलता से उठा के ईश्वरोपलब्धि के उज्जवल मार्ग पऽ आगे बढ़ावे में पूर्णत: सक्षम बा ।' उहें एह आयोजन में मौजूद सुप्रसिद्ध पेंटर आ कैनवास पऽ 'छठ' आ लोक के उतारे वाली बंदना दूबे के कहनाम बा- ' चंदन के गवनई हमरा के गाँवे ले के चल गइल, शहर के एह दम घोंटू हवा में हम आपन गाँव के सोन्हापन के भूला गइल रहनी । लागते नइखे हम दिल्ली में बानी, हमके आपन गाँव के अंगना इयाद आवत बा, अइसन लागत बा 'गंगा माई से मटिया मँगा के हम आपन चौका लीपत बानी... ।'

एह 'स्वर गंगा' में डूबकी लगावे वाला ज्यादातर श्रोता पुरबिया युवा रहलन । इ युवा अपना पेशेवर व्यस्तता के बादो 'चंदन' के सुने पहुँचल रहलन । अइसने एगो पेशेवर युवा राहुल कुमार सिंह जी के कहनाम बा- 'माइंडब्लोइंग, हम भोजपुरी के एह निठाह ठाट से अपरिचित रहनी हऽ । चंदन, अपना गवनई का माध्यम से भोजपुरिया मिजाज से हमके परिचित करवली हऽ । जरूरत बा अइसन आयोजन के अउर विस्तार देवे के ताकि भोजपुरी खाति जवन भ्रम लोग के भीतर बइठ गइल बा उ टूट जावऽ । भोजपुरी के मतलब खालि लॉलीपॉप ना होखेला... अँगुरी में डँसले बिया नगिनिया भी होखेला ।' लोक से जुड़ल कवनो आयोजन में भाषाई दीवार बाधा ना बने । एह कार्यक्रम में कई भाषाई समुदाय के लोग मौजूद रहे । पचरा धुन पऽ कई गो विदेशी श्रोता झूमत देखल गइलें । कार्यक्रम में शुरू से आखिर तक मौजूद रहलऽ प्रवक्ता डॉट काम के संपादक संजीव सिन्हा जी के कमेंट एह बावत महत्त्वपूर्ण बा । उहाँ के अपना फेसबुक वॉल पऽ लिखले बानी - ' हम, लोकगीत सूनेनी तऽ मन-मयूर नाचे लागेला । मन के ताकत

www.bhojpurisahityangan.com

मिलेला ।' लोकगीत तऽ स्वभाव से उत्सवधर्मी होखेला । तबे तऽ इहाँ वियोग पऽ विलाप नइखे ओकरा में मुखरता बा- 'सखी हो प्रेम नगरिया हमरो छुटल जात बा हो...' लोक कबो काम- क्रोध आ मद्-मोह के माया जाल में ना फँसे । ऊ तऽ उनमुक्त रहे के चाहेला । अइसने जागरूक मन तबे तऽ चेतावत बा-

इक बात मोरी सजनी गठिया लीं चुनरिया में
बिन भाव के बिक जइबू, माया के नगरिया में

एह आयोजन में बड़हन संख्या में मीडिया कर्मी लोग भी मौजूद रहलें । चर्चित पत्रकार आ हेल्थ एक्टिविस्ट आशुतोष कुमार सिंह जी एह आयोजन के जिक्र अपना एगो फेसबुक पोस्ट पऽ कइले बानी । ऊँहा के लिखत बानी- 'भोजपुरी के बढ़त अलोकप्रियता के ग्राफ के बीच में आजु चंदन तिवारी के गायकी जवन रंग बिखले बिया ओकर जेतना प्रशंसा कइल जावऽ उ कम बा । जबसे हम होश सम्हरे बानी, इ पहिला मौका बा जब एतना बेहतरीन कार्यक्रम सुने के मिलल । जवना विविधता आ मधुरता के साथे भोजपुरिया थाति के चंदन परोसले बाड़ी ऊ काबिलेतारीफ बा ।' उहें वरिष्ठ स्तंभकार आ न्यू मीडिया एक्टिविस्ट शिवानंद द्विवेदी 'सहर' जी अपना वॉल पऽ लिखले बानी- "अगर रउआ पुरबिया तान के एह कार्यक्रम के मिस कर दिहले बानी तऽ समझीं रउआ गाँव के मिस कइ दिहनीं । आज चंदन तिवारी अपना लाजवाब गायकी का माध्यम से 'पचरा', 'सोहर', 'कजरी', 'निर्गुण' आ 'पूरबी' गीतन में गाँव के उतरले बाड़ी ।"लोकगीत कवनो संस्कृति के सबसे रसगर, भावगर प्रतीक होखेला । दिल्ली जइसन महानगरीय शहर के संस्कृति के चकाचौंध में आपन सांस्कृतिक मूल्यन के बिला जाए के खतरा आ दबाव हरदम बनल रहेला । अइसना में लोग, 'हाई कल्चर' के ओर स्वाभवत: उन्मुख होखेला । 'पछुआ' संक्रमण के एह माहौल में अपना संस्कृति के ओर फिर से लौट जाए के आग्रह जइसन रहल 'पुरबिया तान के दिल्ली वाला सफर । एही संदर्भ में भोजपुरी समाज, दिल्ली के अध्यक्ष अजित दूबे अपना वॉल पऽ लिखत बानी - चंदन तिवारी के प्रस्तुति बेहद यादगार रहल । चंदन के गीत, एम्पिथिएटर में मौजूद बौधिक युवा श्रोता लोगिन का दिल पऽ आपन छाप छोड़लस, ऊ चंदन के गवनई से जुड़ले आ फिर झूमे लगलें ।' इ बदलाव के कहानी तऽ कहते बा । एह के समझे के जरूरत बा । दिल्ली के सम्मानित मंचन पऽ भोजपुरी के दखल बहुत कम रहल बा ।

पिछला कुछ सालन से भोजपुरी के पक्ष में माहौल जरूर बनत बा आ भोजपुरी के उपस्थिति दर्ज भी हो रहल बा । अब राजधानी में भोजपुरी नाटक के प्रदर्शन लगातार हो रहल बा, भोजपुरी लोककला, लोकनृत्य के कार्यक्रम धीरे-धीरे आयोजित हो रहल बा । इंडिया हैबिटेट सेंटर का मंच पर दू साल बाद भोजपुरी के झमकदार मौजूदगी दर्ज भइल । एकरा से पहिले एही मंच पऽ शारदा जी के प्रस्तुति भइल रहे । श्रोता समूह में मौजूद निरूपमा सिन्हा जी के कहनाम रहे- चंदन का रूप में भोजपुरी के दोसर शारदा सिन्हा मिल गइल बाड़ी । इ खुशी के बात बा ।' शायद इ संयोग होखे बाकि शारदा जी के पद्चिन्ह पऽ चंदन चले के कोशिश करत बाड़ी । महुआ से जुड़ल भोजपुरी गजलकार मनोज भावुक अपना फेसबुक पोस्ट पर लिखत बाड़े- 'पुरबिया तान में पूरब जिंदा बा, लोकराग के स्पर्श साचहूँ महसूस होत बा अउर कईगो गीतन के साथे प्रयोग कइला के बावजूद ओकर मौलिकता बरकरार बा ।' दरअसल 'रंग आ राग' के मिलन पऽ केंद्रीत इ आयोजन एगो प्रयोग रहल हऽ । वइसे 'पुरबिया तान' के और कार्यक्रम में स्वर आ रंग के संगम भइल बा आ ओकर रंग भी जमल बा, बाकि दिल्ली में भइल इ आयोजन अपना स्वरूप आ प्रस्तुति दूनों के आधार पऽ विशिष्ट रहल हऽ । एह आयोजन में मौजूद मनोज द्विवेदी जी के कहनाम रहे कि- रउआ (चंदन तिवारी) हमनी के पुरखन के लगावल बगिया के सींच रहल बानी । इ देख के हमके निमन लागत बा । आ रउआ पऽ हमनी के गुमान बा । उहें भोजपुरी आ हिंदी दूनों में समान अधिकार से लिखे वाला साहित्यकार सौरभ पाण्डेय जी के कहनाम बा, "चंदन, 'चंदन' हई । केहू से का तुलना? हम जतने सुननीं हाँ ओही में बबुई के गला के सुर आ अवाज पऽ मुग्ध बानीं ।" उहें सुधीर मिश्र जी कहत बानी- 'हम का कहीं शब्द नईखे मिलत जवना शब्द भोजपुरी के बेटी के बखान करीं । अगर सही मायना मे देखल जाए त आपके (आखर अउरी सुशील-मिनाक्षी जे) के प्रयास अतुलनीय बा । जहाँ तक बात गायकी के बा त ओहू मे राउर जोड़ा नईखे ।

मीनाक्षी जे कलाकृतियन के साथे चंदन के गवनई प्रयोगधर्मिता के प्रतीक बा । मीनाक्षी जे के कहनाम बा- 'हम सभे के जीवन में रंग भरे के चाहत बानी । एही सिलसिला में हमनी अपना 'हरी-भरी बुलेट से करीब 17 प्रदेशन के यात्रा कइले बानी स । एह यात्रा के क्रम में हमनी अइसन जगही भी गइनी स जहाँ से बाजार 20 किलोमीटर दूर बा आ ऊँहा के लोग रंग नइखे देखऽ ले ।' वइसे भी जीवन रंग आ राग के ही मिलन से तऽ बनल बा । भोजपुरी लोकसंस्कृति के आँचर एह मामला में बेहद समृद्ध बा । इहाँ हर ओर रंग बा, राग बा आ उत्सवधर्मिता बा । एह आयोजन में पुरबियातान के मॉडरेटर निराला जी सारगर्भित रूप में भोजपुरी लोकगीत के भाव व्याख्यायित कइनी । उहाँ के बड़ा सपाट लहजा में बाकि बड़ा गंभीर भाव व्यक्त कइनी –अगर रउआ बदलाव (चाहत) बानी कि भोजपुरी में अश्लीलता आ अप-संस्कृति के कुप्रभाव खत्म होखे तऽ एकरा खाति भोजपुरिया बधार से बेटी-बहिन लोग के गीत-संगीत आ सिनेमा के दुनिया में आपन उपस्थिति दर्ज करावे के होई । फेर भोजपुरी के तस्वीर बदली ।' भोजपुरी में 'विंध्यवासिनी देवी' जइसन लोग भइल बा जे अपना समय-समाज में भोजपुरी खाति बदलाव के स्वर बनल लोग । आज इ समय के माँग बा, भोजपुरी माई के दुलरूई बेटी कुल्ही के कंठ से 'लोकराग' आ 'पुरबिया तान' जइसन बदलाव के स्वर-गंगा खाँटी भोजपुरियापन से आ सदियन से जोगावल गइल लोक-संस्कार रूपी थाति का साथे बहे ।

www.bhojpurisahityangan.com

‘फोक’ के झोंप में भुलाइल लोक के तलाश (भाग-3)

‘हम डालम बिया , तू हरवा चलइह...

प्रमोद कुमार तिवारी

शारदा सिन्हा के गावल गीत ‘अपना सजनिया के जन बिसरइहऽ कबो कबो सपना में...’ के बीच में जब ‘हम डालब बीया, तू हरवा चलइह...’ वाला ई लाइन आवेले तऽ हमरा के गीत से बेसी गांव के खेत में काम करत मरद -मेहरारू इयाद आवे लागेले। ई गीत लोक के भरपूर छवि आंखी के सोझा उतार देले, जवना में बिरहिनी के दर्द, लोक के संस्कृति आ परिवार के वर्तमान हालात सब एक झटका में सोझा खाड़ हो जाला। पिछिला 15-20 साल में भोजपुरी सिनेमा आ संगीत के समझे के कोशिश में हमार ई समझ बनल बा कि ई लोग भोजपुरी भाषा के भलहीं उपयोग करत होखे आ ओकर कमाई खात होखे, बाकिर भोजपुरी संस्कृति से एह लोग के कवनो खास संबंध नइखे। कवनो भाषा के दू गो रूप होला, एगो व्यावहारिक रूप जवना से रोजमर्रा के छोट मोट काम चलावल जाला, जइसे रउआ जापान भा ब्राजील गइनीं त उहां के कुछ जरूरी शब्द रट लेनीं ताकि भूखे मरे से भा कहीं भुलाए से बच जाईं बाकिर भाषा के दूसरका रूप बहुत गहिराई के मांग करेला जवना के केहू 10-20 दिन में ना पकड़ सके। भाषा के एह रूप में ओह भाषा के सैकड़न-हजारन साल के संस्कृति बोलेले। हालिया सिनेमा आ कैसेट सब के जादातर गीत में से ई संस्कृति जवना के हम अक्सरहां ‘भोजपुरियत’ कहल पसंद करेलीं, ऊ गायब होत जा रहल बिया। खाली सइयां, बलमुआ, गोरिया लगा देहला से आ बा, बिया, जइसन, तइसन सहायक क्रिया जोड़ देला से भोजपुरियत ना आ जाई।

आखर में प्रकाशित पिछिला दू गो लेख से लोक के समझे खातिर कुछ सूत्र पकड़े के कोशिश कर रहल बानीं, पिछिला लेख सब में सामूहिकता, अहं से मुक्ति, प्रकृति आदि के चर्चा हो चुकल बा एह श्रृंखला में आज लोक के एगो महत्वपूर्ण अंग श्रम पऽ बात कइल जाव।

जांगर के सुख

अगर लोक के आ खास तौर से भोजपुरीयत के समझे के कवनो आसान रस्ता हमरा के लउकत बा त ऊ ह श्रम अउर मेहनत। श्रम खाली काम कइल ना हऽ, ई पूरा के पूरा जीवन दर्शन हवे। रोजमर्रा के जरूरत पूरा करे से कहीं जादा ई जीवन जीये के एगो ढंग हऽ। श्रम के आधार पऽ पूरा दुनिया के दू हिस्सा में बांटल जा सकत बा, एगो हिस्सा के समाज ऊ हऽ जवन श्रम के आ श्रमिकन के सम्मान करेला, ओकरा के अपना गीत, संगीत, त्योहार, संस्कार से जोड़ेला आ श्रम के उत्सव के रूप दे देला। एगो दूसर समाज हऽ जवन श्रम के घृणा के नजर से देखेला आ श्रम करेवाला लोग के छोट आ पिछड़ा मानेला। एह समाज के पूरा कोशिश एह बात में लागल रहेला कि दूसरा के श्रम के कइसे हम उपयोग कऽ लीं। अइसन लोग मानवता विरोधी आ प्रकृति विरोधी लोग होला। दुनिया के जादातर संघर्ष एह मेहनत पऽ अधिकार खातिर भइल बा। ई एकदम नया चीज नइखे, बहुत पहिले (सामंतवाद के विकास के समय) से रहल बा। एही के आधार पऽ प्राचीन काल से पूरा दुनिया दू फांक में बंट जाले। एक ओर श्रम के सम्मान करेवाला समाज हऽ जवना के अंतर्गत लोक समाज, आदिवासी समाज आ प्रकृति के सम्मान देबेवाला पारंपरिक समाज आवेला। दूसरका ओर मेहनत करेवाला लोग (किसान, मजदूर, सैनिक आदि) के पसीना से अपना सुख के स्वीमिंग पुल तइयार करे वाला सामंती आ पूंजीवादी स्वभाव वाला समाज आवेला जवना के संख्या हमेशा कम होला बाकिर तमाम तरह के तिकड़म से ई लोग सत्ता में रहेले आ अपना खानपान आ संस्कृति के मुख्यधारा बतावत रहेले। असल में श्रम आ प्रकृति से जुड़ल समाज हमेशा विकसित समाज रहल बा बाकिर श्रमचोर समाज के लोग ताकत के बल पऽ अपना के विकसित आ अइसन मेहनतकश समाजवाला लोग के अशिक्षित आ पिछड़ा साबित करत रहेले। **भोजपुरिया समाज हमेशा श्रम के साथ खड़ा रहल बा, पिछिला कई सौ साल के इतिहास उठा लीं एह समाज के**

www.bhojpurisahityangan.com

सबसे बड़ पूंजी भोजपुरिया लोग के हाड़तोड़ मेहनत के रूप में लउकी। ऊ चाहे मारीशस, फीजी आ सूरीनाम के बंजर धरती कोड़ के सोना उगावेवाला पुरखा लोग होखे भा खाड़ी देश से ले के आस्ट्रेलिया तक में अपना जांगर के बल पऽ उहां के तस्वीर बदलेवाला नवहा लोग होखे। भोजपुरिया लोक में से श्रम निकाल दिहला के बाद भोजपुरियत खतम होखे लागेले। भोजपुरिया लोक के किस्सा, कहानी, गीत कहीं से उठा लीं ओकर संबंध काम आ मेहनत से जुड़ल मिल जाई। बात खाली जांता पिसे, रोपनी करे भा बियाह, गवना आदि के काम से जुड़ल गीत के नइखे। आम के मोजरइला से ले के महुआ बीने, पानी भरे, माटी कोड़े, घर लीपे, हर जोते तक के तमाम संदर्भ एह लोक में रचल बसल बा। प्रकृति के रूप बदलला के साथे काम के रंग बदल जाला, अनायासे नइखे कि छमासा, बारहमासा के भरपूर वर्णन भोजपुरिया साहित्य में देखे के मिलेला। गीतन में गोरकी से बेसी संवरकी आवेले। जब घाम में जम के काम कइल जाई आ प्रकृति के कंधा से कंधा मिला के जीवन के सफर तय कइल जाई तऽ रंग गोर ना रह पायी ऊ संवरा जाई। पूरा शिष्ट साहित्य गोराई के प्रतिमान से भरल बा, अइसन बुझाला कि सांवर आ करिया लोग पहिले धरती पऽ होते ना रहे। लोक के सौंदर्य शास्त्र अलग होला ऊ अपना माटी के रंग ना छोड़े, भोजपुरिया लोक के मरद- मेहरारू मेहनत आ प्रकृति के आंच में तप के निखार पावेले। पोढ़ आ गठल शरीर के साथ विपरीत परिस्थिति के झेले-सहे के जवन क्षमता भोजपुरिया लोक विकसित कइले बा, ऊ दुर्लभ बा। अभी हाले में हमरा मलकिन के उनुकर गुजराती सखी लोग 'कठकरेजी' जइसन शब्दावली से नवाजल हऽ। जिउतिया, तीज से ले के छठ तक में पूरा पूरा दिन बिना पानी पियले केहू रह सकेला, ई माने आ समझे में हमरा गुजराती भाई बहिन लोग के कठिनाई हो रहल बा। हम एकरा के खाली व्रत आ रिवाज ना मानेनीं, ई एगो जीवन दर्शन हऽ। श्रमिक के देह मजबूत होखे के चाहीं, ओकरा के विपरीत परिस्थिति से जूझे खातिर तइयार रहे के चाहीं। प्रसिद्ध कथाकार भोजपुरिया प्रेमचंद बहुत पहिले कहले रहले कि 'हमनी के अपना बच्चा सब के गमला के कोमल फूल ना बरगद के फेंड़ बनावे के चाहीं जवन आंधी, तूफान, घाम, बरसात सबकर डट के मुकाबला कर सके।'

ई सांच बा कि भोजपुरी लोक के श्रम से घनिष्ठ संबंध रहल बा बाकिर पिछिला कुछ समय से ई समाज एगो दुविधा में जी रहल बा, **व्यक्तिगत स्तर पऽ त ई खूब मेहनत करेला आ छात्र, कर्मचारी से ले के अधिकारी तक के रूप में जहां जाला उहां अपना श्रम के छाप छोड़ देबेला। बाकिर सामाजिक स्तर पऽ एकरा के स्वीकार करे में ओकरा के हेठी बुझाला। खास तौर से कम पइसा वाला काम के ई काम के बजाय हैसियत से जोड़ के देखे लागेला। एही से खेत में भा फैक्ट्री में काम कइला के बादो एकरा के ऊ स्वीकार करे से बांचत रहेला। एही के एगो परिणाम क्षेत्र से पलायन आ प्रवासन में लउकत बा। पंजाब भा मुंबई में अत्यंत खराब हालात में रह के मोटा काम कइल लोग स्वीकार करत बा बाकिर अपना इलाका में ना। कहीं एकरा पाछे ऊंच जात के होखला के अभिमान बा तऽ कहीं पहिले भा बाप-दादा के अमीर रहे के बोध। बहुत सारा देश आ राज्य के लोग के हम देखनीं बाकिर झूठा आ खोखला सम्मान के जइसन चाहत भोजपुरिया लोग में लउकल, मेहमान के अइला पऽ मंगनी के चाय के कप से ले के बेडशीट तक देखावे के जइसन लालसा एह समाज में मिलल, ओकर उदाहरण खोजल मुश्किल बा। असल में ई सामंती मानसिकता के लक्षण हऽ जवना पता ना कइसे भोजपुरी लोक में रच-बस गइल।** असल में श्रम के संबंध खाली जीवनशैली से ना हऽ ई जीवन दर्शन हऽ। काम कइल प्राकृतिक घटना ह, पेड़-पौधा से ले के चिंटी, चिरई, बाघ, हिरन तक सब केहू आपन आपन काम कर रहल बा। जे काम ना करी ओकरा के प्रकृति स्वीकार ना करी, कवनो ना कवनो रूप में अप्राकृतिक चीज के धरती माई नकार देबे ले। श्रम से कटल आदमी के ऊ मोटापा से ले के तमाम प्रकार के रोग दे के अपना से दूर करत जाले। पूंजीवादी समाज दूसरा के श्रम के उपयोग करेला आ अपना लाभ के मात्रा बढ़ावे खातिर ई गलत सीख देबेला कि जे मेहनत ना करे, हर काम नौकर से करावेला ऊ बड़ा सुखी आ बड़का बा। पूंजी, बाजार आ विज्ञान के गठजोड़ से हाल के समय में तमाम तरह के गैरजरूरी यंत्र के आविष्कार भइल बा, अब पंखा तक के रिमोट आवे लगल बा, बटन दबावे के भी जहमत रउआ मत उठाई बस पलरल रहीं आ दवा खात रहीं। दवा कंपनी आ गोबरछत्ता जइसन उग रहल प्राइवेट अस्पताल सब भी पूंजी आ बाजार के एह नेक्सस से मिल गइल बाड़े स। महंगा होटल जइसन सुविधासंपन्न एह अस्पतालन के मूल काम श्रम से वंचित समाज से पइसा बटोरल हऽ। जांगर चलवला पऽ भोजपुरिया साहित्य में खूब सारा मुहावरा बा, जहां

प्रमोद तिवारी

भभुआ बिहार के रहे वाला प्रमोद कुमार जी , केंद्रीय विश्वविद्यालय गांधीनगर , गुजरात मे असिस्टेंट प्रोफेसर बानी । ईंहा के भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य खातिर लगातार काम कर रहल बानी । पत्र पत्रिकन में प्रमोद जी के रचना आकर्षण के केंद्र होली स । भोजपुरी भाषा आ साहित्य के ईंहा के अपना लेखनी से बरिआर चोख धार देले बानी । एह घरी गांधीनगर गुजरात मे बानी ।

मेहनत करेवालन के खूब सराहल गइल बा उहें जंगरचोरन के सेंगरा लगावे से ले के कुकुर से मुंह चटवावे तक के उदाहरण दे के जम के गरियावल गइल बा। आज के समय में हमनी के लोक के भुलाइल जात बानीं जा आ ओकरा साथे लोक के जीवनशैली आ जीवन दर्शन के भी छोड़ले जात बानीं जा। समय के साथ हर चीज में बदलाव आवेला, जीवनशैली बदलेले बाकिर जीवन दर्शन हजारन साल के अनुभव के निचोड़ होखेला, दुखद बा कि भोजपुरिया समाज अपना एहू थाती के भुलाइल चलल जा रहल बा। ई सवाल अपना आप से पूछल जा सकत बा कि भोजपुरिया समाज के वर्तमान खराब हालात के एगो कारण अपना श्रम के संस्कृति से दूरी भी बा का? एगो विद्वान कहले रहले कि **'जंगरचोर (आलसी) एतना धीरे-धीरे यात्रा करे ले स कि जल्दिए गरीबी ओकरा के पाछे छोड़ के आगे निकल जाले।'**

चित्र -वंदना दुबे

www.bhojpurisahityangan.com

दू गो कविता

उधार के जिंदगी

नूरैन अंसारी

ना रोअले रोआत बा, ना हंसले हसात बा
मत पूछी बोझ जिनगी के, कईसे ढोआत बा
कर देहलस बेभरम महंगाई आदमी के,
उधार लेके जिनगी के गाडी खिंचात बा।

कबो बाढ़ आइल त कबो सुखाड़ ले गइल,
खेत त हर साल निमने बोआत बा
अब त मुंह फेर लेत बिया अपने मेहरारू,
पॉकेट में जइसे पईसा ओरात बा।

आजकल समझे ना केहू मजबूरी आदमी के,
कहत बा अच्छा बुरा जेकरा जवने सोहात बा
ना निमने में जश बा, ना बउरे में बरकत,
सरसों खाँ कोल्हू में आदमी पेरात बा।

नेत्रदान

चंद्रभूषण पाण्डेय

आंखन के जोड़ी
के जोड़े ना हऽ
कब उठी कब झुकी
पते ना चले
        जब झुकी त ओह पे
        रही लज्जत लदल
        जब उठी तऽ लागी
        ई दुनिया जले
उठाके झुकावल तऽ
अदा खलिसा हऽ
झुकाके उठावल
सजा बन जाले
        खुली जऽईहें तऽ
        लोगवा रोआवन चाहे
        बंद होते सभे के
        रोआवत चले
भर जाले जे अंखियां
सागर झूठ हऽ
सुख जाले तऽ
दुखवो सोहावन फले
        भर जिनिगी रहिया के
        रौशन त रखले रहीं
        जाते रौशन करीं बस
        अन्हरिया तले
सब दान कऽईलका
नश्वर रही ईहंवां पऽ
आंख दाने कऽईलका
तऽ अमर होले

(नेत्रदान निश्चित रूप से करीं)

www.bhojpurisahityangan.com

दू गो कविता

अझुराइल नेह

हृषिकेश चतुर्वेदी

हवा बनि के ख़ुशबू तोहर फैला दिहनी हम,
तनी सोचऽ कहाँ रहलऽ कहाँ पहुंचा दिहनी हम।
भले ही जरि के हमरा राख हो जाए के परि गईल,
तोहरा प्यार के ओह राख से चमकाइ दिहनी हम।
हमारा झूठ के भी सांच मानि के खुस बाड़े ऊ,
बहुत हैरान बानी, वाह ! का समुझाई दिहनी हम।
केहू के दर्द के आवाज़ सुनि के खूब रोवले ऊ,
अचक्के में अपने एहसास के जगाइ दिहनी हम।
सझुरा ना पवनी जब अझुराइल ऊन के धागा,
"ऋषि" बातन में बातन के फेरु अझुराई दिहनी हम।

इमेज के चक्कर

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

दूसरा के दुख न बुझाला,
गुड़ से नीमन शक्कर बा।
सभ इमेज के चक्कर बा॥
गुजर गइला पे नीमन लागे
ई इहवा के नीति बाटे ।
कोस कोस के थाकल जबले
मुह चटला के रीति बाटे॥
फाटल लुगरी मसकत जाला
लोगवा कहेलन फक्कड़ बा॥ सभ ....
कुहूंकत कंहरत जीये लगलन
कहिन नियति के लेखा ह।
ठिठुर ठिठुर के जाड़ बीतइहै
बनल हाथ के रेखा ह।
घर दुवरा बा कुल्हि फुटपाथवे
बनत लाल बुझक्कड़ बा॥ सभ ....
घरे घिन्नाने लईकन से
झुग्गी मे उठावें गोदी।
पनीर से नीचे पचत नईखे
नुक्कड़ पे खइलन बोदी।
सभका भईया बबुआ बोलल
चुनाव जीते के मंतर बा॥ सभ .....

www.bhojpurisahityangan.com

बिक्रमपुर के बेटी

अनिल प्रसाद

ठगईया के बाबूजी के बगल में, मचीया पर बइठल
नकली दांत के बुरूस से माँजत-धोवत
कुल्ला करत चारू ओर नजर फेरत
अपना छड़ी के अंकुसी से
पीके एने ओने लावारिस फेंकल
चाय के कपवन के कान पकड़ के
खींचत धोवत पोंछत सरिहारत
एके दर पर बइठल, बाकिर बाज ना अइहें !
ओकरा खातिर अपना बबुआ से बोली सुनत
बाकिर बाज ना अइहें लिट्टी पकावत घरी
अपना तरहत्थी पर आगी के उठवला से !

ईया जी सबुरी हईं, सुगन्धिया के माई कही,
ओकरा के देखते धीरे-धीरे छड़ी टेकत
अंगना में आके खटिया पर बइठीहें
बात करिहें सुगन्धिया के माई से:
टोला-महल्ला, कुटनी-पीसनी, जांति-भंसार, ,
गोतिया-दयाद, गाँव-जवार, धर-संसार,
मूअल-जीअल, नेवता-हंकार के होई बतकही !
देवार के और मुंह क के, मुंह ढँक के खईहें,
नाती-पोता से भी लजईहें, ठगईया के माई,
मुहाबरा के पिटारी, बात-बात पर दिहें परतोख,
बराबर कहिहें: माई के जिउआ दाही हS धीआ पूत कसाई हS
सुगन्धिया के माई कही, ठीके कहतानी ईया जी,
भाई उनकर जबले जीअले, बहिन के इयाद कइले
बहंगी पर ले अइले बंधुआ दही आ गछुलिया आम

जुटान होला, बइठला पर लोग कैंडी क्रश खेले ला लोग
चाहे मोबाइल फ़ोन में मुड़ी गड़वले रही लोग
केकरा फुरसत बा बूढ़-पुरनिया के बारे में बात करेके
आ लोग सुनी तS का कही, अनपढ़, गवांर आ बोका
आ हंसी, अभी ले खेलते बाड़S ओका बोका तीन तडोका
आ दुनिया कहाँ से कहवाँ फाँन के चल गइल !
हइ देखs 'व्हात्सप्प' पर मेसेज आइल बा,
अगर दस आदमी के दू मिनट के अन्दर ना भेजलS
ई फोटो हनुमान जी के तS तहरा कुछ अनिष्ट होई !

स्कूल में जवना घरी हमनी पढ़त रहनी ओ घरी
अइसन कुल्ही लिखल पोस्टकार्ड आवे,
ईया ओकनी के फाड़ के फेंकवा देस !
उ छड़ी टेक–टेक के चलत रहली आगे-आगे
हमनी के टेक्नोलॉजी के बैसाखी टेक के चलतानी पीछे-पीछे |
ईया के पीछे ठगईया के बाबूजी रहले आ आगे उनकर बबुआ
आ अब तS: ना आगे नाथ ना पीछे पगहा !

बस हाथ से कान तक, आ स्क्रीन पर उंगली
बात तS बहुत होता लेकिन बनत नइखे संवाद
जब भेंट होता धरती पर चाहे आभासी दुनिया में
बस होखे लागता वाद-विवाद, मौल में मेला लागता !

दसहरा के मेला लगला पर ईया के काम बढ़ जाई,
टूटल बाल्टी, फूटल बर्तन घर में ना राखेके
सब बदलाई, नया कीनाई;
परई, ढकनी, करछुल आ भुजंगी के भाव
मेला में जाके सुगन्धिया के माई पता लगाई
आके बताई, लौटत में बनावल भूंजा ले आई
बबुआ दुर्गा जी के पाठ में लागल रहिहें
ठगईया के बाबूजी शतरंज खेलत रहिहें पंडी जी के संगे
बाकिर ईया के मन मेले में रही, पुरानी कीला के
जमुना में पसरल जलकुम्हीं जइसन, पानी के उपरे
बर्तन के दूकानन पर, सुगन्धिया के माई के संगे
दसहरा के बाद चौका आ भंडार-घर में
सब चीज नया हो जाई, साफ सफाई होई
ना हल्ला ना गुल्ला, चुप-चाप जइसे
ठगईया के बाबूजी शतरंज खेलत में
अपने से बातियावत रहेले !

ईया के ख़ास मेला, दसहरा के मेला तS कबे टूट गइल,
अच्छा भइल मेला टूटे के पहिले ही उनकर साँस टूट गइल !
सुगन्धिया के माई दुखी होके कहेले,

अब ईया जी के केहू इयाद ना करेला !
ठगईया के बाबूजी के बगल में, मचीया पर बइठल
नकली दांत के बुरूस से माँजत-धोवत
कुल्ला करत चारू ओर नजर फेरत
अपना छड़ी के अंकुसी से
पीके एने ओने लावारिस फेंकल
चाय के कपवन के कान पकड़ के
खींचत धोवत पोंछत सरिहारत
एके दर पर बइठल, बाकिर बाज ना अइहें !
ओकरा खातिर अपना बबुआ से बोली सुनत
बाकिर बाज ना अइहें लिट्टी पकावत घरी
अपना तरहत्थी पर आगी के उठवला से !

ईया जी सबुरी हईं, सुगन्धिया के माई कही,
ओकरा के देखते धीरे-धीरे छड़ी टेकत
अंगना में आके खटिया पर बइठीहें
बात करिहें सुगन्धिया के माई से:
टोला-महल्ला, कुटनी-पीसनी, जांति-भंसार, ,
गोतिया-दयाद, गाँव-जवार, धर-संसार,
मूअल-जीअल, नेवता-हंकार के होई बतकही !

देवार के और मुंह क के, मुंह ढँक के खईहें,
नाती-पोता से भी लजईहें, ठगईया के माई,
मुहाबरा के पिटारी, बात-बात पर दिहें परतोख,
बराबर कहिहें: माई के जिउआ दाही हऽ धीआ पूत कसाई हऽ
सुगन्धिया के माई कही, ठीके कहतानी ईया जी,
भाई उनकर जबले जीअले, बहिन के इयाद कइले
बहंगी पर ले अइले बंधुआ दही आ गछुलिया आम
जुटान होला, बइठला पर लोग कैंडी क्रश खेले ला लोग
चाहे मोबाइल फ़ोन में मुड़ी गड़वले रही लोग
केकरा फुरसत बा बूढ़-पुरनिया के बारे में बात करेके
आ लोग सुनी तऽ का कही, अनपढ़, गवांर आ बोका
आ हंसी, अभी ले खेलते बाड़ऽ ओका बोका तीन तडोका
आ दुनिया कहाँ से कहवाँ फाँन के चल गइल !
हइ देखs 'व्हात्सप्प' पर मेसेज आइल बा,
अगर दस आदमी के दू मिनट के अन्दर ना भेजलऽ
ई फोटो हनुमान जी के तऽ तहरा कुछ अनिष्ट होई !
स्कूल में जवना घरी हमनी पढ़त रहनी ओ घरी
अइसन कुल्ही लिखल पोस्टकार्ड आवे,
ईया ओकनी के फाड़ के फेंकवा देस !
उ छड़ी टेक–टेक के चलत रहली आगे-आगे
हमनी के टेक्नोलॉजी के बैसाखी टेक के चलतानी पीछे-पीछे |
ईया के पीछे ठगईया के बाबूजी रहले आ आगे उनकर बबुआ
आ अब तऽ: ना आगे नाथ ना पीछे पगहा !

बस हाथ से कान तक, आ स्क्रीन पर उंगली
बात तऽ बहुत होता लेकिन बनत नइखे संवाद
जब भेंट होता धरती पर चाहे आभासी दुनिया में
बस होखे लागता वाद-विवाद, मौल में मेला लागता !

दसहरा के मेला लगला पर ईया के काम बढ़ जाई,
टूटल बाल्टी, फूटल बर्तन घर में ना राखेके
सब बदलाई, नया कीनाई;
परई, ढकनी, करछुल आ भुजंगी के भाव
मेला में जाके सुगन्धिया के माई पता लगाईं
आके बताई, लौटत में बनावल भूंजा ले आई
बबुआ दुर्गा जी के पाठ में लागल रहिहें
ठगईया के बाबूजी शतरंज खेलत रहिहें पंडी जी के संगे
बाकिर ईया के मन मेले में रही, पुरानी कीला के
जमुना में पसरल जलकुम्हीं जइसन, पानी के उपरे
बर्तन के दूकानन पर, सुगन्धिया के माई के संगे
दसहरा के बाद चौका आ भंडार-घर में
सब चीज नया हो जाई, साफ सफाई होई
ना हल्ला ना गुल्ला, चुप-चाप जइसे
ठगईया के बाबूजी शतरंज खेलत में
अपने से बातियावत रहेले !

ईया के ख़ास मेला, दसहरा के मेला तऽ कबे टूट गइल,
अच्छा भइल मेला टूटे के पहिले ही उनकर साँस टूट गइल !
सुगन्धिया के माई दुखी होके कहेले,
अब ईया जी के केहू इयाद ना करेला !

अनिल प्रसाद

मूलतः हथुआ, बिहार के रहेवाला हयीं। अंग्रेजी साहित्य में शोध। साहित्य अकादमी खातिर यशपाल के 'झूठा सच' के कुछ अंशन के अंग्रेजी में अनुवाद। भारत, मिडिल ईस्ट, अमेरिका, चाइना, कनाडा अउरी ऑस्ट्रिया में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनन में पेपर प्रेजेंटेशन अउरी कविता पाठ।अंग्रेजी, हिंदी अउरी भोजपुरी में लेखन। यमन, लीबिया, पटना अउरी मुंबई के विश्वविद्यालयन में अध्यापन। सऊदी अरेबिया में अंग्रेजी भाषा आ साहित्य के प्रोफेसर बानी।

भारत में ऑटोमोटिव इंडस्ट्री के भविष्य

गौरव सिंह

भारत ऑटोमोटिव इंडस्ट्री के एगो बड़हन मार्केट ह। भारत सबसे तेजी से पूरा विश्व में उभरे वाला मार्केट रहे लेकिन आज काल कुछ डिक्लाइन भईल बा। पूरा विश्व में प्रोडक्शन के नजरिया से भारत के सातवाँ स्थान बा आ वॉल्यूम के नजरिया से चौथा स्थान बा। भारत साल में औसतन 17.5 मिलियन गाड़ियन के उत्पादन करेला। सबसे बड बात इ बा कि भारत के इकॉनमी के एगो बड़हन हिस्सा एह ऑटोमोटिव सेक्टर से जुडल बा। मैन्युफैक्चरिंग के जीडीपी में हिस्सेदारी लगभग 14% बा। ओह में अकेले ऑटोमोटिव के 7% के हिस्सेदारी बा। हमनी के खाली 3.9% के आस पास जीडीपी के हिस्सा शिक्षा प आ 0.85% हिस्सा रिसर्च प खर्च करीला जा। एह बात से अंदाजा लगावल जा सकेला कि कतना बड हिस्सेदारी ऑटोमोटिव के रहल बा। भारतीय अर्थव्यवस्था के नजरिया के ऑटोमोटिव के बड़हन योगदान बा। एही बिषय प देखल जाई कि एकर एतिहासिक पहलु का रहल बा आजादी के बाद से, लोग भारत में निवेश काहे करी, भारत के लगे एह क्षेत्र में कवन कवन चुनौती सामने बा, सरकारी पहलु का बा, एकर प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था प कईसे परी आदि।

भारत में ऑटोमोटिव इंडस्ट्रीज के अतीत

वर्तमान के स्तिथि और चुनौती के बारे में जाने से पाहिले हमनी के एकर ऐतिहासिक पहलु के थोडा संज्ञान में ले लेवल जाव। 1897 में पहिला कार भारत के सड़क प आपन शुरुआत कईलस। 1930 आवत आवत इम्पोर्ट होखे शुरू भईल उहो बहूत कम मात्रा में। मूल रूप से 1940 के आस पास ऑटोमोटिव इंडस्ट्रीज के शुरुआत भारत में भईल। पाहिले हिंदुस्तान कंपनी आइल 1942 में, फिर प्रीमियर 1944 आ फिर महिंद्रा 1945 में आपन शुरुआत कईलस।

गौरव सिंह

रोहतास, बिहार के रहे वाला गौरव जी इंजीन्यरिंग के छात्र हईं। भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी। ए घरी गौरव जी VIT यूनिवर्सिटी वेल्लूर , तमिलनाडु से पढ़ाई कर रहल बानी।

www.bhojpurisahityangan.com

जब 1947 में भारत आजाद भईल तब सरकार अउरी प्राइवेट सेक्टर के लोग गाडी के कॉम्पोनेन्ट बनावे खातिर मिलकर के प्रयास कईलस ताकी ओकरा से ऑटोमोटिव इंडस्ट्रीज के मदद कईल जा सके। 1950 से 1960 तक राष्ट्रीयकरण अउरी लाइसेंस राज के चलते काफी प्रभावित रहल। 1970 में जब आयात प्रक्रिया प बैन लगावल गईल तब भारत के ऑटोमोटिव इंडस्ट्रीज काफी फले-फुले के मौका मिलल। ट्रेक्टर, स्कूटर जईसन चीज त बने लागल लेकिन कार तबो लक्ज़री लेखा ही रहे। फिर अस्सी के मध्य में राजीव गाँधी जी दिल्ली में ऑटो एक्सपो के जरिए भारत के ऑटोमोटिव इंडस्ट्रीज के प्रोत्साहित करे के कोशिश जरूर कईले रहले।

नौ दिन तक चलल ओह ऑटो एक्सपो में भारत द्वारा उपयोग कईल नया नया तकनीक, रिसर्च और विकास से भारत के लोग के अवगत करावल चहले अउरी लोगन के एकरा प्रति उत्तेजित करे के कोशिश कईले। लेकिन जईसे नब्बे के दशक में आर्थिक संकट आइल ओह से काफी प्रभावित रहल। नया नया वित्तमंत्री बनले मनमोहन सिंह नर्सिम्भा राव के नेतृत्व में, अउरी उदारीकरण के आवाहन कईले। परिणामस्वरुप बहुराष्ट्रीय कंपनी जईसे जापान के सुजुकी आ टोयटा अउरी साउथ कोरिया के हुनडाई के भारत में निवेश करे खातिर स्वागत कईल गईल। 1991 से शुरू भईल बाहर के कंपनी के हिस्सेदारी जवना में 'जॉइंट वेंचर', 'प्रोडक्शन शेयरिंग', 'ट्रांसप्लांट', 'क्रॉस बोर्डेर मर्जर' जईसन प्रक्रिया के काफी बल मिलल। सन 2000 तक भारत के मार्केट में खाली 12 गो बड ऑटोमोटिव कंपनी रहीसन जवना में ज्यादातर कंपनी में बाहरी कंपनी के प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष रूप से हिस्सेदारी रहे। लेकिन एगो आश्चर्य के बात बता दी कि उदारीकरण के बादो ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में, अस्सी के दशक के अपेक्षाकृत नब्बे के दशक में निर्यात में गिरावट भईल रहे। ओकरा पीछे कारन इ रहे कि बहुराष्ट्रीय कंपनी आउटमोडेट प्लेटफ़ॉर्म प्रदान कईलस भारत के जवना चलते वैश्विक कम्पटीशन में बढ़िया से भाग ना ले पवलस।

भारत में निवेश करे के कारण

भारत में निवेश के सबसे पहिला आ मुख्य कारण इ बा कि भारत के बाजार काफी स्टेबल बा। जवना रफ़्तार से पापुलेशन बढ़ रहल बा ओह रफ़्तार से लोग के जरूरत भी ओही मुताबिक बढ़ी। एह से निवेशक लोग भारत दने रुख करे के कोशिश करीहे। बढ़त घरेलु खपत एकर प्रमाण बा। चुकी चाइना, ग्रीस आ तनी मनी अमेरिका के इकॉनमी प्रभावित होखला के वजह से अउरी पश्चिमी एशियाइ देशन में असंतुलित सुरक्षा के नजरिए से भारत से बाजार काफी बेहतर बा। आज भारत वॉल्यूम के नजरिया से भारत ऑटोमोटिव मार्केट के विश्व के चौथा बड देश बा। चुकी भारत एगो कृषि प्रधान देश रहल बा एह से अहिजा खेती से सम्बंधित तकनिकी सहायता जईसे ट्रेक्टर आदि के बरियार मांग रहल बा। पिछला सात साल में तवो व्हीलर के उत्पादन में वार्षिक 8.5 मिलियन से 15.9 मिलियन यूनिट तक पहुचल बा। इ एह बात के प्रतिक बा कि भारत में ऑटोमोटिव इंडस्ट्रीज के भविष्य काफी सुनहरा बा।

भारत के निति पाहिले के अपेक्षाकृत काफी उदार बा जवन कि निवेशक के भारत दने आकर्षित करेला। अगर एक्साइज देखल जाव त काफी कम बा, ऑटोमोटिव खातिर मिशन प्लान काफी अच्छा बा। इ सब चीज एगो निवेशक के भारत के तरफ आकर्षित करी। भारत के तरफ से अच्छा प्लेटफार्म दिहल जा रहल बा एगो मैन्युफैक्चरिंग हब बनावे खातिर। हमनी के प्रधानमंत्री जी भी कई तरह के सुंदर इनिशिएटिव जईसे 'मेक इन इंडिया' अउरी 'गेट अप इंडिया' आदि के जरिए सभे के स्वागत करे के कोशिश कर रहल बानी। भारत के मार्केट के दूसरा बड़ा खासियत बा कि कही एक जगह केन्द्रित नइखे। भारत के हर क्षेत्र में एकर प्रभाव बा। दक्षिण क्षेत्र खासकर के चेन्नई आ बंगलौर 35% रेवेनुए शेयर रखेला, अउरी भारत के लगभग 60% एक्सपोर्ट ओहिजा से होला। दूसरा क्षेत्र सेंट्रल रीजन बा जवना में महाराष्ट्र, पुणे बा, जवन 33% रेवेनुए के शेयर रखेला। उत्तरी रीजन 32% रेवेनुए रखेला जवना में हरियाणा के मानेसर अउरी गुडगाँव महत्वपूर्ण क्षेत्र बा। इहो एगो कारन हो सकेला निवेशक के आकर्षित करे खातिर। इ त हम मत्वपूर्ण जगह के नाम बतईनी ह ओईसे पश्चिम बंगाल भी अच्छा हब ह। भारतीय बाजार निवेशक लोग के विकल्प प्रदान करेला जवन शायद ही कवनो देश में होई।

सरकार के पहल

भारत सरकार के तरफ से भी काफी अच्छा समर्थन मिल रहल बा। नीतिगत बदलाव भी कईल जा रहल बा। ऑटोमोटिव के क्षेत्र में 100% FDI के हरी झंडी देल गईल बा एह से विदेशी निवेशक के भारी मात्रा में आवे के उम्मीद बा। FDI के अच्छा पहल एह से हम मानिला काहे कि FDI से सिर्फ कैपिटल इन्वेस्टमेंट ना बल्कि टेक्नोक्रैट के भी स्थानांतरण होला। 2015-2016 के यूनियन बजट के देखल जाव त ओहमे ट्रेक्टर सेक्टर के बूस्ट करे खातिर साढ़े आठ लाख करोड़ रुपया सरकार किसान के उधार देवे के निर्णय कईले बिया। एक से दू गो फायदा बा। पहिला, के खेती में तकनीक से कम समय में ज्यादा उत्पादन के लाभ मिली जवना से बढ़त जनसँख्या के खाद्य आपूर्ति वाला उद्देश्य सार्थक होई। एह से खाद्य आपूर्ति से क्षेत्र में होखे वाला आयात में कमी होई। दूसरा फायदा इ बा कि ऑटोमोटिव इंडस्ट्रीज के काफी प्रोत्साहन मिली। भारत सरकार के तरफ से स्वस्थ्य एनवायरनमेंट के दिशा में एगो पहल कईल गईल बा जवना में CNG व्हीकल, इलेक्ट्रिक व्हीकल अउरी हाइब्रिड व्हीकल बनावे के समर्थन मिलल बा।

भारत सरकार के तरफ से ऑटोमोटिव मिशन प्लान जईसन प्लान के जरिए मदद मिल रहल बा। साथ ही भारत सरकार

www.bhojpurisahityangan.com

एक्सपोर्ट टैरिफ के भी कम कईले बिया जवना से निर्यात में चार चाँद लगावल जा सके । साथ ही साथ GST जईसन बिल लाके ऑटोमोटिव क्षेत्र में निवेश करे खातिर बेहतर विकल्प देवल जा रहल बा । एह से होई का कि जवन टैक्स के चोरी होत रहल ह राज्य के बॉर्डर प उ ख़त्म हो जाई, जवना के परिणाम स्वरुप प्रोडक्ट उचित दाम पर मिले लागी । चोरी कम होई आ उचित दाम प मिले लागी त लोग ख़रीदे के दिशा में भी आकर्षित होइहे । 500 करोड़ से ऊपर के निवेश में टैक्स रिलैक्सेशन के भी प्रावधान कईल जा रहल बा जवन कि लॉन्ग टर्म इन्वेस्टमेंट के दिशा में सार्थक कदम बा । नयका बनल नियम में छोटहन इंडस्ट्रीज के मोटीवेट करे खातिर एक्साइज ड्यूटी भी कम कईल गईल बा जवना से निवेश के तरफ जागरूकता बढ़ो । भारत सरकार लगातार राज्य सरकार के बिजली के तरफ इशारा कर रहल बिया कि ओकरा से दुरुस्त रखो ।

भारत के सामने मुख्य चुनौती

भारत में ऑटोमोटिव इंडस्ट्रीज के अच्छा बाजार बनावे वाली समस्या क पीछे बहूत सारा चुनौती भी बा । एह चुनौती क सज्ञान में लेके एकर हल ढूढल काफी जरूरी बा । सबसे बड समस्या बा बिजली के जवन राज्य सरकार के अधिकार क्षेत्र में बा । ऑटोमोटिव कंपनी के मुलभुत जरूरी चीजन में पानी, बिजली अउरी इंफ्रास्ट्रक्चर रहेला । पानी के आजो हाल बेहाल बा । राज्य सरकार अउरी केंद्र सरकार के विवाद अभियो थमल नइखे । एह सब के प्रबंधन महत्वपूर्ण बा काहे कि मान लिही कंपनी भारत आ रहल बिया अगर पर्याप्त मात्रा में बिजली ना होई त जनता के बिजली में काट के देवे के परी । भारत के सामने एगो सबसे महत्वपूर्ण चुनौती राज्य सरकार अउरी केंद्र सरकार के बीच समन्यवय भी रहल बा । हमेशा एक दूसरा से व्यक्तिगत स्तर तक आके लडत रहल बा । स्वस्थ्य लोकतंत्र के नजरिया से भी ठीक नईखे अउरी भारत के विकास के नजरिया से भी ठीक नईखे ।

एगो अउरी बड़हन समस्या इ बा कि हमनी के ऑटोमोटिव के बेसिक चीज प पर्याप्त पईसा नईखी जा करत । जीडीपी के खाली 0.85% ही रिसर्च प ख़र्च होला । तमाम इंजीनियरिंग कॉलेज बा हर जगह टेक्निकल फेस्ट जईसन चीज होला । ओहिजा एक से बढ़ के एक सुझाव आवेला । लेकिन ओह लोग के आईडिया ओह दिन ख़त्म हो जाला जहिआ फंक्शन ख़त्म होला । इ सबसे जबुन चीज ह । प्लेटफार्म के कमी हमनी इहाँ के ह्यूमन कैपिटल के स्थानांतरित होखे के मजबूर कर देला । इहे कारन बा कि आज ज्यादातर विद्यार्थी MS खातिर बाहर पलायन कर रहल बाड़े जेकरा के ब्रेन ड्रेन कहल जाला । जईसन कि हम उपरे एगो चीज मेंशन कईले रहनी कि उदारीकरण के बावजूद नब्बे के दशक में ऑटोमोटिव इंडस्ट्रीज के प्रोडक्शन में कमी आइल रहे । ओकर सीधा सरोकार ब्रेन ड्रेन से बा । अगर हमनी के आपन ह्यूमन कैपिटल रहित त, FDI के सहारे दोसर के लावल आउटडेटिड तकनीक छोड़ी, हो सकत रहे कि दुनिया के सबसे आधुनिक तकनीक भारत के होईत ।

भारत में कुछ NGO भी अइसन विकास के मुख़ालफत कईले आइल बा । इहो एगो चुनौती बा । ताजुब के बात इ बा कि उ लोग एगो तय पैमाना से ज्यादा पईसा मजदूरन, अउरी आस पास के लोग के भड़कावे में खर्च करेला । उदहारण के रूप में एगो ग्रीन पीस नाम के NGO बा जवन FCRA के कानून के उल्लंघन करत रहल बा । FCRA के मुताबिक कवनो संस्था 50 प्रतिशत से ज्यादा पईसा अपना एडमिनिस्ट्रेशन प खर्च ना कर सकेला । लेकिन उ लोग करत आइल बा एही से आज ज्यादातर ग्रीन पीस से जुडल संस्था प बैन लगावल बा । चुकी कवनो ऑटोमोटिव कंपनी अगर आपन कंपनी लगा रहल बिया त ओहिजा के मजदूर के भडकावल, जमीन खातिर किसान के भडकावल ठीक चीज नइखे । इहो एगो बड समस्या बा जवन निवेशक खातिर चिंता के विषय रहेला ।

अंत में निष्कर्ष के रूप में इहे कहल चाहब कि भारत में ऑटोमोटिव इंडस्ट्रीज के काफी सुनहरा भविष्य बा । एह में सभे के सहयोग जरूरी बा । हम आपन अनुभव बता रहल बानी कि लईकन में काफी भूख बा सीखे के प्रति । बस जरूरत बा अच्छा प्लेटफार्म के जवना के उम्मीद हम भारत सरकार से कर रहल बानी । आईडिया मरो मत एक्सपेरिमेंट करे के मौका मिलो । एकर विकास खातिर राजनीती से ऊपर उठके राज्य सरकार, केंद्र सरकार अउरी जनता सभे के एक साथे समन्यवय बईठावल जरूरी बा । ना त होला का कि केंद्र में दोसर पार्टी के सरकार बा आ राज्य में दोसर के त उ इर्ष्या के वजह से अपना राज्य में FDI के अनुमति ना देला । इ कवनो नया बात नइखे ।

प्यार के धरम!

प्रभाष मिश्र

क र्फ्यू में एक घंटे की ढ़ील ग्यारह बजे से बारह बजे तक रहेगी , आप अपने जरुरत की सामाग्री इस दौरा खरीद ले " - चिल्लात लाउडस्पीकर के करकस आवाज कान में पड़ल । बाल्मीकि बंद कमरा के दरवाजा खोल के ओसारा में आ के ई आवाज कहां से आवता , देखे लगलन । पुलिस के जीप उनका घर के आगे आला सड़क से चलल जात रहे । ऊ फेनु कमरा में पट दे घुस के दरवाजा बन क के सोफा पर सुत्तल , पुतन के जगवले ।

एहो सुनतरु, करफ्यू में एक घंटा के ढ़िलाई बा , एगारे बजे से बारे बजे ले । जवन - जवन सामान ले आवे के बा बजारे से बताव । पुतन ई सुन के उठ के बईठ गईली ।

बाल्मीकि - जाए दी , ढ़ील बा त रहे दी । रउरा बाजारे नईखे जाए के । सब समान घर में बा , नाहिओं होई त जेतना सामान बा ओही में कुछ दिन काम चलावल जाई ।

बाल्मीकि - अरे , तहरा बुझाते नईखे त हम का करी । तहरा मालूम बा कि केतना दिन ले अयीसहीं करफू चलत रही । जवन जरुरी सामान बा ओह के बता द , हम मंगरुए के दोकानी से लेले आवतनी ।

पुतन - ना ना रउरा नईखे जाए के । पूरा मियां रउरे पिछे पड़ल होईहें सन । ऊ रउरा के बाहर निकले के पेड़ा जोहत होईहें सन । हमार करेजा त एहींग हमनी के छोड़ के पता ना कहा चल गईले , अब हम रउरा के एको मिनट खातिर कही ना जाए देम । ऐतना कहत पुतन रोवे लगली । बाल्मीकि उनका के चुप करावे लगले बाकिर आंखि में पानी त उनको आ गईल । चुपचाप आपन लोर पोछ के ऊ तनी अपना के सम्हरले ।

बाल्मीकि - तु त हमरो के चुड़ी पहिरा के राख देले बारु । कहिआ ले आदमी एहींग घरे में घुसिआईल रही । अच्छा छोड़ , देख अब ऐगारे बजही आला बा , खिड़की पर से हम देखतनी , धर्मनाथ त बजारे जईबे करीहें , उनके के पईसा देके कुछ सामान ले आवे के कह देत बानी ।

पुतन - ठीक बा , धर्मनाथ बबुआ अगर जात होखी त उहें के दे दी । रुकी हम खिड़की मुकी बबुआ के आवाज दे तनी ।

पुतन जाके खिड़की पर से धर्मनाथ के आवाज देहली । धर्मनाथ साईकिल ले के निकलते रहन ।

धर्मनाथ - ह कहीं भाभी , का कहतनी ?

पुतन - ए बबुआ , हम राहुल के पापा के बाजारे नईखी जाए देबे के चाहत । बड़ी डर लागता ऊंहा के भेजे में । रऊरे कुछ सामान हमरो इंहा के लेले अईती त नीमन रहीत ।

धर्मनाथ - ह ह , ऐमे कवन पूछे आला बात बा । बाल्मीकि भईआ के त अभी बाहर गईल ठीक ना कहाई । जवन ले आवे के बा रऊरा हाली से हमरा के बता दी ।

बाल्मीकि एगो पर्ची पुतन से पूछ के हाली से बना के आ हजार गो रुपिआ धर्मनाथ के पकड़ा देहुवन । धर्मनाथ पाऊड़ील पर लात ध के सीट पर बईठ के साईकिल ले के बजारे चल दिहुवन ।

आज एह नगर में करफ्यू लागला चार दिन हो गईल बा । जब से करफ्यू लागल बा पूरा इलाका एकदम शांत पड़ल बा । पुलिस आ सीआरपीएफ के जवान लगातार गस्ती कर तरे । पुलिस के जीप हर कुछ देर बाद सड़क मुकी दउड़त रहतीआ । बाल्मीकि के दुअरा त चार गो होमगार्ड के जवान के चौकी बना देहल गईल बा ।

आजु से दस दिन पहिले बाल्मीकि के बेटा राहुल , अपना कॉलेज में संगही पढ़े वाली संघतिआ हिना के ले के भाग गईल रहन । ऊ दिल्ली में जा के अपना एगो चाचा के लईका किंहा रुकल रहन । ऊ लोग दिल्ली के साकेत विहार कोर्ट में बिआह खातिर आवेदन दे देले रहे लोग । राहुल , हिना के मंदिर में लिया जा के विधिवत बिआह क लेले रहन । राहुल के चाचा के लईका पप्पू ओह दुनु जाना के रहे के नीमन से व्यवस्था क देले रहन ।

राहुल के मुहल्ला में आ हिना के मुहल्ला में एह घटना के बाद बड़ी तनाव के माहौल बने लागल रहे । बाल्मीकि , जिन हिना के बाबूजी मुख के संगही हाईस्कूल में पढ़ावत रहन आ उनकर जिगरी दोस्त

प्रभाष मिश्र

छपरा, बिहार के रहे वाला प्रभाष मिश्रा जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बनी आ आखर के साथे जुड़ल बानी। इहाँ के कहानी आ कविता दुनु में हाथ सधल बा। फिलहाल इहाँ के नासिक में कार्यरत बानी।

www.bhojpurisahityangan.com

रहन के बीच बात- चीत त दुर ताका - तांकी ले बन हो गईल रहे। बाल्मीकि त एक दू बार बोले के कोशिश भी कऊवम बाकिर हिना के बाबूजी मुख्तार ओकरा के अनसुना क के अपना राहता में आगे बढ़ गऊवन। हिना के भगला के दुईये दिन बाद राति में मौलवी साहेब आ आऊरो सभे मियां लोग के मस्जिद में बईठाका लागल रहुवे। ओहीजी मौलवी साहेब फरमान सुना देहुवन कि जबरले अगिला फरमान ना आई तले खातिर कवनो मुस्लिम लईकी स्कूल - कॉलेज ना जईहें। मौलवी साहेब आ आऊरु कुछ बड़हन लोग मुस्लिम नयका लईकन के हिंदु लईकीयन सन के भगा के ले आवे के आ स्कूल- कॉलेज जाए आला राहता पर तंग करे खातिर उकसावे लगुवे लोग।एह उकसईला के नतीजा अगिला दिन से स्कूल- कॉलेज जात हिंदू लईकिअन के राहता में रोक - रोक तंग कईल आ कवनो कवनो जगहा त छेड़छाड़ आला बात ले आ गईल। जब ई सब बात हिंदु लईकी अपना घरे आ के बतवली सन त ओही दिने पूरा हिंदु लोग के भी बईठाका लागल। विधायक जी आ आऊरु क्षेत्र के कुछ बड़हन लोग के भी ओहमें बोलावल रहे। ओह बईठाका में सभे आगे उगिलत रहे। विधायक जी बाल्मीकि तिवारी के स्कूल ना जाए के कह देहुवन आ कहुवन की तिवारी जी रऊरा अभी कुछ दिन मुस्लिम मुहल्ला ओरी जन जाएम। अगिला दिन से सभे हिंदु लोग के हथियार के साथे तईआर रहे के कहाईल। इहो कहाईल कि अगर आजू के बाद मियां लोग कवनो छोटहनो गलती करता त ओह लोग पर टूट जाए के बा।

अगिला दिने भिनुसहरे मंदिर के लगे पूजा करे जात रामधनी पर घात लगा के पहिलही से बईठल मियां लोग लाठी से मार के घवाहिल क देहुवे लोग। रामधनी के अस्पताल ले के जात जात उनकर मौत हो गऊवे। मुए के खबर जसहीं हिंदु टोला में चहुपल सभे लईका सेयान के देह में क्रोध आ गुस्सा के आवेश ऐतना बढ़ गईल कि ऊ ओही समय जय हनुमान के जयकारा लगावत पूरा दल बल के संगे मस्जिद काऊरी टूट पड़ल लोग। ऐतना लोग के भीड़ देखके मियां लोग डेरा गऊवे। बाकिर ओनिओं मस्जिद लगे तईआर तीस - चालीस गो नयका लईका तलवार आ लाठी - डंडा लेले एह लोग काऊरी बढ़ुवन सन। बाकिर मियां लोग जसही लगे पहुचे आला रहुवे तले हिंदु टोली से दू गो बम छूटल। एह बम के आवाज से पूरा इलाका कांप गऊवे। मियां लोग भी अपना कांटा से फायर करे लगुवे। पत्थर - ईंटा फेंका -फेंकी होखे लागल। चार पांच मिनट के लड़ाई में तीन गो मियां आ दू गो हिंदू दरे पर साफ हो गऊवन। तले त पुलिस के गाड़ी चहुप गऊवे। पुलिस के देख के दुनु गोल अपना अपना कावर भागल। पुलिस ओह लोग के कुछ दूर ले रगेदलस बाकिर गांव गांव के गली गली के हाल ना जानला के चलते केहु के पकड़ ना पवलस। ओह दिन जबले दुपहरिआ के बारह बजीत दू गो घवाहिल आदमी के आऊरु जान चल गईल रहे। पुलिस बल के संख्या कम रहे आ मामला गंभीर रुप ध लेले रहे, पूरा इलाका पर काबू पावल मुसिकिल होत रहे। दुपहरिआ होत होत जबले कि पूरा नगर एह दंगा के चपेट में आ चुकल रहे जिला मुख्यालय आ राजधानी से आऊरु पुलिस बल चहुपे लागल। सांझ होत होत सीआरपीएफ के पांच गो बटालियन ओह पूरा क्षेत्र में पहुंच गईल रहे आ फ्लैग मार्च करत रहे। ओही दिने करफू लागल रहे। चार दिन से करफू में जब कवनो बड़हन घटना ना भईल ह त जाके आज तनी ढ़िलाई मिलल ह करफू में।

ऐने गांव के पंडीजी लोग भी राहुल के मिआईन लईकी से बिआह कईला के वजह से बाल्मीकि तिवारी के छटुआ बनावे के कोशिश में लाग गईल रहुवे। पटीदार लोग त अगिले दिने पुतन से कह देले रहुवे कि हमनी के घर से अब तहरा किंहा के खान - पान बंद।

पुतन आ बाल्मीकि अपना शरवण कुमार निअर बबुआ राहुल के करनी, पटीदार आ आऊरु मुहल्ला के पंडीजी लोग के छंटुआ बनावे के कोशिश, पूरा नगर में फईलल दंगा - फसाद आ एह सबसे बढ़ के पुतन आ बाल्मीकि के इज्जत पर बट्टा से एकदम व्यथित हो गईल रहे लोग। एकहीं झटका में ओह लोग के सारा सपना टूटे लागल रहे। अब आगे मुहल्ला, समाज ,बिरादरी , हितईत- नतईत में कवन मूंह देखाएम , इहे सोच के परेशान रहे लोग। इहे तनाव पहिले पुतन के आ फेर बाल्मीकि के तबीयत खराब होखे के कारन बन गईल। काल्ह ले जवन सम्मानित शिक्षक बाल्मीकि तिवारी के पूरा क्षेत्र आदर देत रहे अब ओहीजा के लोग इनका के देख के मूंह फेर लेत रहे। बाल्मीकि तिवारी के भी ई सब हालात अच्छा ना लागे। उ एह समय में अपना करीब से करीब लोग के भी उनकर साथ छोड़ देबे के चलते बड़ी दुखी रहन। ऊ भीतर से टुट के एकदम लरुआ गईल रहन।

एही बीच में जब बाल्मीकि के बेटी सुनीता के पता चलल कि माई आ बाबूजी के घर से निकलल मुश्किल हो गईल बा आ सभे मोहल्ला के लोग आ बाबूजी के संघतिआ लोग ताना मारत रहता त ऊ आपना मरद संजीव के ले अपना नईहर बाबूजी के लगे पहुचली। ऊ अगिले दिने बाबूजी आ माई के अपना लगे चले खातिर जिद क देहली। बाल्मीकि त शुरु में जाए खातिर एकदम तईआर ना रहन बाकिर संजीव आ सुनीता के समझवला के बाद , जाए खातिर तईआर हो गईले। ऊ सुनीता के संगे उनका घरे जाए के पहिले अपना स्कूल में छुट्टी के दरखास्त देबे गऊवन। ओहुजी सभे दोस्त मास्टर आ हेडमास्टर के मीठरस ताना पा के बड़ी अपमानित महसूस कईले। सांझी के ट्रेन से बाल्मीकि आ पुतन अपना बेटी - दामाद के संगे नगर छोड़ देहुवे लोग। अगिला सुबह ऊ लोग बेटी किंहा पहुचुवे लोग। शुरु शुरु में त बाल्मीकि आ पुतन के ओजी तनी झिझक लागल बाकिर धीरे- धीरे ओजी के माहौल में ढ़ल गऊवे लोग। नाती संगे खेलत कूदत नाना - नानी के मन लागे लगुवे।

ऐने तीन चार महिना बीतला के बाद राहुल आ हिना के दांपत्य जीवन में तनाव बढ़े लागल। राहुल के जब से एह बात के पता चलल रहे कि उनका वजह से पूरा नगर में करफू लागल बा , कई आदमी मर गईले , उनकर बाबूजी आ माई के मुहल्ला के पंडीजी लोग छांट देले बा , बाबूजी- माई के लगातार तबीयत खराब रहता , दुनु जाना के घर से बाहर निकलला पर लोग ताना मारता आखिर में ओह लोग के बहिन किंहा शरण लेबे के पड़ल बा , तबे से ऊ अपना फैसला पर बड़ी दुखी रहे लगुवन। ऊ अपना माई- बाबूजी के एह दशा के जिम्मेदार बुझ के आत्मग्लानि महसूस करत रहन। त दोसरा ओरी हिना अपना अब्बा मुख्तार के मुहल्ला में होत अपमान से वाकिफ रहली। मुख्तार के भी अपना बिरादरी में बड़ा अपमानित होखे के पड़ल रहे। अब त एहु बात के संकट रहे कि हिना के तीनु छोट बहिन के निकाह में दिक्कत आई।

दांपत्य के सुखी आ खुशी खातिर जरुरी होला कि दुनु मरद - मेहरारु में अच्छा समझ होखे आ दूनू जाना एक दूसरा के भावना के सम्मान करे के ईच्छा आ सोच होखे। बाकिर कुछ दिन से राहुल के अपना कमरा में हिना के मुस्लिम धरम के किताब पढ़ल , आ आऊरु धार्मिक क्रिया से उनका चीढ़ बरे लागल। ओही कमरा में जहां राहुल बजरंग बली आ दुर्गा माई के मूरति के पूजस आ अगरबत्ती घुमावत हनुमान चलीसा के पाठ करस , आ हिना आरती लेबे खातिर चुपचाप खड़ा होके इंतजार करस आ खूबे खुशी से प्रसाद खास। एहंग हिना के भावना त विआह के पहिले जेंग दोस्ती आ प्यार के परवान के समय में रहे ओहींग रहे बाकिर हिना के ई लचीलापन राहुल के आऊरु धार्मिक रुप से खूंखार बना देहलस। अब राहुल ई चाहे लगले कि हिना भी हिंदु देवी - देवता के पूजा करस , मंदिर जास , मस्जिद ना जास , कुरान वैगरह ना पढ़स। इहे सब बात अब एह दुनु जाना के परवान पर चढ़ल प्रेम के ऊपर खतरा के बादल बन के मंडरात रहे। हिना त अब अईसन जगह चहुप गईल रहली जहां एक ओरी ईनार त एक ओरी खाई रहे।

हिना राहुल के बहुते समझावे के कोशिश कईली ,पुरनका सब बात के ईआद दिवईली , कसम खिववली बाकिर राहुल पर त दोसरे रंग चढ़ल रहे। आखिर में ई मनमुटाव एक दिन बहस के रुप ध लेहलस। बहस जोरदार आ गर्म महौल में भईल। राहुल आज शर्त राख देलन कि तु अगर हमरा के सच्चा प्यार करत होखबु त हमरा धरम के स्वीकार क लेबु। राहुल ईहो कह देहले कि या त तु हमरा के चुन चाहे तु अपना धरम के।

हिना के रोवत रोवत आंख लाल हो गईल। ऊ सिसिकिआ मारत राहुल के समझवली -राहुल , हम तहरो के बहुत प्यार करेनी आ अपना धरमों के। इ दुनु चीज हमरा जीवन के अंग ह। एह दुनु के बिना हमार जीवन कईसन। तु एह में से एगो के काहे छीने के चाहतर। ई दुनु एक दूसरा के पूरक बा। एक के बिना दूसरा अधूरा बा। हम ना त तहरा के छोड़ सकीले ना अपना धरम के। आखिर हमहु त तहरा के तहरा रुप में ही स्वीकार कईले बानी त तु हमरा के हमरे रुप में काहे नईख स्वीकार करत। हमरा रुप में तु काहे बदलाव करे के चाहतर। बिआह के पहिले जवन हिना तहरा पसन रहली ओह हिना के ऊहे हिना काहे नईख रहे देत , मत बदल अपना हिना के। इहे कह के हिना राहुल से लिपट के पूका फार के रोवे लगली। राहुल के भी एह रोआई आ पूरा कांपत देह के भाषा समझ में आ गईल। उनका पिछिला कुछ दिन से अपना हित - दोस्त के समझावल तरीका पर व्यवहार करे खातिर शरम महसूस होखे लागल। उनका लागल कि अनजाने में ही हम हिना के एगो बड़हन घाव दे देले रहनी ह , ऊ हिना के गला से लगा लेहुवन आ उनकर लोर पोंछत कहुवन - अरे हमार करेजा , हमरा आजो उंहे हिना पसन बाड़ी जवन बिआह के पहिले रहली। हम तहरा प्यार के दुनु क्षेत्र के हरमेशा बनईले राखेम। तहार जीवन कबो आधा - अधूरा ना बनी। हम तहरा पर कबो आपन धरम थोपे के इचिको प्रयास ना करेम। हमनी के धरम ना त हिंदु ह ना इस्लाम ह , हमनी के त एके गो धरम बा आ ऊ ह - " प्यार के धरम "। हमरा जब से तहरा से दोस्ती भईल हम खाली एही एगो धरम के जानतनी। हम आगे भी अपना मरे के दिन ले खाली एही धरम में जिए के चाहतनी। हमरा जवन तनी मनी एह धरम से भटकाव भईल रहल ह ओह खातिर माफ क द। तु हमरा के एह धरम के शिक्षा देबे आला सबसे महान आदमी बारु। काश , पूरा गांव - जवार- समाज हमनी के एही धरम के अपना लीत। इहे कहत राहुल के आंख से भी लोर बहे लगुवे। दुनु जाना फेर से अपना पहिले निअर प्यार के जिनगी में हंसी - खुशी के गोता लगावे लागल लोग।

गेंदा

डॉ. उमेशजी ओझा

शकुन्तला आपन दुआर प बईठल आपन घर से बाहर निकले वाले आ जाये वाले लोग के देखत रही। देखते-देखते एके हाली कहां भुला गईली , उनको मालुम ना रहे। उ सोचे लगली कि उ कईसे आपन पांचो लइकन के पोसले पलले रही। उनका सामने से केहु भी जात रहे त उनका आंखी के पपनिओं ना हिलत रहे। अईसन हालत में उनका कई घंटा बित गईला। एह बीच उनकर बड लईका संतोष तीन-चार हाली उनका सोझा से गुजरले । पांचवा हाली उनका बुझाईल कि उनकर माई उनका सामने नईखी। उनकर मुर्ति बईठल होखे, संतोष आपन माई के आगे राखल एगो गिलासो उठा लिहले। ओकरा बादो उनकर माई कऽ धेयान ना टुटल। संतोष दु हाली माई -माई के आवाज भी लगवले। बाकि उ कुछओ ना बोलऽली। संतोष के होश उड गईल कि कही कुछ हो त ना गईल, माईकें ? संतोष शकुन्तला के पकडीके जोर से हिला के " ए माई.....माई......कहवा भुला गईल बानी।"

शकुन्तला एके हाली डेराईल-'काहऽ बाबु काहे हला करत बाडऽ।"

" अरे रउरा एहीजे बानी माई, हम त डेराईये गईनी हाँ । कुछो काहे ना बोलत रहनी हाँ ? कहा चली गईल रही ? ना बोलत रही त हम डेराईयें गईल रही।" शकुन्तला चुप चाप फेरू से सुन हो गईल रही। आपन बेटा के बात चुप चाप सुनत रही।

" माई का हो गईल बा ?, फेरू कहा चली गईनी, कुछ बताईब ? " संतोष के जिद कईला के बाद शकुन्तला कहली-

" बेटा एहिजा कवनो वृद्धा आश्रम नईखे ? "

" कांहे माई, वृद्धा आश्रम से का काम बा ? "

" बेटा तु, आपन पाँचों भाई बहीन में सबसे बड़ बाडऽ, तहरा से कुछ लुकाईल नईखें। तनिआसा ईयाद करऽ कतना तकलिफ सहीके तहनी लोग के पलले पोसले बानी। अपने हमनी के भुईया सुतत रही जा, बाकी तहनी लोग के बिछावन प सुताईब जा। दुध अपने ना पीके तहनी लोग के पिलावत रहीं जा। आधा पेट अपने खाके तहनी लोग के भरपेट खिलावत रही जा। तहनी लोग के जनम देबे खातिर नौ महिना अपन कोख में पोसनी, जब जनम भईल त तहनी लोग के आपन करेजा के खुन चुसवनी। वोह घरी तहनी लोग हमरा खातिर बोझ ना रहऽ। बाकि तहार बाबुजी के गईला के बाद तहनी लोग खातिर हम बोझ बन गईल बानी ? तहनी लोग हमरा के गेन्दा बना दिहले बाडऽ । दु महिना कबो इनका किहा, त कबो उनका किहां । एने से ओने डगरत चलत बानी । अब सहल नईखे जात बेटा हाड बुढा गईल बा । अस्थीर रहल चाहत बानी। कवनो वृद्धा आश्रम होखे त वोहिजा छोड द लोग। वोहिजे रह लेब । बाकि अब एह बुढ हड्डी में ओतना ताकत नईखें कि तहिनी लोग के डगरावल सह सकीं ।"

संतोष आपन माई के बात सुनिके असमंजस में पडी गईल रहले कि आखिर आपन माई के का उत्तर देसू ?

डॉ. उमेशजी ओझा

जमशेदपुर झारखंड के रहे वाला डा. उमेश जी ओझा , पिछिला कई साल से भोजपुरी मे लिख रहल बानी । इँहा के सैकड़न लेख कई गो अलग अलग पत्र पत्रिका अखबार मे छपि चुकल बडुवे । पत्रकारिता मे डिप्लोमा के संगे संगे एम काम भी कईले बानी आ एह घरी जमशेदपुर मे रहि के झारखंड सरकार के सेवा दे रहल बानी ।

दू गो लघुकथा

केशव मोहन पाण्डेय

चुनाव

परधानी के चुनाव हो गइल रहे। रामजी मास्टर रिटायर हो गइल रहले, बाकिर अभीनो कुछ करे के चाहें। सोचले कि 'आज ले ईमानदारी आ साँच के डगर पर चलल बानी, लोग जँहवे देखेला, आदरो देला, तऽ वोटवो देबे करीऽ।' इहे गुणा-भाग लगाके चुनाव लड़े के मन बना लेहले ।

राय-मसौदा खातिर सबसे पहिले अपना परिवरवे में बैठक कइले। भाई-भतीजा, मरद-मेहरारू, सबके बइठवले। सबके ईऽ बिचार रहे कि मास्टरी कइल आ चुनाव लड़ल दूगो बात हऽ। चुनाव लड़ला में आजु ले जवन पेट काट-काट के पइसा बचल बा, ओकर बरबादी। धरमपत्नी कहली कि 'कुछ करे केऽ बड़ा शौक धइले बा तऽ दू-चार गो ट्यूशन पकड़ लीं। दू पइसा अइबो करीऽ।' घरहीं में फूटमत देख के रामजी मास्टर मन मार लेहले। जब आपने ना साथ दी तब बिराना के कवन भरोसा। अब उनकर मन बदल गइल। सोचले कि कवनो अइसनका उमीद्वार के साथ दीं, जवन नेक होखे। जवन मन से गाँव के भलाई करे के चाहे। जेकरा में गाँव के सेवा के साँचका भाव होखे ।

पता चलल कि अबकी बेर पाँच जने परचा भरले बाड़े। पहिलका उमीद्वार हवें छत्तर सिंह। दखिनही टोला के सभे उनसे डेरालाऽ। दस-बारे जने के दुआर से गोरूअन के खोलवा चुकल बाड़े। भले केहू उनका से कहें चाहें ना, ई बात दोसरो गाँव के लोग जानेला।

सुने में आइल हऽ कि छेंदीओ चुनाव लड़त बाड़े। लोग के घर आ गुमटी में सेंध मारत फिरसऽ। ओही अपराध में दू साल पहिले ले जेल में रहले हँऽ। अब रोज साँझे-बिहाने उत्तर टोला में बैठकी जमावे ले। सगरो बाबू लोग साथ देबे के तैयार बाऽ।

तीसरका उमीद्वार बाड़े अकलू। फिलिम लेखां सभे उनका के अकलू दादा कहेला। माने एकदम छूटहा साँढ़। सभे कहेला कि एक बेर ऊ एगो मलगर व्यापारी से सगरो पइसा लूट के ओकरा के नदी में ढकेल देहले। चार दिन बाद ओकर लाश उतराइल रहे।

अगिला उमीद्वार सुबोधकांत जी। का ॅलेजे के बेरा से नामी गुंडा। सामने कट्टा धऽ के परीक्षा देस। एक साल उड़ाका दल पकड़लस तऽ एगो के गोली मार देहले। पढ़ाई तऽ बंद हो गइल, बाकिर चोरी-डकैती के गिरोह बना लिहले। पिछलो बेर चुनाव लड़ल रहले बाकिर दस-बारे वोट से हार गइले। सुने में आवता कि बिहने ऊऽ रामजी मास्टर से आशीर्वाद लेबे अइहें।

पाँचवा उमीद्वार सुधीर तिवारी। अपना गाँव के पहिलका इंजीनियर। एगो पढ़ल-लिखल नौजवान। नौकरी छोड़ के गाँव के सेवा खातिर घरे आऽ गइले। पहिले तऽ एगो पुरान साइकिल पर घूम -घूम के छोट-मोट ठेकेदारी करस। दिने-दिन ठेकेदारी अइसन चमकल कि आठे साल में जिला में उनकर एगो नाम बाऽ। धन-दौलत अफरात हो गइल। बड़का दुआर पर तीन-चार गो चरपहिया बाऽ। पिछला साल धोबीघटवा पार करे खातिर पुल बनववले। पहिलके बरसात में ढह गइल। जाँचो बइठल बाकिर लछमी के कृपा से सब साफ-सफाई हो गइल।

रामजी मास्टर बइठले-बइठल एगो लमहर साँस लिहले। अब उनका बुझाइबे ना करे कि ऊ समर्थन खातिर केकर चुनाव करस।

केशव मोहन पाण्डेय

तमकुही रोड, सेवरही, कुशीनगर, उ. प्र. के रहे वाला केशव मोहन पाण्डेय, एम.ए.(हिंदी), बी. एड. बानी। अलग अलग मंच ला दर्जनो नाटक लिखले आ निर्देशित कइले बानी। अनेक समाचार-पत्र आ पत्र-पत्रिकन में अढ़ाई सौ से अधिका लेख, आधा दर्जन कहानी, आ अनेक कविता प्रकाशित। भोजपुरी कहानी संग्रह 'कठकरेज' प्रकाशित। आकाशवाणी गोरखपुर से कईगो कहानियन के प्रसारण, टेली फिल्म औलाद समेत भोजपुरी फिलिम 'कब आई डोलिया कहार' के लेखन-निर्देशन कइले बानी। केशव जी ए घरी दिल्ली में रहेनी।

www.bhojpurisahityangan.com

नशा

केशव मोहन पाण्डेय

बाबूलाल बड़ा मेहनती रहले। अपना जाँगर भर रिक्शा चलाऽ के अपना जिम्मेदारी के ईमानदारी से निभावस। उनका रिक्शे चलवला से घर में दूनो बेरा चूल्हा जरेऽ। एतना कइलो पर उनका के केहू निमन आदमी ना कहे। कारन ई रहे कि साँझ होते सीधा-बारी, तर-तिअना खरीद के ऊ सोंझे भट्ठी पर जा के तरऽ हो लेस।

दारू चढ़ा के केंचुअन नियर चाल चलत घरे पँहुचस त चारू लइका आ मेहरारू, सभे उनसे दूरे रहे के चाहे। दूनो बड़की लइकीअन के बढ़त उमीरो के चिंता ना लागे उनका। दारू पिअल उनका सगरो जिम्मेदार आ मेहनती आदमी के रूप पर करीखा पोंत देऽ। एतने ना, दुआरी पर खरीटा पर पसर जास आ बेगतान के बकबकाए लागें। कबो बिरहा टेर देस, तऽ कबो चालारी के सुर निकालस। ओही राग में अपना मुअल माई-बा पके ईयाद कऽ के रोए लागस, तऽ कबो कबीर के उलटबाँसी आ कबो टुटपूँजीया व्यासन के दुअर्थी भजन सुनावे लागस। एतने में पिआस लागे तऽ एक मुँहे दस गारी दे केऽ लइकन से पानी माँगे लागस, आ छने में पता ना कँवना ज्ञान के कारण संसार के निःसार कहि के भगवान से दसोनोह जोड़े लागस।

दारू के लत के कारण आपन-बिरान केहू बाबूलाल के लगे जाए के ना चाहे। केहू के भरोसे ना रहे कि कब मुँह से काऽ निकली। लगे जा के बेभरम भइला से नीक दूर रहि के आपन पानीए बचावल रहे। कुछ दिन से सभी देखे कि पछिम टोला के सुरेश अब बड़ा चाव से उनका लगे उठल-बइठल करत बाड़े। सोचे वाला बात ई रहे कि सुरेश ना दारू पीए ले ना बीड़ी-खैनी के आदी हवना सबके ई लागल कि पढ़ल-लिखल बाड़े, हमेशा गाँव के सुधार के बात करत रहेलन, हो सकेला कि कवनो बहाने बाबूलाल के दारू के आदत छोड़ावत होखस।

अब तऽ लोग के अउरी अचरज होला कि रोजो किरीन पछिमाहुत होते सुरेश जुम जाले। एतने नाऽ, अब तऽ कई बेर ईहो लोग देखे ला कि चटकदार भूजा बनवा के लेआवेलन। बाबूलाल चटक चिखना पाऽ के अउरी बतिआवे लागेलन।

बाबूलाल के मेहरारू के सुरेश के लछ्न ठीक ना लागेला। ऊ कई बेर ई अहले बाड़ी कि बेर-बेर ऊ बड़कीए से पानी-नमक माँगत रहेले। जब लेआवेले तऽ बड़ा गहीर आँख से ओकरा के निहारे लेऽ। एतने ना, बड़की के आवते जाए के बेरा ऊ बाबूलाल से जींस आ चुनरी पर दुअर्थी टेर लगावे के कहेले। दारू के नशा में नशाइल बाबूलाल के तऽ कवनो चिंते ना रहेला। अब उनकर मेहरारू बड़की के सुरेश के सामने ढेर ना जाये देली।

आज तऽ हदे हो गइल हऽ। आज सुरेश बाबूलाल खातिर तारल सिधरी मछरी लेआइल बाड़े। बाबूलाल के पूछला पर बतवले हवें कि 'भट्ठीआ के लगवे तऽ ठेलवन पर बेचालाऽ।'

बात काल्हे तय हो गइल रहे, से आज बाबूलाल दारू खरीद के घरवे लेआइल बाड़े। तरूआ मछरी पर कई बेर गटई तर भइल हऽ। देखते देखत सुत्ता रात हो गइल बाऽ। ना बाबूलाल के पीअल रूकताऽ आ ना सुरेश जात बाड़े। आज ऊहो तनी खुल गइल बाड़े। खाली दुअर्थी गीतन के फरमाइश करत बाड़े। ओहि में कबो लाचारी आ कबो पचरा गावत बाबूलाल के पिअल ना रूकत रहल हऽ तऽ महतारी के लाख मना कइला पर बड़की सामने आ के दारू छिन के फेंक देहलस। दूनो जने भकुआ गइल हऽ लोग। बाबूलाल ओकरा साहस से, सुरेश ओकरा रूप से। बड़ा टेढ़ मुस्की मारत सुरेश कहले हवें, - 'हई देखऽ ना बाबूलाल भाई, तहार बड़की तऽ जवान हो गइल बिआ। ...... अब आगे काऽ सोचले बाड़?'

एतना सुनते बाबूलाल के थूके सरक गइल। ऊनका बुझइबे ना कइल कि नशा में के बाऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

अतिथि देवो भव:

पी. राज सिंह

राजस्थान ऐतिहासिक पर्यटन खातिर विख्यात बा । लोग इहाँ इतिहास के चिन्ह , धरोहर राजमहलन के स्थापत्य , खँडहर आदि देखे पहुंचेला।

पुष्कर प्राचीन काल से ही धर्म नगरी के रूप में प्रसिद्ध रहल बा। ई राजस्थान के दुगो समानान्तर अरावली पर्वत श्रृंखला के बीच बसल बा आ अजमेर से 15 कि० मी० उत्तर पश्चिम दिशा में बसल बा। अजमेर आ पुष्कर के बीचे एगो छोट पर्वत श्रृंखला नाग पर्वत बा। गुलाबी शहर जयपुर भी 140 कि० मी० के आस पास ही बा। एह से एक ही प्रोग्राम में तीनों पुष्कर , अजमेर आ जयपुर के भी घुमल जा सकेला। शहर के 30 % भाग में रेत आ मरुस्थल बा , 30 % उघार नंगा पर्वत बाड़ी सन आ केवल 40 % भाग में खेती होला। 2001 के जन गणना के अनुसार एह शहर के आबादी रहल ह 14791 । एह शहर के स्थापना के निश्चित तिथि ना बतावल जा सके बाकिर पदम पुराण के अनुसार देव दानव युद्ध के समय दानव बज्रनभा के हत्या ब्रह्मा जी जब कमल के फूल के हथियार बना के कईले तब उनका हाथ से कमल के फूल के कुछ पँखुरि जमीन पर गिर गईल। पुष्प + कर = पुष्कर। एहि से एह शहर के नाम "पुष्कर" परल। ईहां प्रति माह लगभग 1,00,000 लोग आवेला। कार्तिक पूर्णिमा के दिने त ई संख्या कई गुना बढ़ जाला। सन 2005 में इहाँ 161 . 2 लाख तीर्थयात्री / पर्यटक अईले जवना में 63, 000 विदेशी रहस।

बाकिर एह धार्मिक नगरी के केंद्र विंदू में पुष्कर सरोवर ही बा। सरोवर में स्नान के बड़ा धार्मिक महत्व के बतावल बा। हिन्दू धर्म ग्रन्थं में पुष्कर के तीर्थराज के दर्जा हासिल बा। हिन्दू धर्म के पांच प्रमुख सरोवरन में एगो पुष्कर भी गिनाला। पुरातात्विक प्रमाण के आधार पर भी पुष्कर के प्राचीनता प्रमाणित भईल बा। ईसा पुर्व चौथी सदी के सिक्कन में जवना में यूनान आ कुषाण काल के मुहर बा पुष्कर के सबुत मिलत बा। फेरु ईसा पुर्व दूसरी सदी के साँची के खुदाई लेख में भी पुष्कर के वर्णन बा। 5 वीं सदी में चीनी यात्री फाहीयान भी पुष्कर के चरचा कईले बाड़े। एह से ई प्रमाणित हो जात बा कि पारंपरिक व्यापार मार्ग पर ना रहला के बाद भी पुष्कर एगो धार्मिक आस्था के केंद्र के रूप में प्राचीन काल से ही रहल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

पुष्कर सरोवर के किनारे कुल 52 गो घाट बनल बाड़ी सन । दस प्रमुख घाटन के नाम बा , बाराह घाट , दधीच घाट , सप्तर्षि घाट , ग्वालियर घाट , कोटा घाट , गऊ घाट , यग घाट , जयपुर घाट , करनी घाट आ गनगौर घाट । गऊ घाट के गांधी घाट भी कहल जाला । गाँधी जी के चिता भस्म एहिजा विसर्जित कईल गईल रहे ।

सरोवर के अलावा इहाँ 500 मन्दिर बाड़ी सन । एह में 80 गो बड़ मन्दिर बाड़ी सन जवन संस्कृत के अलावा भारतीय नृत्य , संगीत के शिक्षण आ प्रसार के अनूठा केंद्रन के रूप में प्रसिद्ध बाड़ी सन । ब्रह्मा जी के मन्दिर सबसे प्रमुख बा ।

पुष्कर के एगो बड़ विशेषता बा कि देशी आ विदेशी पर्यटन के ई एगो बड़ा अच्छा मिलन बिन्दु बा । इहाँ हजारों के संख्या में विदेशी पर्यटक भी आवेले । गोआ के बाद सबसे अधिका विदेशी घुमंतु पुष्कर में ही जुटेले । पुष्कर के विदेशी घुमंतुवन के गोवा के घुमंतुअन के कटेगरी में ना राखल जा सके । गोवा में चरस , गांजा , देशी शराब के अधिका मांग रहेला आ मौज मस्ती के माहौल रहेला । पुष्कर में विदेशी पर्यटक हिन्दू समाज के मान्यता के अनुसार कई प्रकार के अनुष्ठानन में घुल मिल के ओह सामाजिक सांस्कृतिक अवसर के एगो अंतरंग भागीदार बन जाले । कुछ लोग हिन्दू धर्म के अपना भी लेले बा ।

मेला अवधि में एक दिन धार्मिक जुलुस भी निकलेला । कई अखाड़ा के तरफ से धार्मिक भाव पर आधारित झांकी भी निकालल जाला । अधिकाँश झांकी में ई देखल जा सकेला कि कुछ यूरोपी भजन कीर्तन कर रहल बाड़े भा ऊंट गाड़ी के सारथी के रूप में गेरुवा वस्त्र धारण कई के विराजमान बाड़े । शिव जी के जटा खानी कुछ पर्यटक जटाधारी रूप में भी लउक जाले । एगो स्थानीय आदमी हमरा के बतवलख कि एह तरह के केश आजकल पार्लर में भी बना देहल जात बा ।

पुष्कर में कई गो प्राचीन आ ख्यातिप्राप्त मंदिरन में प्रतिदिन नृत्य गीत आदि कई प्रकार के धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम होत रहेला । कार्यक्रम के घोषणा , नृत्य गीत के भाव मुद्रा आदि वर्णन आ व्याख्या हिंदी आ अंग्रेजी दुनो में होला । विदेशी लोग भी दर्शक

के रूप में उपस्थित रहेला ।

फोटोग्राफी के सवख राखे वाला लोगन खातिर पुष्कर स्वर्ग बा । दू दू गो कैमरा कमर मे लटकवले कई गो फोटोग्राफर देखल जा सकेले । रेता पर ऊंट के मेला के दृश्य , ऊंटन के सजावट के दृश्य , रंग विरंगा राजस्थानी पोशाक आदि के फोटो लोग प्रमुखता से उतारेला ।

फोटोग्राफी से संबंधी एगो आपन निजी अनुभव बता रहल बानी । एक दिन एगो मईल कुचईल कपड़ा पेन्हले छोट लईकी हमरा के घेर लेहलख । मेला में ओकर बाप मतारी भी आईल रहले । ऊ लोग एगो छोट रेता के टीला पर टीकल रहे । ऊ लड़की " फोटो, फोटो ...." कहत हमरा आगा आ गईल । जब हम ओकर फोटो खींचे के तइयार हो गईनी त बगल से एगो छोट बकरी के बाचा ध के पोज खातिर खड़ा हो गईल । मतलब ऊ घुमंतू के बेटी के खूब पता रहे कि मेमना के साथे कवन तरह के पोज देबे के बा । हमरा पाकिट से निकलल दस रुपया ओकर आमदनी रहे । कहे के माने ई बा आबादी , सरकार से लेके ऊंट, घोडा के क्रेता विक्रेता लेले घुमंतुवन के भी पता बा कि विदेशी पर्यटकन के पसंदीदा चीज का बा । ग्लोबल आ लोकल के ई अनूठा समन्वय पुष्कर में देखे के मिलेला ।

पी. राज सिंह

छपरा , बिहार के रहे वाला पी राज सिंह जी आर एस कालेज सिवान मे एसोसियेट प्रोफेसर बानी , नया तकनीकी से जुड़ल अपना मातृभाषा खाति हर तरह से लागल भीड़ल , अपना विशेष कैमरा से जवार के हर पहलू के कैद करत भोजपुरी भाषा के एगो साहित्यिक कलात्मक उंचाई दे रहल बानी । एह घरी ईंहा के छपरा मे बानी ।

www.bhojpurisahityangan.com

मेला के एक छोर मीलन पसरल रेगिस्तान काऊरी खुलेला । अधिकतर ऊंटन के झुण्ड मेला में रेगिस्तानी छोर से आवेला। कई फोटोग्राफर बालू के टीला के बीचे रात में ही सूत जाले जेमे जे ठीक सबेरे ऊँटन के झुण्ड के फोटो उगत लाल सुरुज के पृष्ठभूमि में उतारल जा सके । कई पर्यटक ऊंट के प्रजाति के संवर्धन भा ऊंट उत्पाद संबधित प्रोजेक्ट पर भी कई वर्षं से काम करत रहेले ।

पुष्कर सरोवर से 2 - 2.5 कि.मी. दूर एगो पहाड़ी पर ब्रह्मा जी के पत्नी सावित्री जी के मंदिर बा । पहाड़ी के चोटि से देखला पर दूर दूर तक मरुभूमि में एक कतार में लगावल कैम्प नगरी हमरा लउकल । एहिजा टेंटन में धनी देशी आ विदेशी पयर्टक लोग रुकेला । सीट ऑनलाइन बुक होला । सस्ता होटल भी बाड़ी सन । सस्ता होटल सरोवर के आस पास बाड़ी सन । स्थानीय परिवार के लोग भी आपन घर के कुछ हिस्सा के किराया पर देला ।
सरोवर छेत्र में साफ़ सफाई के बहुत ध्यान देहल जाला । आ घाटन आदि के फोटो लेहल मना बा ।

राजस्थान पर्यटन विभाग मेला भ्रमण के आकर्षक आ मनोरंजक बनावे खातिर कई प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करावेले । कुछ कारक्रमन में विदेशी ही भाग लेले । कुछ में देशी विदेशी दुनो लोग भागीदार होला ।

दूल्हा दुल्हन एगो अइसन कारक्रम ह जवना में खासकर विदेशी लोग भागीदार होला । एह कारक्रम में सबसे बढ़िया दूल्हा और दुलहिन के चुनल जाला । अपना देश के विभिन्न प्रान्तन के पारंपरिक ड्रेस के फैशन डिजाइनर द्वारा तईयार कईल ड्रेस पेन्ह के सज के दूल्हा दुल्हन लोग परेड करेला । नजारा रैम्प पर कैट वाक् करत फैशन शो जइसन ही रहेला । संगीत के धुन पर कुछ लोग कुछ सेकण्ड थिरक भी लेला । स्टेज पर आवत जात लोगन के भरपूर ताली से स्वागत , उत्साहवर्धन होत रहेला । सवोत्तम दूल्हा भा दुल्हन के वेश भूषा , सजावट आ अभिनय खातिर अंत में पुरस्कृत कईल जाला । गोर गोर विदेशियन के ई रूप आ उत्साह एगो बड़ आकर्षण के केंद्र होला ।

दोसरका सबसे आनंद के खेल मेला में होला ऊ ह मोँछ प्रतियोगिता । सबसे बड़ आ सजीला मोँछ वाला मरद के चुने खातिर ई प्रतियोगिता होला । अवुसे भी राजस्थान के रंग विरंगा पगड़ी आ मोँछ नामी ह । प्रतियोगी लोग जब चुप चाप बईठल रही तब ले रउवा ना बुझाई कि मोँछ ओह लोग के कतना बड़ बा काहे से कि ऊ लपेट के पगड़ी में लुकावल रहेला । भारी भीड़ के बीच प्रतियोगी मोँछ खोल के दूनो हाथ से पसार के चारों इयोर मुहँ घुमा के दर्शक के ताली बटोरे ला लोग । बाकिर राक्षसी अट्टहास त पुरस्कार जीतला के बाद फुटेला । दर्शक समान रूप से देशी विदेशी दुनो रहेले बिना कवनो दूरी आ भेद भाव के ।रस्सा खींच प्रतियोगिता भी कम मनमोहक ना होखे । टीम बनला पर बा । स्त्री पुरुष , देशी विदेशी आदि सब खिचड़ी टीम भी बन सकेला भा देशी बनाम विदेशी भी । एकरा अलावा ऊंटन के दउड़ , सजावट , घोड़ा के अच्छा नस्ल के पहचान आदि के कारक्रम भी होला ।

2014 में हम गईल रनी हाँ कि एक दू दिन मेला घुमेब , खाएब पीयब , फोटोग्राफी करब आ लवट आएब । बाकिर पांच दिन बाद भी टकसे के मन ना कईलख जेकरा चलते गुलाबी नगरी जयपुर घुमे के जोजना फेल कर गईल । साफे बुझात रहे काहे इहाँ हजारों में विदेशी आवेले आ कई त महीनन ले डेरा जमवले रह जाले ।

खरीदारी खातिर सामान बाड़ी सन -ऊंट के चमड़ा के बनल बेल्ट , बैग , जूता चप्पल आदि ,राजपूत चित्रकला शैलि के पेंटिंग , कलेंडर ,डायरी आदि ,जयपुरी रजाई , चादर , ओढना , बिछवना आदि ।

बाकिर केकरा का भेंटाईल , ऊ का खोजलख घुमलख ई सब त ओकर आपन मन आ रूचि के ऊपर बा । हमार उपलब्धि में शामिल बा मेला क्षेत्र में एगो छोट दल से जान पहचान आ ऊंटनी के मीठ दूध में पाकल एक कप चाय ।
" आओ जी ! एक चाय पी लो " , ई बोली का फेर सुने के मिली ? ....
ओह ! ओकनी के फोटो अभी ले ना भेज पवनी ।.......

देवेन्द्र नाथ तिवारी

अश्लीलता के ख़िलाफ 'अनुभूति'

आइसना समय में जब भोजपुरी मतलब अश्लीलता के धारणा बन गइल होखे आ एकरा के आधार बना के भोजपुरी लोककला के नकार देवे के साजिश हो रहल होखे, ओइसना में अनुभूति शांडिल्य के पारंपरिक व्यासशैली में वीर कुँअर सिंह के लोकगाथा के प्रस्तुति सुखद 'अनुभूति' के प्रतीक बा। भावपूर्ण नृत्य आ ओजपूर्ण गायन के अनूठा तालमेल एह 'अनुभूति' के विशिष्टता प्रदान करत बिया। वइसे तऽ अनुभूति की उम्र महज तेरह साल बा बाकि एतना काँच उमिर में एह बुचिया के लय, ताल, आरोह, अवरोह, भाव, मुद्रा आ रस के बेहतर समझ बा। एकरा के ओकर प्रस्तुति में महसूसल भी जा सकता बा। मूलत: छपरा के रहे वाली आ 10 वीं के विद्यार्थी अनुभूति मैथिली-भोजपुरी आकादमी द्वारा दिल्ली में आयोजित लोक-उत्सव समारोह में आपन कला आ हुनर के जौहर देखवली। दिल्ली में उनकर प्रस्तुति से छपरा केतना गर्वांवित महसूस करत बा एकर अंदाजा अनुभूति के हेडमास्टर साहेब के एह टिप्पणी में झलकत बा- 'बेटी, जा दिल्ली में भोजपुरी के जोत जगा आवऽ। हमार आशीर्वाद बा। टेस्ट परीक्षा के फिक्र मत करऽ। भोजपुरी के मान-मर्यादा स्थापित करे के एह परीक्षा में सफल होखऽ।' दिल्ली में तीन दिन तक चलल एह लोक-उत्सव में अनुभूति अपना प्रतिभा के प्रदर्शन बेहद कुशलता के साथ कइली। दादा देव ग्राउंड, पालम में अनुभूति के प्रतिभा देख के वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री राम बहादुर राय जी कहनी, भोजपुरी माटी प्रतिभा के खान रहल बिया। अनूभूति के देख के इ विश्वास अउर पुख्ता होत बा कि एह माटी में प्रतिभा आजो जन्म लेत बाड़ी स। अनुभूति

देवेन्द्र नाथ तिवारी

देवरिया, युपी के रहे वाला देवेंद्र नाथ तिवारी जी , द संडे इंडियन भोजपुरी पत्रिका के कॉपी एडिटर रहि चुकल बानी। इँहा के स्वतंत्र पत्रकार भी बानी आ एह घरी वर्धा महाराष्ट्र मे आगे के पढाई कई रहल बानी। कई गो शोध परक लेख अलग अलग पत्रिकन मे प्रकाशित हो चुकल बा। आखर पेज से शुरु से जुड़ल बानी आ भाषा साहित्य प कई गो लेख आखर प भी लागि चुकल बा।

बड़हन मँच के कलाकार बाड़ी। भोजपुरी संस्कृति के एह सबसे कम्र उम्र के संस्कृति-दूत खाति हमार आशीष बा।'

दिल्ली सरकार द्वारा आयोजित एह 'लोक-उत्सव' में अनुभूति के प्रस्तुति के देख के इ कहीं से ना लागत रहे कि ई उनकर पहिला मंचीय प्रस्तुति हऽ। कला समीक्षक डॉ० धीरेंद्र मिश्र जी कहत बानी, 'अनुभूति के रूप में भोजपुरी के 'तीजनबाई' मिल गइल बाड़ी। ऊ भोजपुरी में अपना तरह के अनूठा प्रयोग कइले बाड़ी। उनकर खनकत आवाज़ आ भावमय नृत्य सीधे-सीधे श्रोता-दर्शक के दिल में उतरे में सक्षम बा।' धीरेंद्र जी अपना फेसबुक पोस्ट में लिखत बानी, 'अद्भुत दृश्य! मनमोहक वीर रस, करूण रस आ कई गो राग के भाव गंगा। भाव, भावाभास, भावप्रबलता, भावसबलता के अद्भुत संयोग। सबसे आकर्षक रहल 'अर्धनाराच छन्द' के प्रयोग जवन आजकल देखे के नाहीं मिलेला। आदिकाल में एकर प्रयोग पृथ्विराजरासो में मिलेला।' हमनी के समाज में विभिन्न लोकगायक आ कलाकार तमाम लोकशैलियन के सृजन कइलें। हजारन कलाकार तऽ आपन मय जिनगी एही में खपा दिहने। इतिहास आ परंपरा के आत्मसात करत एह विशिष्ट व्यास शैली में दक्षता हासिल कइल अनुभूति के लगन आ प्रयोगधर्मिता के प्रतिफल हऽ। सोशल मीडिया के माध्यम से अनुभूति के प्रस्तुति के 'अनुभूति' करे वाला अमुल्य कुमार जी फेसबुक पऽ लिखत बानी- अद्भुत रोआँ गनगना गइल! अइसन बर्णन खाली भोजपुरी में हो सकेला आ कवनो दोसर भाषा अतना मार्मिकता से इ बात गीत में ना कह सकी।'

लोकधुनन के माहिर संगीत साधक पिता उदय नारायण सिंह से मिलल विरासत के अनुभूति विस्तार दिहले बाड़ी। विदेसिया फोरम के महिला संयोजक रश्मि प्रियदर्शनी कहत बानी, उदय नारायण जी द्वारा रचित आ अनुभूति द्वारा मंचित इ गाथा दरअसल एक साथ दू गो समानांतर युद्ध लड़ रहल बिया। एक ओर त इ हमनी के ओह योद्धा (वीर कुँअर सिंह) के लड़ाई के इयाद दिलावत बिया जवना के कबो ऊ स्थान ना मिलल जवन मिले के चाहत रहे... अउर दोसरा ओर भोजपुरी के अस्मिता के युद्ध...' उहाँ के आगे कहत बानी, दरअसल वीर रस के इ गाथा भोजपुरी के 'साहित्यिक क्षमता से हमनी के परिचय करावत बिया।' लोक परिदृश्य में अनुभूति जइसन नया कलाकार के ऊभरल बदलाव के वकालत करत बिया। रश्मि जी आपन बात के आगे बढ़ावत कहत बानी, एगो तेरह साल के बच्ची, 80 साल के पुरनिया से राउर परिचय करावत बिया आ उहो ए तरे कि रउआ लागे लागत बा कि रउआ 1857 के दौर में चल गइनी।' अनुभूति के प्रस्तुति एह बात के भी तस्दीक करत बा, भोजपुरी लोककला के परिदृश्य में भोजपुरियापन अब लौटत बा। प्रो० पी राज सिंह कहत बानी, नया राह, नई दिशा। कुछ नया जमीन तलासत, कुछ पुरान विरासत के सहेजत। चारों ओर से बढ़िया प्रोग्राम के रपट आ रहल बा। हमरा लगे व्हाट्स अप पर दू- तीन गो वीडियो क्लिप भी आईल बा। सभ

कलाकारन के अनघा बधाई !' लोकमंचन पऽ अनुभूति जइसन कलाकार के सशक्त मौजूदगी सुखद बा। अइसना में आजु जरूरत बा तऽ बस एकरे कि साहित्य, समाज, संस्कृति, सिनेमा, गीत, संगीत आ लोकरंग इत्यादि के एगो साझा मंच तैयार कइल जाए जहवाँ लोक संस्कृति के ले के एगो स्वस्थ्य आ सार्थक विमर्श के साथे-साथ ओकर समग्र विकास के आधारभूत ढाँचा तइयार कइल जा सके।

www.bhojpurisahityangan.com

हमार पिंकिया के माई

अतुल कुमार राय

हमार पिंकिया के माई,
तहरा के गोड़ लागतानी।

उम्मीद बा तू एकदम पाकल पपीता लेखा मोटा के पियरा गइल होखबू। हमरा पकिट से पइसा चोरा के दू चार थान गहना बनवाके टोला मोहल्ला में बता देले होखबू की "हमरा नइहर से मिलल बा।" बाकी तू हमरा के जरूर मिस करत होखबू, झगड़ा करे के जब कब मन करत होइ तब तब हमार इयाद आवत होइ।

हमार करेजा , भले तहार मुंह ममता बनर्जी लेखा होखे बाकी हम तहरा के आलिया भट्ट के मौसी से कम ना समझेनी। भले तू किरीम पोतके आ सतरह मिनट मेकअप क के मारिया शारापोवा बनऽ बाकि हमरा तू सेरेना विलियम्स ही लागेलू।

अब खिसिया मत, देखा आज हमरा तहरा बियाह के चार बरिस भ गइल। जब नया नया तू घर में उतरलू त बुझाइल की हातना शरीफ मेहरारु आ रहनदार मेहरारू त लालटेन चटाई लेके दस गांवे खोजला प ना मिली।

तहार समय से उठल आ घर में सबके गोड़ लागल हमार सेवा कइल सबके टाइम टाइम से खाना चाह दिहल। माई बाबूजी के सेवा कइल इ सब बुझाव की हम दिनहि में सपना देखत बानीं। की कवना जनम के हीरा दान कइले रहनी की हइसन रहनदार मेहरारु मिल गइल। एकदम इन्नर के परी लेखा।

बाकी धीरे धीरे समय बीतत गइल, तू रवीना टण्डन से कब राबड़ी देवी हो गइलू हमरा ना बुझाइल आ चन्द्रमुखी से सूर्यमुखी आ फेर ज्वाला मुखी कब हो गइलू इत हमरा पते न चलल।
धीरे धीरे कब हम पत्निव्रता पति हो गइनी इहो ना बुझाइल ई शोध के लमहर चाकर बिषय बा। कब हम गोड़ मिसवावत मिसवावत तहार गोड़ मिसे लगनी कब खाना खात खात खाना बनावे लगनी, बर्तन मांजे लगनी पते ना चलल।

आज पता चलल ह की तू हमार लमहर चाकर जीवन खातिर करवा चउथ भूखल बाड़ू। इ हमरा जानी के खूब रोये के मन करत बा। मन करता की लाउडस्पीकर लगवा के भर गांवे हाला क दी की हमार पिंकिया के माई हमरा से बहुते परेम करेले....मने तू कातना कष्ट करत बाड़ू हमरा खातिर।

हम जानते ना रहनी...भले तू हमरा से झाड़ू लगवावेलू। कबो कबो बर्तन भी मजवा ले लू...अउर त अउर आधी आधी रतिया खानी उठ के कहेलू की "ए जी तनी गोडवा दबा दी ना" बाकी हई हमरा से तहार कष्ट देख नइखे जात..

हम इहे सोचत बानी की रोज तू दिन में तीन हाली खालू दिन भर हमरा पेयार में कइसे भुखासल रहबू ?

अब भूखल बाड़ू त ठीक बा। सांझी खा खूब नीक से सज संवर के स्काइप प अइहा हम तहरा के ऑनलाइन ही देख के आपन सरधा पूरा लेब आ तू चलनी में हमरा के देख के पानी पीके पारन क लिहा।

आ सूनऽ आगे बड़ी परब त्यौहार बा दिवाली आई फेर छठ आई एक से एकही दिन जाके तनी ब्यूटी पार्लर में जवन जवन पोतवावे के होइ तवन पोतवा लिहा। हम पइसा भेज देले बानी आ दिवाली में पिंकिया के पड़ाका मत बजावे दिह।

हमार फुलझड़ी, देख एह बेरी के हम फगुआ में आइब त तहरा के झुलनी बनवाइब।सीसमहल में निरहुआ के फिलिम भी देखाइब। कवनो बात के चिन्ता मत करिह। जियत जिनिगी में हम तहरा सवख सरधा में कमी ना होखे देब। खूब नीमन से झमका के रहिहा। तनी माई बाबूजी आ पिंकिया के खेयाल रखिहा।
बाकी सब ठीक बा। डीह बाबा काली माई हमनी के कुशल मंगल राखस।

ह एने हमरा बुझा गइल बा की मोदी जी काहें मेहरारू छोड़ दिहले।

तहार हसबेंड
खेदन सिंग।

अतुल कुमार राय

बलिया युपी के रहे वाला अतुल कुमार राय जी काशी में संगीत के साधना कर रहल बानी। भोजपुरी आ हिंदी में लिखे के एगो खास शैली ह अतुल जी के। भोजपुरी के पारम्परिक गीतन प इँहा के विवेचनात्मक ढंग से लिखाईल लेख आखर प पहिले भी पोस्ट भईल बा। भोजपुरी लोकगीत आ पारम्परिक गीतन प इँहा के लगातार लिख रहल बानी। फिलहाल बनारस मे निवास बा।

www.bhojpurisahityangan.com

करमदाता

सुमन सिंह

ए माई हऊ कहनिया तनी सुनावा न जवन गोधना कूटे के बेरी कहे लू लोग।"

शरद पुरनिमा के अँजोरिया से टहटह अकास ओरी टकटकी बन्हले गायत्री अम्मा से निहोरा कइलीं।दिन भर क थाकल अम्मा ऊंघात रहलीं बाकिर बेटी के मना न क पवलीं।

"कवन वाला सुनबू बाची,नाग -नागिन वाला ?" अम्मा बहुत दिन बाद नइहर आईल धिया क कुल साध पुरा देहल चाहत रहलीं।

" उहे कहा जवने में राजा क लइकिया कहलस कि ऊ अपने भाग से जिअत हे न कि राजा के।" गायित्री क माई जानत रहलीं कि ऊ काहें खातिर ई कहनी सुनल चाहत हई अउर गयित्रियो के पता रहे कि माई कुल्ह बुझत हे बाकिर दुनु जानी में से केहू ऊ असली कारन पर बात ना करे जवने खातिर ई कहनी कहल-सुनल जात रहे।

माई कहनी सुनावे लगलीं अउर गायत्री आसमान निहारत , तरई ताकत कहनी सुने लगलीं।

" बहुत समय पहिले क बात हा।एगो राजा रहलन उनके राज में रामराज जइसन सुख-साज रहे।बाघ-बकरी एक्के घाट प पानी पियें एतना मेल-मिलाप रहे।राजा से उनकर परजा लोग एतना खुस रहें कि उनके भगवान जस मानें।सुरुज देव क पहिली किरन फुटते ' अन्नदाता के जै जै कार होवे लागे।अब राजो के कपार में ई बात चढ़ गइल कि उनही के दीहल सब केहू खात हा।उनही के आसरे चिरई-चुरुंग,अदिमि-जन जियत खात हा।राजा के चार गो बिटिया रहलीं सं।उन्हन में उनुकर परान बसत रहे।एक दिन उन्हन के बोला के पुछलन कि ए बेटी लोग केकरा भाग से खात-पहिरत बाडू जा।तीन गो बेटी कहलिन स कि'ए बाबूजी राउरे भाग से जियत खात हई जा। राजा खुस हो गइलन।तीसरकी बिटिअवा चुप रहे।राजा जब कई फेरा एक्के बतिया पूछत -पूछत खिसिआ गइलन त लइकिया धीरे से कहलस- ए बाबूजी एह संसार में सब अपना भाग से खाला-पहिरेला।केहू-केहू क करमदाता ना हा।करमदाता उहे ह जे संसार में हमनी के भेजले हा।हम अपना भाग से खात-पहिरत हईं।बेटी के बात सुनके त राजा के आँख में खुनुस के मारे लुत्ती छटके लागल कि उनही क बेटी आजु ठोकर लगवलस।राजा ओहि दिने से छोटकी लइकी से बोलल -चालल बन कई दिहलन बाकिर तीन्नो लइकिन के खूब मान-जान करं।छोटकी लइकी से उनके चितहट हो गइल।राजा तीनों लइकिन क बिआह बड़ा धूमधाम से कइलन अउर छोटकी लइकी के जंगल में ले जा के छोड़ अइलन।" माई कहनी कहत रहलीं अउर गायत्री हुंकारी भरत रहलीं बाकिर येदा पारी गायत्री रोये लगलीं।

"का भइल ए बचिया काहें रोअत हऊ।अरे ई कहनी ह न हो।दू लइकन क महतारी हो गइलू बाकिर लड़कपन ना गइल तोहार।" माई बचिया के खटिया प आय के बइठ गइलीं अउर उनके चुप करावे लगलीं।जेतने माई चुप करावें ओतने बचिया रोएँ।

"ए माई हम त ना न कहले रहलीं कि हम अपने भाग क खाइला तब काहें बाबूजी ओह वन में छोड़ अइलन।"

"ए बाची के जानत रहे कि उँहा तोके एतना भोगे के परी।का करबू जवन लिलारे लिखा के आयल हऊ उहे न मिली।"माइयो रोवे लगलीं।

"हम त अपनहुँ कमाई क सुख ना जनलीं।कुल तनखाह उनही के हाथ प ध दिहिला।एक्को पइसा हमरे पास ना रहेला कि कब्बो मन करे त कुछ नीक -नोहर खा-पहिर लिहीं।" गायत्री बिलख-बिलख के माई से बतावे लगलीं।

"कइसन कठकरेज हउवन हो।काहें न टोना -टोटका करत हऊ।केहू कुछ खिया-पिया त ना दिहले हा।आ कि कवनो से

सुमन सिंह

बनारस , उत्तरप्रदेश के रहे वाली सुमन सिंह जी , बनारस मे ही लेक्चरर के पोस्ट प कार्यरत बानी । आखर से जुड़ल सुमन सिंह जी हिन्दी मे कई गो पत्र पत्रिका खाति लिख चुकल बानी , लिख रहल बानी । वर्तमान मे बनारस मे रह रहल बानी ।

www.bhojpurisahityangan.com

फँसल त ना न हउअना।तुंहु त बउराह नियर रहे लू।तनी सउख-सिंगार कइल करा।लाली लिपीसटिक लगावल करा।अँखिया में काजर काहें ना करे लू,काजर बिना कइसन उदास लगेले।मरद मानुस के अपने बस में करे के पड़ेला नाही त एक ले तिरिया-चरित्तर खेल्लत कुल बेस्सा जस घूमत हई सन !" माई अइसे फुसुर-फुसुर करत रहलीं कि दुःख के ओह घड़ी में भी गायत्री के हँसी आ गइल।

"का माई तुहूँ ना।फंसलो होइहन त का हमरे बरत-उपवास अउर सउख-सिंगार कइले से हमके माने -जाने लगिहन।"

"एक बेरी क के देखा बचिया का पता ओही बनवा क रजकुमरिया जस तोहरो भाग खुल जाये।"

"जाएदा माई हमरे खातिर परेसान मत होखा।आधी उमिर ले जब भोगत-भोगत भाग ना जागल त अब का।"

कहनी बिच्चे में छूट गइल। माई -बेटी दुःख-सुख बतिआवत भिनुसार कई दिहलीं।

"बरीस भर प आइल हऊ त तनी दू -चार दिन अउरी रुक जा बचिया।" सबेरे बचिआ ससुरे जाये खातिर तैयार होत रहलीं त माई निहोरा करे लगलीं।

"जाएदा माई।स्कूलहूं पढ़ावे जाये के हा।कुल छुट्टी खतम हो गइल अब ता।"गायत्री क आँख भर आइल।कुछ नइहर छुटले के दुःख से कुछ एह दुःख से कि घर-स्कूल सब ओरी ले खटले के बाद भी उनके पास अइसन कवनो आधार ना ह कि ऊ केहू से कह सकं कि , एह संसार में केहू -केहू क करमदाता ना हा।सब अपने -अपने भाग से खाला-पहिरेला।करमदाता उहे ह जे संसार में हमनी के भेजले हा।भले गायत्री के एह कहनी प पूरा-पूरा बिसवास ना होला बाकिर मने मन ऊ उपर वाले करमदाता से चिरवरी रहेलीं कि कब्बो त कहनिया वाली राजकुमारी नियर उनहुँ क भाग जागी।

कीमत

अनुराग रंजन

स्विट्जरलैंड अइला प्रकास के दू बरिस हो गईल रहे । ऊ उहवाँ एगो बड़हन कंपनी में काम करत रहस । एक दिन उनकर मोबाइल बाजल त देखले की माई के फोन ह । फोन त उठा लिहले बाकि उनका लागल की भोजपुरी में बतिआइब त कंपनी के लोग का कही ? ऊ फोन उठा के कहले- ***रास्कल !आई हैव टोल्ड यू नॉट टू कॉल मी इन ऑफिस टाइम !*** *आ फोन झटाक से काट दिहले,आ खूबे मुस्कइले। अब जवन माई के हिंदी तक ठीक से ना बोले आवे , उ बेचारी इंग्लिश का समझित । सांझी के फ़ोन क के माई के लगले झारे की तोहनी के ना बुझाला की इहवाँ केतना काम बा,कबो फ़ोन क देलु। ए से पहिले कि माई कुछ कहित फेर फोन काट दिहले । कुछ दिन बाद फेरु ऑफिस में रहले त फोन बाजल,माई त समझइलो प ना समझले आ फोन रिसीवे ना कईले। अब जब फोन आवे त काट देस। एक दिन सांझी के माई के फेर फोन आईल त फोन उठावतहि माई बोलली की बेटा तहार बाबूजी...का भईल बाबूजी के...पूरा बात सुन के ऑफिस में खबर कईले आ टिकट कटा के प्लेन में बैठ गईले। घरे पहुचलें त बाबूजी मर चुकल रहले। गॉव जवार के लोग उनका से लागल कहे की प्रकाश टाइम प आइल रहित त सिन्हा जी बाँच गईल रहते। बेचारा का करित बुढारी में पैसा बिना मर गइल ह। अब प्रकाश के बुझा गईल रहे की ऊ माई के फोन काट के कतना बड़का गलती कर देले रहले । उनका अपना बाबूजी के एकेगो बात दिमाग पर नाचत रहे की "बेटा कबो अपना भाषा के नीच मत समझिह, आ ओकरा से कउनो समझौता मत करिह" ।*

प्रकाश ओहि दिन से प्रण कईले की अब ऊ भोजपुरी खातिर जिहिये आ मरिहे । भोजपुरी अब फेन से उनकर आपन हो गईल बाकि बाबजी के जिंदगी के कीमत चूका के।

नोट: जब रऊओ सभे का साथे कुछ अइसही होई तब जागब लोगि का?? जागीं आ भोजपुरी के सम्मान करी। भोजपुरी के कुछ दिही,लिही मत। आ बोली,हिचकिचाई मत।

दिल, जब बच्चा था जी (भाग –10)

बृज किशोर तिवारी

रवा लेखक के भोजन पुराण के कथा में लेखक के आपन दीदी के तंग करे के फेर में आपन पेट के औकात से अधिका खा लेला के आ ओकर बाद लेखक के भईल परेशानी के पढ़नी। अब आगे के भाग में कुछ आउरी बदमासी के मजा लिहल जाव -

स्कूल में छुट्टी भईल रहे दस- पनरह दिन के ,एगो रिश्तेदारी में चल गईनी छुट्टी मनावे (नाम ना लिखब दादा ,कहाँ गईल रही , ना त फेसबुक पर बा लोग ,गिजन कई दी - हा हा हा हा हा)
खेले कूदे के उमिर ,दिन बड़ा बढ़िया से बितल। उनका घर के लईकन के साथे खेलत कुदत सांझी खा घरे अईनी ,सांझी खा कुलही हाल-चाल होत समय बीतल।
राती खान ,खाए के बेरा आ गईल ! हम आईल रहीं त ,खनवा तनी तर माल ही बनल रहे ! गाव में तनी सहिये साझ के खाना पीना हो जाला ! उनका घरे के सब केहू खा लेले रहे ....
खाली हम, आ उनका घर के एगो लईका ,जवन कि हमार हम-उमिर रहे ,खाए के बाचल रहीं जा !
दुनो जाना खाए के बैठ गईनी।
इहा त धधायिल पेट … लगनी चढ़ावे, बिना डकरले।
पूड़ी पर पूड़ी आवता... हम चढवले जा तानी।
पुडिया खईले जाई आ तरकारिया बचा के रखले रही कि अभी त गहिराहे खाए के बा ...
लेकिन मामिला त बिगड़ गईल रहे।सभे खा लेले रहे आ हमार उमिर देख के ओही हिसाब से आटा सनायिल रहे भा बचल रहे। हमार थारी में तरकारी बचल बा की पूड़ी आवो त खिची, बाकी पूरी त ख़तम हो गईल रहे। उ लईकवा के माई धाई के कबो हमरा लगे आवस आ कबो रसोई में जास। का करस उ .....??
हमरो के बुझा गईल की, अब फेरु से आटा त सनाई ना !
हमहू तरकारी के आनंद लेवत ,सुखले तरकारी के निपटावे लगनी ।
ऊंहाके कहनी कि बाबू पूड़ी आवऽता।
हम कहनी- अरे ना , हम त अईसहि खायेनी। पहिले पूड़ी भा रोटी में कम तरकारी लगा के खाएनी , फेरु तरकारी कवर भर खायेनी।
उंहाके कहनी- तब त, ठीक बा बाबू। कौनो बात ना...

राती खा ,सूत के लगनी सोचे- इहा दू चार दिन रहे के बा, एही तरे चली तब त हम हम खईले बिना मर जाईब। बढ़िया हितई होखी। खैर कहनी चलऽ, केहू तरे काम चली। चार दिन बीत गईल रहे , जाए के मन परल अपना घरे लेकिन लोग एक दिन आउरी रोक लिहल। रुक गईनी ...
ओही दिन उनका घरे कोई आईल !
हमरा खातिर पूछल - इ के हवे जी ??
लोग बतावल ,हितई के हवे । आईल बाड़े घूरे फिरे !!
पता ना उ कवन दिमाग के रहन ए दादा।
हमार मुहे सोझा ,कह दिहलन - इ रउवा किहाँ आईल बाडन ?
हम तऽ ना जानत रही !
इनका के तऽ हम रोज चट्टी वाला होटल में खाना खात देखेनी।
दुपरहिया में भी ,आ राती खा भी।
अब का कही ,बजर गिर गईल हमरा पर। (हम का करत रहनी की इनका इंहा जेतना खाए के मिले खा ली , आ टहरे के बहाने चट्टी पर जाई आ भर पेट खा के आ जाई)

आजो ले अफ़सोस बा।चारे दिन में ओहिजा ले काहे ना लऊट अईनी ?न पाँचवा दिन उहवा रहिती ना इ दिन देखे के मिलित ।

बृज किशोर तिवारी

पलामू झारखंड के रहे वाला बृजकिशोर तिवारी जी एह समय शक्तिनगर सोनभद्र मे कार्यरत बानी । भोजपुरी मे हास्य व्यंग्य के रचना इँहा के एगो अलग आ उंच पहचान बनावेला। आखर पेज से जुड़ल बृजकिशोर जी भोजपुरी मे लगातार रचना कई रहल बानी भोजपुरी मे लिख रहल बानी ।

www.bhojpurisahityangan.com

बलिदान गीत

नथुनी प्रसाद पाण्डेय 'नागेन्द्र'

माई बेटा तोर भईल बलिदान रे
मन मे गुनान मत करीहे।
एइसे बढ़ल तोरा गोदिया के शान रे
मन मे गुनान मत करीहे।

माई हम रण मे रण कौशल आपन खूब देखवनीं,
दुश्मन के करनी के मजा ओके खूब चिखवनी,
दगनीं ओकरा पर तोप आ कमान रे
मन मे गुनान मत करीहे।

हम अकेल सौ सौ दुश्मन के पानी खूब पियवनीं,
तोरा दुधवा के दाव समूचा हम एइजा अपनवनीं,
मरनीं दुश्मन के टैंक आ विमान रे
मन मे गुनान मत करीहे।

घबड़इहे मत पीठ देखा के नईखीं रण से भागल,
आपन छाती टोके देखिहे, गोली सीना मे लागल,
बनल होई तोरा छाती पर निशान रे
मन मे गुनान मत करीहे।

माई जो तें लोर बहईबे, थोर होई मोर मनवा,
कायर के तें माई रहले हँसी के कही जमनवा,
लईहे होठवा पर मीठ मुसकान रे
मन मे गुनान मत करीहे ।

मुन्ना के माई से कहिहे, मत तनिकों छपटईहें,
मुन्ना मे देखीहें हमरा के, आपन हिया जुड़ईहें,
उनकर चमकी सोहाग आसमान रे
मन मे गुनान मत करीहें।

चान-सूरज नक्षत्र ग्रह मे उनकर सेनूर चमकी,
बनि के चान सूरज के आभा, आँगन मे जा धमकी,
करीहे सेनूरा पर अपना गुमान रे
मन मे गुनान मत करीहे।

राखी का दिने बहिना से कहिहे कि तनिको मत रोई,
बलिदानी भाई के आत्मा शान्त कबो ना होई,
राखी फेंकी ओही दिने आसमान रे
मन मे गुनान मत करीहे।

माई जब शक्ति हमार तनिको एइजा छितराइल,
तोर ममता मुन्ना का माई के प्यार उपराइल,
राखी बहिना के कवच समान रे
मन मे गुनान मत करीहे।

अच्छा माई साँस बन्द अब धीरे-धीरे होता,
बहत बाटे छाती मे से गरम खून के सोता,
खून लिखत बाटे धरती पर गान रे
मन मे गुनान मत करीहे।

भारत के माईन, बहिनिन नारीन के लाज बचवनी,
लड़त लड़त रण का धरती पर वीर गति के पवनी,
रखनी अपना तिरंगवा के सान रे
मन में गुमान मत करिहे।

नथुनी प्रसाद पाण्डेय

नथुनी प्रसाद पाण्डेय जी के जन्म –1 जनवरी,1957 के ह। गरीब आ पिछ्ड़ल गाँव-परिवार में पालन पोषण आ पढ़ाई लिखाई जैसे तैसे कइला के बादों इहाँ के लगातार साहित्य सृजन कर रहल बानी । अप्रकाशित रचनाकार। हिंदी ,भोजपुरी,उर्दू,बंगला आ अंग्रेजी में लेखन। शिक्षक,हाई स्कूल,उजाँय।

www.bhojpurisahityangan.com

" नेवता "

भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मेलन - 6

(3 दिसम्बर , 2015)

सूचित करे में बड़ा हर्ष होता कि हर साल के तरह एह साल भी भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मेलन के आयोजन सिवान जिला के रघुनाथपुर प्रखण्ड के पंजवार गाँव में हो रहल बा। देश के पहिला राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के जयंति पऽ हर साल 3 दिसम्बर के होखे वाला ई आयोजन भोजपुरी भाषा आ संस्कृति के चासनी में डूबल रहेला।

कार्यक्रम के शुरुवात सबेरे 8 बजे प्रभात फेरी से शुरु होई , दिन के सत्र के शुरुवात राजेंद्र बाबू के नमन करत स्वागत गीत से शुरु होई फेरु साहित्यिक सत्र मे वैचारिक गोष्ठी कविता पाठ भोजपुरी भाषा आ साहित्य प चर्चा होई।

सांझि के समय यानि कि सांस्कृतिक सत्र मे लोकनृत्य , भोजपुरी पारम्परिक गीत , लोकगीत, सांस्कारिक गीतन प भाव नृत्य , लोक गायन के प्रस्तुति होई।

भाषायी अस्मिता खातिर लगातार प्रयासरत "आखर" टीम एह आयोजन में राउर स्वागत के इच्छुक बिआ , राउर स्वागत करत बिआ।

- आखर टीम

www.bhojpurisahityangan.com

राउर बात

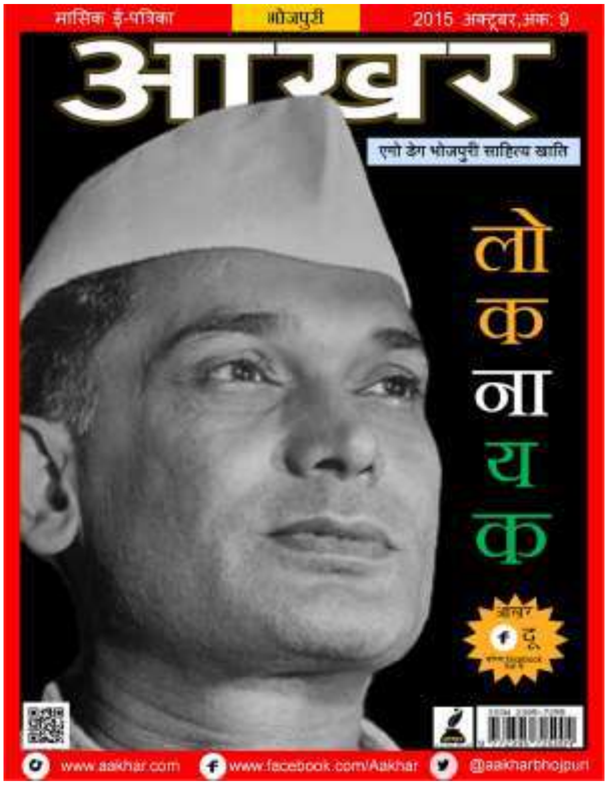

आखर पत्रिका के कोशिश बहुत नीमन लागत बा , कहानी कविता महापुरुष लोगन के बारे मे जानकारी बहुत अच्छा लागल।

● रविशंकर सिंह

भोजपुरी खाति बरिआर पहल।

● जौहर शाफियाबादी

आखर के अनघा बधाई बा, जेपी के बारे में माईभाषा में पढ़े के अवसर मिलल ,जय भोजपुरी।

● आदित्य राजन

हरमेसा के तरह बेजोड़ अंक। भरपूर जानकारी से भरल अउर संग्रह करे लायक।बहुत बहुत बधाई।

● सरोज सिंह

आखर के पूरा टीम के दिल खोल के बधाई। कबो सोंचले ना रहनी कि मज़ाक मज़ाक में फेसबुक प अकाउंट खोलल अइसे सार्थक होई। जुड़त जुड़त कुछ भाई के साथ मिल गईल तब बुझाइल की फेसबुक खाली फ़ोटो अपलोड करे खातिर ना हा। अब बात "आखर" के। हम खाली एगो पाठक बानी लेकिन जब जब आखर पढ़े के शुरू करीला त ओकरा पीछे मेहनत करे वाला के आभार जरूर जताइला मने मने। सब के आपन जिनगी, आपन परिवार, आपन उलझन बा लेकिन ओह से लड़ते हुये भी आखर खातिर अलग से समय निकाल के जे कुछ भी लोग करत बा ओकर तारीफ कतनो होखे त कम बा। सबके करेजा फाड़ के बधाई!!

● संजय कुमार पाण्डेय

बहुत ही अच्छा लागल बा , उत्सुकतावस प्रथम वार पढे के शुरु कईले बानी , बार बार पढेब , आखर टीम के बधाई होखे।

● एस.पी सिंह

जय जेपी... जय भोजपुरी
अनघा बधाई बा आखर टीम के आ बिजोड काम के।

● अमरजीत यादव

भोजपुरी साहित्य के संभारे खाती आ नया ऊंचाई देवे खाती राउर सहयोग के जरूरत बा। भोजपुरी में लिखीं आ "आखर" के साथे भोजपुरी साहित्य के बढ़ावे में सहयोग करीं।

~आखर परिवार

www.bhojpurisahityangan.com

लेखक कोना

निहोरा

जय भोजपुरी,

माई, मातृभाषा आ मातृभूमि के कवनो विकल्प नइखे। इनका आँचर के नीचे जवन सुख के अनुभुति होखेला ऊहे स्वर्ग के सुख हऽ। रोजी-रोटी के मजबूरी आउर भविष्य के सुरक्षा खाति तनि बेसी कमाये के आशा में ना चाहते ढेर लोग अपना माई आ माटी से दूर बा। एह कमी के ना भरल जा सकेला बाकि मातृभाषा से दूरी के पाटे के काम आखर कर रहल बा।

आखर के नेंव भी एही उद्देश्य के पूरा करे खाति राखल गइल बा। आखर रउआ सभे से बा आ रउआ सभे खाति बा। इ राउर आपन मंच हऽ जहाँ रउआ आपन माई, माटी आ मातृभाषा भोजपुरी से जुड़ल अनुभव, कथा कहानी, व्यंग्य, संस्मरण, रिपोतार्ज, गीत-गज़ल, कविता, चित्रकारी भेज सकत बानी।

दिसम्बर महीना भोजपुरी आ आखर परिवार खाति बहुत खास बा। जहा संवसे देस भारत के पहिला राष्ट्रपति आ भोजपुरिया, राजेंद्र बाबू के जनमदिन 3 दिसम्बर के मनाई ओजुगे 18 दिसम्बर के महान भोजपुरिया नाटककार भिखारी ठाकुर के पुण्यतिथी भी ह। अंग्रेजी साल के अंतिम महीना भी दिसम्बर ह। दिसम्बर महीना मे ही आखर परिवार पिछला पांच साल से भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मेलन मना रहल बा जवना के छठा आयोजन भी 3 दिसम्बर के बिहार राज्य के सिवान जिला के पंजवार गांव मे होखे जा रहल बा।

एह से आखर के अगिला अँक (दिसम्बर 2015) भोजपुरी साहित्य मे आधुनिक प्रयोग , राजेंद्र बाबू , भिखारी ठाकुर प केंद्रित रही भोजपुरी भाषा आ साहित्य खातिर अभी तक भईल प्रयास प केंद्रित रही।

रउवा सभ से निहोरा बा कि आपन अगिला लेख एहि बिंदुअन प केंद्रित कई के लिखी जवना से बेसी से बेसी लोग भोजपुरी भाषा, क्षेत्र, इतिहास ,संस्कृति , संस्कार , साहित्य आ वर्तमान से आपन परिचय करा सको। अगर एह मुख्य विषयन से हटि के भी कुछ लेख कविता गीत गजल बा त भेजी।

एह के अलावा अगर रउवा सभ के लागत बा कुछ अउरी विशेष जवन भोजपुरी भाषा खातिर नीमन रही आ आखर पत्रिका मे रहे के चांही त ओइसन लेख , चित्रकारी भा कविता कहानी के भी भेज सकेनी।

रचना भेजे के कुछ जरुरी नियम -

- आपन मौलिक रचना युनिकोड फॉन्ट/कृतिदेव फॉन्ट में टाइप करके भेजीं।
- रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार अपने से प्रूफ रीडिंग जरुर कर लीं। कौमा, हलंत, पूर्णविराम पे विशेष ध्यान दीं। रचना में डॉट के जगहा सिर्फ पूर्णविराम राखीं।
- ध्यान रहे राउर रचना में कवनो असंसदीय आ अश्लील भाषा भा उदाहरण ना होखे।
- राउर रचना के स्वीकृति के सूचना मेल भा मैसेज से दियाई।
- रचना के साथे आपन पासपोर्ट साइज के फोटो आ आपन परिचय (नाम, पता, कार्य आ आपन प्रकाशित किताबन के बारे में यदि होखे त) जरुर भेजीं।
- रचना भेजे के पता बा-

aakharbhojpuri@gmail.com

- पत्रिका खातिर राउर हाथ के खींचल फोटोग्राफ, राउर बनावल रेखाचित्र, कार्टून जे विभिन्न विषय के अनुरूप होखे, उहो भेजीं।
- छोट-छोट लईकन के कलाकारी के भी प्रोत्साहित करे खातिर स्थान दियाई। ओहनी के लिखल रचना भा चित्र भेजीं।

आखर

भोजपुरी ई -पत्रिका

ISSN 2395-7255

www.aakhar.com www.facebook/Aakhar @aakharbhojpuri